केन्द्रीय विद्यालय संगठन

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

निपुण भारत मिशन

हर बच्चे को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRAINING, CHANDIGARH

अध्ययन सामग्री / Study Material

शैक्षिक सत्र / Session - 2023-24

कक्षा / Class - दसवीं

विषय / Subject - हिन्दी (अ)

विषय कोड / Subject Code - 002

तैयारकर्ता : संतोष कुमार कुशवाहा, सह-प्रशिक्षक (हिन्दी)

Prepared By: SANTOSH KUMAR KUSHWAHA, TA (HINDI)

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRAINING, CHANDIGARH

सेक्टर-33 सी, चंडीगढ़ / **SECTOR-33C, CHANDIGARH**

वेबसाइट / Website : zietchandigarh.kvs.gov.in

ई-मेल / e-mail :kvszietchd@gmail.com दूरभाष / Phone : 0172-2921841, 2921994

विषय-सूची / INDEX

क्र.सं.	पाठ्य विवरण	पृष्ठ सं.
1.	अपठित बोध : गद्य व पद्य (बहुविकल्पी प्रश्न)	1
2.	व्याकरण भाग : निर्धारित प्रकरण (बहुविकल्पी प्रश्न)	8
3.	पाठ्य पुस्तक (क्षितिज-2) : गद्य भाग (बहुविकल्पी प्रश्न)	16
4.	पाठ्य पुस्तक (क्षितिज-2) : पद्य भाग (बहुविकल्पी प्रश्न)	27
5.	पाठ्य पुस्तक (क्षितिज-2) : गद्य भाग (वर्णनात्मक प्रश्न)	38
6.	पाठ्य पुस्तक (क्षितिज-2) : पद्य भाग (वर्णनात्मक प्रश्न)	44
7.	पाठ्य पुस्तक (कृतिका-2) : पूरक भाग (वर्णनात्मक प्रश्न)	49
8.	रचनात्मक लेखन : अनुच्छेद लेखन व पत्र लेखन	53
9.	विज्ञापन लेखन तथा संदेश लेखन : सृजनात्मक लेखन	57
10.	स्ववृत्त लेखन तथा ई-मेल : व्यावसायिक लेखन	60
11.	सीबीएसई पाठ्यक्रम विनिर्देशन	63

खंड- क (वैकल्पिक प्रश्न)

अपठित बोध

अपठित बोध का अर्थ - अपठित शब्द का अर्थ है जो पढ़ा हुआ न हो। अर्थात ऐसा अवतरण जो पाठ्य पुस्तक से नहीं लिया गया है। यह शब्द 'अ' उपसर्ग, 'पठ्' धातु (क्रिया) तथा 'इत' प्रत्यय से मिलकर बना है। यहाँ 'अ' का अर्थ है 'नहीं' और 'पठित' का अर्थ है 'पढ़ा हुआ' या 'पढ़ा गया' अर्थात पहले नहीं पढ़ा हुआ। 'बोध' शब्द का अर्थ है 'समझ'। आशय यह है कि विद्यार्थियों को वह गद्यांश अथवा पद्यांश पढ़कर समझना है जो उनकी पाठ्य पुस्तक में नहीं है। अपठित गद्यांश अथवा पद्यांश को समझने के लिए विद्यार्थियों को निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए।

- ✓ अपठित अवतरण का ध्यानपूर्वक मौन वाचन करते हुए उसे समझने का प्रयास करें।
- ✓ महत्त्वपूर्ण पंक्तियों, वाक्यांशों एवं शब्दों को पेंसिल से रेखांकित करें।
- ✓ अवतरण से संबंधित दिए गए प्रश्नों को पढ़कर उत्तर के लिए संभावित पंक्तियों को चिह्नांकित करें।
- ✓ जिन प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट न हों, उनके उत्तर जानने के लिए गदयांश को पुन: ध्यान से पढ़ें।
- ✓ उत्तर हमेशा प्रश्न के अनुसार समुचित शब्दावली में देने का प्रयास करें।
- ✓ उत्तर संक्षिप्त, सरल और प्रभावशाली भाषा में होना चाहिए।
- ✓ सदैव ध्यान रखें कि शीर्षक मूल कथ्य से संबंधित होना चाहिए।
- ✓ उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास एवं मुहावरों पर ध्यान देना चाहिए।
- ✓ गद्यांश अथवा पद्यांश की पंक्ति का वैसा ही प्रयोग करने से बचना चाहिए।

अपठित गद्यांश (1)

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

सुखी, सफल और उत्तम जीवन जीने के लिए किए गए आचरण और प्रयत्नों का नाम ही धर्म है। देश, काल और सामाजिक मूल्यों की दृष्टि से संसार में भारी विविधता है, अतएव अपने-अपने ढंग से जीवन को पूर्णता की ओर ले जाने वाले विविध धर्मों के बीच भी ऊपर से विविधता दिखाई देती है। आदमी का स्वभाव है कि वह अपने ही विचारों और जीने के तौर-तरीकों को तथा अपनी भाषा और खानपान को सर्वश्रेष्ठ मानता है तथा चाहता है कि लोग उसी का अनुसरण और अनुकरण करें, अतएव दूसरों से अपने धर्म को श्रेष्ठतर समझते हुए वह चाहता है कि सभी लोग उसे अपनाएँ। इसके लिए वह ज़ोर-ज़बरदस्ती को भी बुरा नहीं समझता।

धर्म के नाम पर होने वाले जातिगत विद्वेष, मारकाट और हिंसा के पीछे मनुष्य की यही स्वार्थ-भावना काम करती है। सोच कर देखिए कि आदमी का यह दृष्टिकोण कितना सीमित, स्वार्थपूर्ण और गलत है। सभी धर्म अपनी-अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आवश्यकताओं के आधार पर पैदा होते, पनपते और बढ़ते हैं, अतएव उनका बाह्य स्वरूप भिन्न-भिन्न होना आवश्यक और स्वाभाविक है, पर सबके भीतर मनुष्य की कल्याण-कामना है, मानव-प्रेम है।

i- सुखी, सफल और उत्तम जीवन जीने के लिए किए गए आचरण और प्रयत्नों को किस नाम से जानते हैं ?

(क) उत्तरदायित्व

(ख) कर्म

(ग) धर्म

(घ) आचरण

ii- संसार में अत्यधिक विविधता क्यों है ?

(क) आवश्यक वस्तुओं के कारण

(ख) देश, काल और सामाजिक मूल्यों के कारण

(ग) राजनेताओं के कारण

(घ) धार्मिक मान्यताओं के कारण

iii- किस बात के लिए मनुष्य ज़ोर-ज़बरदस्ती को भी बुरा नहीं समझता है ?

(क) अपने धर्म को श्रेष्ठतर मानते हुए उसे अपनाने के लिए कहना

(ख) अपने विचारों के अनुसार जीवन जीना

(ग) दूसरों को सदैव हीन समझना

(घ) विविधता को स्वीकार करके जीवन बिताना

iv- आदमी का कौन-सा दृष्टिकोण सीमित, स्वार्थपूर्ण और गलत है ?

(क) सभी धर्मों में एकता का भाव होना

(ख) सबके लिए कल्याण-कामना करना

(ग) अपनी भाषा और खानपान को सर्वश्रेष्ठ मानना

(घ) धर्म के नाम पर होने वाले जातिगत विद्वेष, मारकाट और हिंसा

v- 'ऐतिहासिक' शब्द में मूल शब्द और प्रत्यय का सही रूप कौन-सा है ?

(क) ऐति + हासिक

(ख) इतिहास + इक

(ग) ऐतिहा + सिक

(घ) ऐ + तिहासिक

उत्तर- i. (ग) धर्म ii. (ख) देश, काल और सामाजिक मूल्यों के कारण iii. (क) अपने धर्म को श्रेष्ठतर मानते हुए उसे अपनाने के लिए कहना iv. (घ) धर्म के नाम पर होने वाले जातिगत विद्वेष, मारकाट और हिंसा v. (ख) इतिहास + इक

अपठित गद्यांश (2)

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

धरती का स्वर्ग श्रीनगर का 'अस्तित्व' डल झील मर रही है। यह झील इंसानों के साथ-साथ जलचरों, परिंदों का घरौंदा हुआ करती थी। झील से हज़ारों हाथों को काम और लाखों को रोटी मिलती थी। अपने जीवन की थकान, मायूसी और एकाकीपन को दूर करने, देश-विदेश के लोग इसे देखने आते थे। यह झील केवल पानी का एक स्रोत नहीं, बल्कि स्थानीय लोगों की जीवन-रेखा है, मगर विडंबना है कि स्थानीय लोग इसको लेकर बहुत उदासीन हैं।

समुद्र-तल से पंद्रह सौ मीटर की ऊँचाई पर स्थित डल एक प्राकृतिक झील है और कोई पचास हज़ार साल पुरानी है। श्रीनगर शहर के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी दिशा में स्थित यह जल-निधि पहाडों के बीच विकसित हुई थी। सरकारी रिकार्ड गवाह है कि 1200 ई. में इस झील का फैलाव पचहत्तर वर्ग किलोमीटर में था। 1847 ई. में इसका क्षेत्रफल अड़तालीस वर्ग किमी आँका गया। 1983 ई. में हुए माप-जोख में यह महज साढ़े दस वर्ग किमी रह गई। अब इसमें जल का फैलाव आठ वर्ग किमी रह गया है। इन दिनों सारी दुनिया में ग्लोबल

वार्मिंग का शोर है और लोग बेखबर हैं कि इसकी मार इस झील पर भी पड़ने वाली है। इसका सिकुड़ना इसी तरह जारी रहा तो इसका अस्तित्व केवल तीन सौ पचास साल रह सकता है।

i. धरती का स्वर्ग श्रीनगर की डल झील मर रही है। इसका क्या मतलब है ?

(क) डल झील का अस्तित्व समाप्त हो रहा है

(ख) डल झील समृद्ध हो रही है

(ग) झील में लोगों का आवागामन बढ़ रहा है

(घ) श्रीनगर का अस्तित्व सिमट रहा है

ii. देश-विदेश के लोग इसे देखने क्यों आते थे?

(क) पेड़-पौधे और पक्षियों को देखने के लिए

(ख) डल झील को सिमटते हुए देखने के लिए

(ग) रोजगार एवं व्यापार की तलाश में

(घ) जीवन की थकान, मायूसी और एकाकीपन को दूर करने के लिए

iii. डल एक प्राकृतिक झील है जो समुद्र तल से .... की ऊंचाई पर स्थित है।

(क) एक हजार मीटर

(ख) आठ सौ मीटर

(ग) पंद्रह सौ मीटर

(घ) चार सौ

iv. सरकारी रिकार्ड के अनुसार 1200 ई. में डल झील का फैलाव कितने वर्ग किलोमीटर में था ?

(क) अड़तालीस वर्ग किलोमीटर

(ख) पचहत्तर वर्ग किलोमीटर

(ग) साढ़े दस वर्ग किलोमीटर

(घ) आठ वर्ग किलोमीटर

v. लेखक के अनुसार किस प्राकृतिक समस्या की मार डल झील पर भी पड़ने वाली है ?

(क) पहाड़ों पर बर्फबारी

(ख) श्रीनगर में बाढ़ का खतरा

(ग) पक्षियों का पलायन करना

(घ) ग्लोबल वार्मिंग

उत्तर- i. (क) डल झील का अस्तित्व समाप्त हो रहा है ii. (घ) जीवन की थकान, मायूसी और एकाकीपन को दूर करने के लिए iii. (ग) पंद्रह सौ मीटर iv. (ख) पचहत्तर वर्ग किलोमीटर v. (घ) ग्लोबल वार्मिंग

अपठित गद्यांश (3)

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

जो अनगढ़ है, जिसमें कोई आकृति नहीं, ऐसे पत्थरों से जीवन को आकृति प्रदान करना, उसमें कलात्मक संवेदना जगाना और प्राण-प्रतिष्ठा करना ही संस्कृति है। वस्तुत: संस्कृति उन गुणों का समुदाय है, जिन्हें अनेक प्रकार की शिक्षा द्वारा अपने प्रयत्न से मनुष्य प्राप्त करता है। संस्कृति का संबंध मुख्यत: मनुष्य की बुद्धि एवं स्वभाव आदि मनोवृत्तियों से है।

संक्षेप में, सांस्कृतिक विशेषताएँ मनुष्य की मनोवृत्तियों से संबंधित हैं और इन विशेषताओं का अनिवार्य संबंध जीवन के मूल्यों से होता है। ये विशेषताएँ या तो स्वयं में मूल्यवान होती हैं अथवा मूल्यों के उत्पादन का साधन। प्राय:

व्यक्तित्व में विशेषताएँ साध्य एवं साधन दोनों ही रूपों में अर्थपूर्ण समझी जाती हैं। वस्तुत: संस्कृति सामूहिक उल्लास की कलात्मक अभिव्यक्ति है। संस्कृति व्यक्ति की नहीं, समष्टि की अभिव्यक्ति है।

डॉ० संपूर्णानंद ने कहा है- "संस्कृति उस दृष्टिकोण को कहते हैं, जिसमें कोई समुदाय विशेष जीवन की समस्याओं पर दृष्टि निक्षेप करता है।" संक्षेप में वह समुदाय की चेतना बनकर प्रकाशमान होती है। यही चेतना प्राणों की प्रेरणा है और यही भावना प्रेम में प्रदीप्त हो उठती है। यह प्रेम संस्कृति का तेजस तत्व है, जो चारों ओर परिलक्षित होता है। प्रेम वह तत्व है, जो संस्कृति के केंद्र में स्थित है। इसी प्रेम से श्रद्धा उत्पन्न होती है, समर्पण जन्म लेता है और जीवन भी सार्थक लगता है।

i. लेखक के अनुसार संस्कृति क्या है?

(क) जीवन को आकृति प्रदान करना,
(ख) उसमें कलात्मक संवेदना जगाना
(ग) प्राण-प्रतिष्ठा करना
(घ) उपर्युक्त सभी

ii. सांस्कृतिक विशेषताएँ किससे संबंधित हैं?

(क) मनुष्य की मनोवृत्तियों से
(ख) ज्ञान से
(ग) ध्यान से
(घ) समुदाय से

iii. व्यक्तित्व में विशेषताएँ किन रूपों में अर्थपूर्ण समझी जाती हैं?

(क) साध्य
(ख) साध्य एवं साधन दोनों ही
(ग) साधन
(घ) इनमें से कोई नहीं

iv. लेखक ने किसे संस्कृति के केंद्र में स्थित माना है?

(क) संस्कृति को
(ख) समुदाय को
(ग) प्रेम
(घ) श्रद्धा

v. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक है -

(क) प्रेम
(ख) संस्कृति
(ग) ज्ञान
(घ) श्रद्धा

उत्तर- i. (घ) उपर्युक्त सभी ii. (क) मनुष्य की मनोवृत्तियों से iii. (ख) साध्य एवं साधन दोनों ही iv. (ग) प्रेम v. (ख) संस्कृति

अपठित काव्यांश (1)

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले!
पुस्तकों में है नहीं, छापी गई इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता है न औरों की जुबानी,

अनगिनत राही गए इस राह से, उनका पता क्या,
पर गए कुछ लोग इस पर, छोड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पंथी, पंथ का अनुमान कर ले!
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले!

है अनिश्चित किस जगह पर, सरित-गिरि-गहवर मिलेंगे,
है अनिश्चित किस जगह पर, बाग-बन सुंदर मिलेंगे,
किस जगह यात्रा खत्म हो जाएगी, यह भी अनिश्चित,
है अनिश्चित, कब सुमन, कब कंटकों के सर मिलेंगे,
कौन सहसा छूट जाएँगे, मिलेंगे कौन सहसा,
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा तू न, ऐसी आन कर ले!
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले!

i. कवि के अनुसार कौन-सी कहानी पुस्तकों में नहीं छापी गई है?

(क) पैरों की मूक निशानियों की
(ख) अनगिनत राहगीरों की
(ग) जीवन रूपी पथ के पहचान की
(घ) इनमें से कोई नहीं

ii. कौन-सी निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है? -

(क) पैरों की निशानी
(ख) पथिक के जाने की
(ग) सच्चे मार्ग पर चलने की
(घ) पुस्तकों में लिखी बातों की

iii. जीवन में क्या-क्या अनिश्चित है-

(क) मुश्किलों (सरित-गिरि-गहवर) का मिलना
(ख) अनुकूल परिस्थितियों (बाग-बन सुंदर) का होना
(ग) जीवन का समाप्त हो जाना
(घ) उपर्युक्त सभी

iv. कवि ने किस पंक्ति में निरंतर चलते रहने के लिए प्रेरित किया है?

(क) पर गए कुछ लोग इस पर, छोड़ पैरों की निशानी,
(ख) आ पड़े कुछ भी, रुकेगा तू न, ऐसी आन कर ले!
(ग) किस जगह यात्रा खत्म हो जाएगी, यह भी अनिश्चित,
(घ) पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले!

v. निम्नलिखित में से प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है -

(क) छापी गई कहानी
(ख) अनगिनत राही
(ग) पैरों की निशानी
(घ) बाट की पहचान

उत्तर- i- (ग) जीवन रूपी पथ के पहचान की ii- (क) पैरों की निशानी iii- (घ) उपर्युक्त सभी iv- (ख) आ पड़े कुछ भी, रुकेगा तू न, ऐसी आन कर ले! v- (घ) बाट की पहचान

अपठित काव्यांश (2)

मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ-
जब तुम मुझे पैरों से रौंदते हो ।
तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो
तब मैं-
धन-धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती हूँ।
पर जब भी तुम
अपने पुरुषार्थ-पराजित स्वत्व से मुझे पुकारते हो
तब मैं
अपने ग्राम्य देवत्व के साथ चिन्मयी शक्ति हो जाती हूँ
प्रतिमा बन तुम्हारी आराध्या हो जाती हूँ।
विश्वास करो
यह सबसे बड़ा देवत्व है कि
तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो
और में स्वरूप पाती मृत्तिका।

i. प्रस्तुत काव्यांश में 'मृत्तिका' का क्या अर्थ है ?

(क) मिट्टी
(ख) मूर्ति
(ग) आकृति
(घ) प्रकृति

ii. जब मनुष्य मिट्टी को हल के फाल से विदीर्ण करके पैरों से रौंदता है तब मिट्टी का क्या स्वरुप होता है ?

(क) दबी मिट्टी ऊपर आ जाती है
(ख) मिट्टी समतल हो जाती है
(ग) धन-धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती है
(घ) हल के फाल में लिपट जाती है

iii. मिट्टी कब चिन्मयी शक्ति हो जाती है ?

(क) मनुष्य जब मिट्टी को हल के फाल से विदीर्ण करता है
(ख) जब मनुष्य अपने पुरुषार्थ से पराजित होकर मिट्टी को पुकारता है
(ग) कौन तपस्वी
(घ) इनमें से कोई नहीं

iv. कौन प्रतिमा बनकर मनुष्य की आराध्य बन जाती है ?

(क) चिन्मयी शक्ति
(ख) प्रकृति
(ग) अविछिन्न शक्ति
(घ) मिट्टी

v. कवि के अनुसार सबसे बड़ा देवत्व क्या है ?

(क) मनुष्य का भाग्य

(ख) मनुष्य का पुरुषार्थ
(ग) स्वरुप पाती मिट्टी
(घ) मिट्टी की मूर्ति

उत्तर- i- (क) मिट्टी ii- (ग) धन-धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती है iii- (ख) जब मनुष्य अपने पुरुषार्थ से पराजित होकर मिट्टी को पुकारता है iv- (घ) मिट्टी v- (ख) मनुष्य का पुरुषार्थ

अपठित काव्यांश (3)

अचल खड़े रहते जो ऊँचा शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निझर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।
आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरुणाई,
नए जन्म की श्वास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई।
आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना,
नवयुग के पृष्ठों पर तुमको है नूतन इतिहास लिखाना।
उठो राष्ट्र के नवयौवन तुम दिशा-दिशा का सुन आमंत्रण,
जगो, देश के प्राण जगा दो नए प्रात का नया जागरण।
आज विश्व को यह दिखला दो हममें भी जागी तरुणाई,
नई किरण की नई चेतना में हमने भी ली अंगड़ाई।

i- कवि ने नवयुवकों की क्या पहचान बताई है ?
(क) तूफानों में शीश ऊँचा किए अचल खड़े रहते हैं
(ख) झरने की तरह मार्ग की बाधाओं को तोड़ देते हैं
(ग) कठिन रास्तों पर चलकर प्रगति के नाम को सार्थक करते हैं
(घ) उपर्युक्त सभी

ii- कवि के अनुसार देश का भविष्य किसकी आशाओं पर टिका है ?
(क) बेरोजगार युवकों पर
(ख) नवयुवकों पर
(ग) आम मनुष्यों की इच्छाओं पर
(घ) अनुभवी लोगों पर

iii- कवि नवयुवकों से नूतन इतिहास किस पर लिखाना चाहता है?
(क) लोगों के आमंत्रण पर
(ख) विगत युग के पतझड़ पर
(ग) नवयुग के पृष्ठों पर
(घ) दुनिया की उम्मीदों पर

iv- कवि राष्ट्र के युवकों को क्यों जगा रहा है?
(क) क्योंकि उनके लिए हर दिशा से नवीनता का आमंत्रण है
(ख) वे बहुत देर से सो रहे हैं
(ग) उनमें कुछ करने की लालसा नहीं है
(घ) इनमें से कोई नहीं

v- प्रस्तुत पद्यांश का उचित शीर्षक है-

(क) स्वतंत्रता

(ख) नवयुवक

(ग) परिश्रम

(घ) राष्ट्रीयता

उत्तर- i- (घ) उपर्युक्त सभी ii- (क) नवयुवकों पर iii- (ग) नवयुग के पृष्ठों पर iv- (क) क्योंकि उनके लिए हर दिशा से नवीनता का आमंत्रण है v- (ख) नवयुवक

वाक्य-विचार

वाक्य- शब्दों का वह व्यवस्थित समूह जिसका कुछ अर्थ निकलता हो, उसे वाक्य कहते हैं।

जैसे- (1) मोहन पुस्तक पढ़ता है। (2) तुम अभी सो जाओ। (3) शिक्षक ने समझाया कि भाषा अर्जित संपत्ति है।

वाक्य के भेद- वाक्य-भेद के दो आधार हैं - (1) अर्थ का आधार (2) रचना का आधार

(1) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं। इनके विषय में आप कक्षा नौवीं में पढ़ चुके हैं।

(2) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं - सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र या मिश्रित वाक्य।

सरल वाक्य- जिस वाक्य में कर्ता की एक ही मुख्य क्रिया होती है उसे सरल वाक्य कहते हैं।

जैसे- (1) लोकेन्द्र चित्र बनाता है। (2) पुष्पा विद्यालय जाएगी। (3) हमने खेल देखा।

इन वाक्यों में एक ही मुख्य क्रिया - बनाता, जाएगी, देखा का प्रयोग है।

संयुक्त वाक्य- जब दो स्वतंत्र वाक्य समुच्चय बोधक शब्द [और, तथा, व, एवं, किन्तु, पर, परंतु, लेकिन, या, अथवा, इसलिए] से जुड़े होते हैं तो वह संयुक्त वाक्य कहलाता है।

जैसे- (1) मैं आज घर गया और वह शहर चला गया। (2) बच्चे विद्यालय में हैं किन्तु वे खेल रहे हैं। (3) वहाँ मोहन आयेगा या तो सोहन आयेगा। ये सभी वाक्य और, किन्तु, या के प्रयोग से जुड़े हैं।

मिश्र या मिश्रित वाक्य- जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य हो और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हों उसे मिश्र या मिश्रित वाक्य कहते हैं।

जैसे- (1) शिक्षक ने बताया कि भारत एक कृषि प्रधान देश है।

प्रधान उपवाक्य - शिक्षक ने बताया व आश्रित उपवाक्य - भारत एक कृषि प्रधान देश है। 'कि' योजक पद है।

(2) वे लोग यहीं रुकेंगे जो आज शाम को आएँगे।

प्रधान उपवाक्य - लोग यहीं रुकेंगे व आश्रित उपवाक्य - आज शाम को आएँगे। वे...जो योजक पद हैं।

(3) बच्चे वहाँ गए थे जहाँ ऊँचे मकान हैं।

प्रधान उपवाक्य - बच्चे गए थे तथा आश्रित उपवाक्य - ऊँचे मकान हैं। वहाँ...जहाँ योजक पद हैं।

उपवाक्य- वाक्य का वह भाग जिससे अधूरा अर्थ व्यक्त होता है तथा जिसमें उद्देश्य और विधेय भी होता है। उसे उपवाक्य कहते हैं। जैसे- मैं उसे खूब पहचानता हूँ जो कल घर आया था। इस उदाहरण में दो उपवाक्य हैं- एक, मैं उसे खूब पहचानता हूँ तथा दो, जो कल घर आया था।

उपवाक्य दो तरह के हैं- (1) प्रधान उपवाक्य (2) आश्रित उपवाक्य

प्रधान उपवाक्य- वाक्य का वह अंश जो स्वतंत्र होता है और जिसमें मुख्य क्रिया होती है, वह प्रधान उपवाक्य कहलाता है। जैसे ऊपर के उदाहरण में, **मैं उसे खूब पहचानता हूँ** - प्रधान उपवाक्य है।

आश्रित उपवाक्य- वाक्य का वह अंश जो प्रधान उपवाक्य पर निर्भर होता है और जिसमें क्रिया पूरक के रूप में होती है, वह आश्रित उपवाक्य कहलाता है। जैसे ऊपर के उदाहरण में, **जो कल घर आया था** - आश्रित उपवाक्य है।

आश्रित उपवाक्य के पहले कि, क्योंकि, जब, जो, जिसे, जहाँ, जितना, जिसमें, जिसको इत्यादि से जुड़े होते हैं।

आश्रित उपवाक्य के तीन भेद हैं- (1) संज्ञा आश्रित उपवाक्य (2) विशेषण आश्रित उपवाक्य (3) क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य। जिन्हें संक्षेप में संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य तथा क्रिया विशेषण उपवाक्य के नाम से जानते हैं।

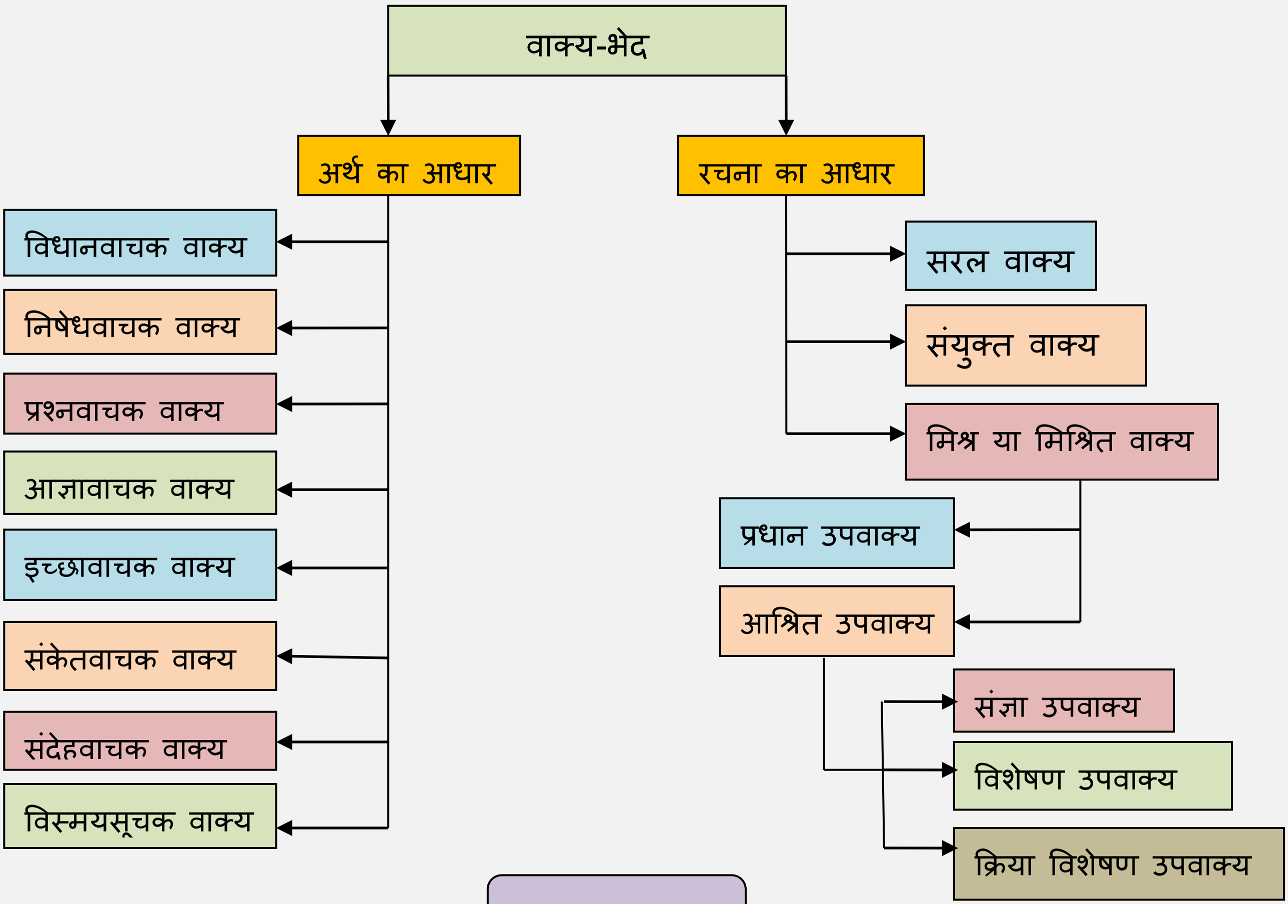

अभ्यास प्रश्न

i. सोहन ने परिश्रम किया किन्तु सफल नहीं हो पाया। रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए।

(क) सरल वाक्य
(ख) मिश्र वाक्य
(ग) संयुक्त वाक्य
(घ) इनमें से कोई नहीं

ii. निम्नलिखित में से सरल वाक्य का उदाहरण है-

(क) किसान बीज बोते हैं और फ़सल उगाते हैं।
(ख) रमेश सड़क पर तेजी से दौड़ सकता है।
(ग) रमेश जैसे ही बाजार पहुँचा वैसे ही बिजली चली गई।
घ) क और ख दोनों

iii. जो व्यक्ति परिश्रम करता है वह सफल होता है। - रचना के आधार पर वाक्य-भेद है-

(क) मिश्र वाक्य
(ख) संयुक्त वाक्य
(ग) सरल वाक्य
(घ) इनमें से कोई नहीं

iv. निम्नलिखित में से मिश्रित वाक्य है -

(क) आज श्यामा को पुरस्कार मिला था।
(ख) श्यामा पुरस्कार पाने से खुश थी।
(ग) श्यामा को पुरस्कार मिला और वह बहुत खुश थी।
(घ) श्यामा बहुत खुश थी क्योंकि उसे पुरस्कार मिला था।

v. जो सदा सच बोलते हैं वे सज्जन होते हैं। - वाक्य का सरल वाक्य में रूपांतरण होगा-

(क) सच बोलने वाले और सज्जन व्यक्ति दोनों एक ही हैं।

(ख) सदा सच बोलने वाले सज्जन होते हैं।

(ग) सज्जन व्यक्ति अलग होते हैं और सच बोलने वाले अलग होते हैं।

(घ) जो सज्जन होगा वह सच बोलेगा।

उत्तर- i- (ग) संयुक्त वाक्य ii- (ख) रमेश सड़क पर तेजी से दौड़ सकता है। iii- (क) मिश्र वाक्य iv- (घ) श्यामा बहुत खुश थी क्योंकि उसे पुरस्कार मिला था v- (ख) सदा सच बोलने वाले सज्जन होते हैं।

वाच्य विचार

वाच्य- किसी वाक्य में क्रिया के जिस रूप से कर्ता, कर्म अथवा भाव की प्रधानता का पता चले वह वाच्य कहलाता है। जैसे-(1) वह पुस्तक पढ़ता है। (2) उसके द्वारा या उससे पुस्तक पढ़ी जाती है। (3) उससे पढ़ा जाता है। इन उदाहरणों में पढ़ता है, पढ़ी जाती है, पढ़ा जाता है- क्रिया के तीन अगल-अलग रूप हैं।

वाच्य के भेद- वाच्य के तीन भेद हैं- (1) कर्तृवाच्य (2) कर्मवाच्य (3) भाववाच्य।

कर्तृवाच्य- जब वाक्य में क्रिया, कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है अर्थात कर्ता की प्रधानता होती है तब वहाँ कर्तृवाच्य होता है।

जैसे (1) चिड़िया आसमान में उड़ती है। (2) श्यामा चित्र बनाती थी। (3) वे सब कोलकाता जाएँगे। इन उदाहरणों में उड़ती है, बनाती थी और जाएँगे क्रियाएँ कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हैं।

कर्मवाच्य- जब वाक्य में क्रिया, कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है अर्थात कर्म की प्रधानता होती है तब वहाँ कर्मवाच्य होता है।

जैसे (1) सोहन से गीत गाया जाता है। (2) श्यामा से चित्र बनाया जाता था। (3) उनसे कोलकाता जाया जाएगा। इन उदाहरणों में गाया जाता है, बनाया जाता था और जाया जाएगा क्रियाएँ कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हैं।

भाववाच्य- जब वाक्य में क्रिया न तो कर्ता और न ही कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है बल्कि भाव के अनुसार होती है अर्थात भाव की प्रधानता होती है तब वहाँ भाववाच्य होता है।

जैसे (1) चिड़िया से उड़ा जाता है। (2) श्यामा से हँसा जाता था। (3) उनसे जाया जाएगा। इन उदाहरणों में - उड़ा जाता है, हँसा जाता था और जाया जाएगा क्रियाएँ भाव के अनुसार पुलिंग, एकवचन, प्रथम पुरुष में हैं।

विशेष- वाक्य में अकर्मक क्रिया होने पर सदैव भाववाच्य में ही क्रिया का रूप परिवर्तन होगा और सकर्मक क्रिया होने पर सदैव कर्मवाच्य में ही क्रिया का रूप परिवर्तन होगा।

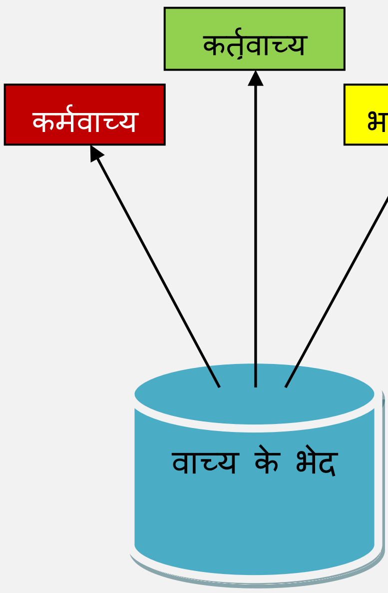

अभ्यास प्रश्न

i. यह कहानी मेरे द्वारा लिखी गई है। इस वाक्य में वाच्य है-

(क) कर्तृवाच्य
(ख) कर्मवाच्य
(ग) भाववाच्य
(घ) इनमें से कोई नहीं

ii. निम्नलिखित में से भाववाच्य का उदाहरण है-

(क) चित्रकार ने चित्र बनाया है।
(ख) वह पढ़ने के बाद लिखता है।
(ग) चिड़िया से उड़ा नहीं जाता।
(घ) रुपाली द्वारा लेख लिखा जाता है।

iii. मजदूर ने गली में पत्थर बिछाया। - इस वाक्य में वाच्य है-

(क) कर्तृवाच्य
(ख) कर्मवाच्य
(ग) भाववाच्य
(घ) इनमें से कोई नहीं

iv. पुजारी मंदिर में भजन गाता है। - इस वाक्य का कर्मवाच्य में रूपांतरण होगा-

(क) पुजारी मंदिर में भजन नहीं गाता है।
(ख) पुजारी मंदिर में भजन गाएगा।
(ग) पुजारी द्वारा मंदिर में भजन गाया जाता है।
(घ) पुजारी मंदिर में भजन गा चुका था

v. उससे दौड़ा नहीं जाता। - इस वाक्य का कर्तृवाच्य में रूपांतरण होगा-

(क) वह दौड़ नहीं सकता।
(ख) उससे अवश्य दौड़ा जाएगा।
(ग) वह सड़क पर दौड़ सकता है ।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर- i- (ख) कर्मवाच्य ii- (ग) चिड़िया से उड़ा नहीं जाता। iii- (क) कर्तृवाच्य iv- (ग) पुजारी द्वारा मंदिर में भजन गाया जाता है v- (क) वह दौड़ नहीं सकता।

पद-परिचय

पद- व्याकरण के नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयोग किए गए शब्द को ही पद कहते हैं। जैसे- प्रमोद पत्र लिखेगा। इस वाक्य में प्रमोद, पत्र, लिखेगा - कुल तीन पद हैं। वाक्य से स्वतंत्र होने पर ये सभी शब्द कहलाएँगे।

पद-परिचय- वाक्य में प्रयोग किए गए पदों को पहचानकर उनका व्याकरणिक परिचय देना ही पद-परिचय कहलाता है। जैसे- ऊपर के उदाहरण में, **प्रमोद** - व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुलिंग, एकवचन, प्रथम/अन्य पुरुष, कर्ता कारक है।
पत्र - जातिवाचक संज्ञा, अन्य पुरुष, एकवचन, कर्म कारक है। **लिखेगा** - सकर्मक क्रिया, भविष्य काल, पुलिंग, एकवचन, प्रथम पुरुष, कर्तृवाच्य है।

किस पद में क्या बताना जरूरी है

1. संज्ञा में- उपभेद, लिंग, वचन, पुरुष कारक और क्रिया के साथ संबंध।

2. सर्वनाम में- उपभेद, लिंग, वचन, पुरुष, कारक और क्रिया के साथ संबंध।
3. विशेषण में- उपभेद, लिंग, वचन और विशेष्य का विशेषण।
4. क्रिया में- उपभेद (कर्म और काल के आधार पर), लिंग, वचन, पुरुष और वाच्य।
5. क्रिया विशेषण- उपभेद, क्रिया सम्पन्न होने की दशा, क्रिया की विशेषता बताने वाला पद।
6. संबंधबोधक- भेद, जिन पदों से संबंध बनता हो।
7. समुच्चयबोधक- उपभेद, जिन पदों वाक्यों या उपवाक्यों को जोड़ता हो।
8. विस्मयादिबोधक- उपभेद, जिस भाव का बोध कराता हो।

<u>अन्य पद-</u>

9. प्रविशेषण- पहचान और वह विशेषण जिसकी विशेषता बताता हो।
10. निपात- पहचान और वह पद जिस पर ज़ोर देता हो।

<u>विशेष ध्यातव्य</u>

संज्ञा- व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक।
सर्वनाम- पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक और निजवाचक।
विशेषण- गुणवाचक, संख्यावाचक, परिणामवाचक और सार्वनामिक।
क्रिया- कर्म के आधार पर- अकर्मक और सकर्मक। **काल के आधार पर-** वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यकाल। **बनावट (रचना) के आधार पर-** सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया और नामधातु क्रिया।
क्रिया विशेषण- रीतिवाचक, स्थानवाचक, कालवाचक और परिमाणवाचक।
संबंधबोधक- (मुख्य रूप से) कालवाचक, स्थानवाचक, दिशावाचक, साधनवाचक और तुलनावाचक।
समुच्चयबोधक- समानाधिकरण और व्यधिकरण।
विस्मयादिबोधक- (मुख्य रूप से) हर्षसूचक, शोकसूचक, घृणासूचक, आश्चर्यसूचक, भयसूचक और संबोधन सूचक।

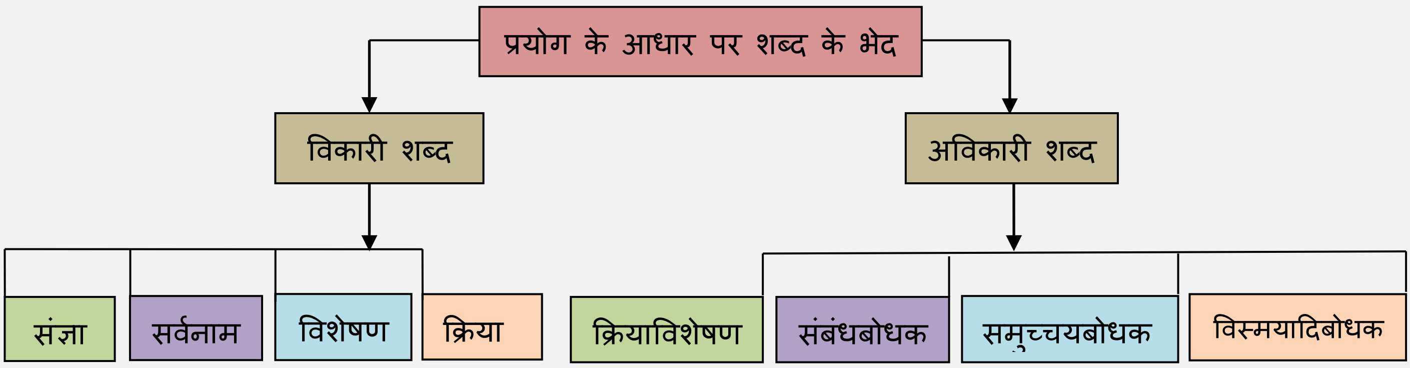

अभ्यास प्रश्न

i. <u>कौटिल्य</u> का एक अन्य नाम चाणक्य भी है। रेखांकित पद का पद-परिचय दीजिए-
(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, मध्यम पुरुष
(ख) जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुलिंग, उत्तम पुरुष
(ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुलिंग, प्रथम पुरुष
(घ) भाववाचक संज्ञा, बहुवचन, स्त्रीलिंग, अन्य पुरुष

ii. रामचरित मानस की चौपाइयाँ <u>आराम से</u> पढ़नी चाहिए। 'आराम से' पद का पद-परिचय है-
(क) पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग, अकर्मक
(ख) रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'पढ़नी चाहिए' क्रिया की विशेषता बताने वाला पद
(ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुलिंग, अकर्मक
(घ) गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, स्त्रीलिंग, सकर्मक

iii. भक्त ने पुजारी को दो दर्जन केले दिए। 'दो दर्जन' पद व्याकरणिक-परिचय बताइए-

(क) गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुलिंग, केले विशेष्य का विशेषण

(ख) परिणामवाचक विशेषण, बहुवचन, पुलिंग, केले विशेष्य का विशेषण

(ग) सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, दूँगा क्रिया की विशेषता

(घ) संख्यावाची विशेषण, बहुवचन, पुलिंग, केले विशेष्य का विशेषण

iv. मैं देश के लिए अपने प्राण निछावर कर दूँगा। - 'मैं' का पद-परिचय दीजिए-

(क) पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुलिंग, उत्तम पुरुष, कर्ता कारक

(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम, बहुवचन, पुलिंग, मध्यम पुरुष, कर्म कारक

(ग) निजवाचक सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग, उत्तम पुरुष, कर्ता कारक

(घ) भाववाचक संज्ञा, बहुवचन, पुलिंग, मध्यम पुरुष, कर्म कारक

v. वाह! तुमने बहुत अच्छा किया। - रेखांकित पद का पद-परिचय क्या होगा ?

(क) भाववाचक संज्ञा, एकवचन, पुलिंग, कर्ता कारक

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक

(ग) संख्यावाची विशेषण, एकवचन, पुलिंग, करण कारक

(घ) विस्मयादि बोधक अव्यय, हर्षसूचक, उत्साह प्रकट करने वाला पद

उत्तर- i- (ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुलिंग, प्रथम पुरुष

ii- (ख) रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'पढ़नी चाहिए' क्रिया की विशेषता बताने वाला पद

iii- (घ) संख्यावाची विशेषण, बहुवचन, पुलिंग, केले विशेष्य का विशेषण

iv- (क) पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुलिंग, उत्तम पुरुष, कर्ता कारक

v- (घ) विस्मयादि बोधक अव्यय, हर्षसूचक, उत्साह प्रकट करने वाला पद

अलंकार परिचय

अलंकार- 'अलंकार' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है 'आभूषण' यानी गहना। अलंकार शब्द 'अलम्' और 'कार' दो शब्दों के योग से बना है। 'अलम्' का अर्थ है 'शोभा' तथा 'कार' का अर्थ हैं 'करने वाला'। अर्थात् काव्य की शोभा (सौन्दर्य) बढ़ाने वाले शोभाकारक तत्वों को अलंकार कहते हैं।

जैसे- (1) बालकु बोलि बधौ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।

(2) प्रीति-नदी में पाऊँ न बोरयो, दृष्टि न रूप परागी।

काव्य का सौन्दर्य दो रूपों अर्थात शब्द एवं अर्थ की सुन्दरता में वृद्धि अथवा चमत्कार उत्पन्न करने वाले कारकों को अलंकार कहते हैं।

अलंकारों के प्रयोग से काव्य रुचिकर और पठनीय बनता है। भाषा की गुणवत्ता बढ़ जाती है और उसमें सजीवता आ जाती है। अभिव्यक्ति में सरसता और स्पष्टता आने से कविता संप्रेषणीय बन जाती है। जैसे आभूषण नारियों का श्रृंगार है, ठीक उसी प्रकार साहित्य में 'अलंकार' काव्य का श्रृंगार है।

अलंकार के भेद- अलंकार के मुख्यत: दो भेद हैं- (1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

शब्दालंकार- जहाँ शब्दों के विशिष्ट प्रयोग से काव्य का सौन्दर्य बढ़ जाता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।

जैसे- (1) अवधि अधार आस आवन की, तन मन विथा सही।

(2) चारू चंद्र की चंचल किरणें खेल रहीं हैं जल-थल में।

शब्दालंकार के प्रकार- शब्दालंकार के मुख्य रूप से तीन प्रकार हैं-

(1) अनुप्रास अलंकार
(2) यमक अलंकार
(3) श्लेष अलंकार

अनुप्रास अलंकार- काव्य में जहाँ एक ही वर्ण बार-बार दोहराया जाए अर्थात् वर्णों की आवृत्ति हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे- (1) कल कानन कुंडल मोर पखा, उर पे बनमाल बिराजत है।

(2) भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं। बिपुल बार महि देवन्ह दीन्हीं।।

यमक अलंकार- काव्य में जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार आए लेकिन उसके अर्थ भिन्न-भिन्न हों वहाँ यमक अलंकार होता है।

जैसे- (1) काली घटा का घमंड घटा, नभ मंडल तारक वृंद खिले।

(2) तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं।

श्लेष अलंकार- काव्य में जहाँ कोई शब्द एक ही बार आए लेकिन उसके अर्थ भिन्न-भिन्न हों वहाँ यमक अलंकार होता है।

जैसे- (1) नर की अरु नलनीर की **गति** एकै करि जोए। जेतो नीचे ह्वै चलै तेतो ऊँचो होए।।

(2) रावन सिर सरोज बनचारी। चल रघुवीर **शिलीमुख** धारी।।

अर्थालंकार- जहाँ काव्य में अर्थ के माध्यम से काव्य का सौन्दर्य बढ़ जाता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

जैसे- (1) चरण कमल बन्दौ हरि राई।

(2) कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।

अर्थालंकार के प्रकार- अर्थालंकार के निम्नलिखित प्रकार हैं-

(1) उत्प्रेक्षा अलंकार (2) अतिशयोक्ति अलंकार (3) मानवीकरण अलंकार

उत्प्रेक्षा अलंकार- जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना व्यक्त की जाय, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें मनु, मानो, मानहु, जनु, जानो, जानहु आदि शब्दों का प्रायः प्रयोग हुआ रहता है।

जैसे- (1) तुम्ह तौ काल हाँक जनु लावा। बार बार मोही लागि बोलावा।।

(2) सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात।
मानहु नीलमणि शैल पर, आतप परयो प्रभात।।

अतिशयोक्ति अलंकार- जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ाकर किया जाय कि वह लोक व्यवहार में असंभव लगे वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

जैसे- (1) हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग। लंका सारी जल गई गए निशाचर भाग।।

(2) आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।

मानवीकरण अलंकार- जहाँ काव्य में प्रकृति की वस्तुओं में मानवीय कार्य-व्यवहार दिखाया जाए वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

जैसे- (1) मेघ आए बड़े बन-ढन के सँवर के।

(2) दिवसावसान का समय
मेघ आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदरी परी-सी

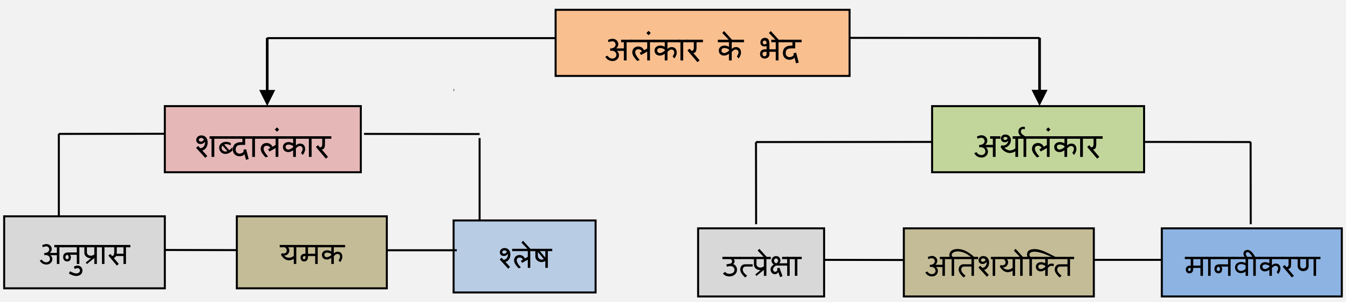

अभ्यास प्रश्न

i. मधुवन की छाती को देखो, सूखी इसकी कितनी कलियाँ। इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) उत्प्रेक्षा अलंकार (ख) श्लेष अलंकार

(ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) इनमें से कोई नहीं

ii. सखी सोहत गोपाल के, उर गुंजन की माल।
बाहर लसत मानो पिये, दावानल की ज्वाल।। इस उदाहरण में कौन-सा अलंकार है?

(क) मानवीकरण अलंकार (ख) अतिशयोक्ति अलंकार

(ग) उत्प्रेक्षा अलंकार (घ) इनमें से कोई नहीं

iii. निम्नलिखित में से मानवीकरण अलंकार का उदाहरण है-

(क) नदी-तट से लौटती गंगा नहा कर, सुवासित भीगी हवाएँ सदा पावन।।

(ख) हाय *फूल सी कोमल बच्ची,* हुई राख की ढेरी थी।

(ग) *पूत सपूत, तो क्यों धन संचय? पूत कपूत, तो क्यों धन संचय?*

(घ) इनमें से कोई नहीं

iv. निम्नलिखित में से अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण है-

(क) मेघ आए बड़े बन-ढन के सँवर के।

(ख) कल कानन कुंडल मोर पखा, उर पे बनमाल बिराजत है।

(ग) भूप सहस दस एकहिं बारा। लगे उठावन टरत न टारा।।

(घ) इनमें से कोई नहीं

v. बीती विभावरी जाग री!
अंबर पनघट में डुबो रही
तारा-घट उषा नागरी - इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) उत्प्रेक्षा अलंकार

(ख) अतिशयोक्ति अलंकार

(ग) श्लेष अलंकार

(घ) मानवीकरण अलंकार

vi. पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों की नोकों से।
मानो झूम रहे हों तरु भी, मंद पवन के झोंकों से ।।

प्रस्तुत पंक्तियों में मुख्य रूप से कौन-सा अलंकार निहित है?

(क) उत्प्रेक्षा अलंकार (ख) अतिशयोक्ति अलंकार

(ग) मानवीकरण अलंकार (घ) श्लेष अलंकार

उत्तर-

i- (ख) श्लेष अलंकार

ii- (ग) उत्प्रेक्षा अलंकार

iii- (क) नदी-तट से लौटती गंगा नहा कर, सुवासित भीगी हवाएँ सदा पावन।।

iv- (ग) भूप सहस दस एकहिं बारा। लगे उठावन टरत न टारा।।

v- (घ) मानवीकरण अलंकार

vi- (क) उत्प्रेक्षा अलंकार

गद्य भाग

नेताजी का चश्मा - स्वयं प्रकाश

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए-

1. हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मजाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। मुड़कर देखा तो अवाक रह गए। एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लंगड़ा आदमी सिर पर गाँधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टंगे बहुत-से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था। और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं! फेरी लगता है! हालदार साहब चक्कर में पड़ गए। पूछना चाहते थे इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यही इसका वास्तविक नाम है? लेकिन पानवाले ने साफ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और बात करने को तैयार नहीं। ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था। काम भी था। हालदार साहब जीप में बैठकर चले गए।

i. पानवाले द्वारा किसका मजाक उड़ाया जा रहा था ?

(क) दुकानदार का

(ख) हालदार साहब का

(ग) एक देशभक्त का

(घ) इनमें से कोई नहीं

ii. एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लंगड़ा आदमी दूसरे हाथ में क्या लिए था ?

(क) गाँधी टोपी

(ख) छोटी-सी संदूकची

(ग) नीला कुर्ता

(घ) बाँस पर टंगे बहुत-से चश्मे

iii. चश्मेवाला चश्मे बेचने के लिए क्या करता था?

(क) दूकान लगाता था

(ख) फेरी लगाता था

(ग) घर में बैठा रहता

(घ) बाजार में घूमता था

iv. हालदार साहब पानवाले से क्या पूछना चाहते थे ?

(क) चश्मे वाले का वास्तविक नाम

(ख) चश्मे बेचने का कारण

(ग) लंगड़े होने का कारण

(घ) फेरी लगाने के विषय में

v. हालदार साहब जीप में बैठकर क्यों चले गए ?

(क) पान वाला बात करने को तैयार नहीं था

(ख) ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था

(ग) हालदार साहब को बहुत काम था

(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर-

i. ग) एक देशभक्त का घ) बाँस पर टंगे बहुत-से चश्मे iii. ख) फेरी लगाता था iv. क) चश्मे वाले का वास्तविक नाम v. घ) उपर्युक्त सभी

2. बार-बार सोचते क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ होम कर देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूढ़ती है। दुखी हो गए। पंद्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुजरे। कस्बे में घुसने से पहले ही खयाल आया कि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी। लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा। क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया। और कैप्टन मर गया। सोचा आज वहाँ रुकेगे नहीं, पान भी नही खाएँगे मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया चौराहे पर रुकना नहीं आज बहुत काम है पान आगे कहीं खा लेंगे ।

लेकिन आदत से मजबूत आँखे चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ उठ गई। कुछ ऐसा देखा कि चीखे रोको! जीप स्पीड में थी ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते-न-रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज-तेज कदमों से मूर्ति की तरफ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। हालदार साहब भावुक हैं| इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आईं।

i. हालदार साहब दुखी क्यों हो गए ?

(क) देश के कुछ लोग देशभक्तों का मजाक उड़ाते हैं

(ख) सुभाष की मूर्ति पर चश्मा नहीं था

(ग) ड्राइवर ने चौराहे पर रुकने से मना कर दिया था

(घ) पानवाले की दूकान बंद थी

ii. कस्बे की हृदयस्थली में किसकी प्रतिमा थी?

(क) शहीद भगत सिंह की

(ख) नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की

(ग) मोहनदास करमचंद गाँधी की

(घ) सरदार वल्लभभाई पटेल की

iii. हालदार साहब ने चौराहे पर न रुकने के विषय में क्या सोचा ?

(क) आज बहुत काम है पान आगे कहीं खा लेंगे

(ख) चौराहे पर सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा

(ग) मास्टर बनाना भूल गया और कैप्टन मर गया

(घ) उपर्युक्त सभी

iv. जब जीप स्पीड में थी और ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे तब क्या हुआ?

(क) रास्ता चलते लोग देखने लगे

(ख) हालदार साहब अटेंशन में खड़े हो गए

(ग) कैप्टन जीवित हो गया

(घ) हालदार साहब की आँखों में आँसू आ गए

v. हालदार साहब की आँखें क्यों भर आईं?

(क) मूर्ति की आँखों पर चश्मा नहीं था

(ख) पानवाला पान लेकर खड़ा था

(ग) मूर्ति की आँखों पर सरकंडे का चश्मा रखा था

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-

i. (क) देश के कुछ लोग देशभक्तों का मजाक उड़ाते हैं ii. (ख) नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की iii. (घ) उपर्युक्त सभी iv. (क) रास्ता चलते लोग देखने लगे v. (ग) मूर्ति की आँखों पर सरकंडे का चश्मा रखा था

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के विकल्प में से सही छांटकर लिखिए-

1. कातिक आया नहीं कि बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ शुरू हुईं, जो फागुन तक चला करतीं। इन दिनों वह सबेरे ही उठते। न जाने किस वक्त जगकर वह नदी-स्नान को जाते - गाँव से दो मील दूर ! वहाँ से नहा-धोकर लौटते और गाँव के बाहर ही, पोखरे के ऊँचे भिंडे पर, अपनी खँजड़ी लेकर जा बैठते और अपने गाने टेरने लगते। मैं शुरू से ही देर तक सोनेवाला हूँ, किन्तु, एक दिन, माघ की उस दाँत किटकिटानेवाली भोर में भी, उनका संगीत मुझे पोखरे पर ले गया था। अभी आसमान के तारों के दीपक बुझे नहीं थे। हाँ, पूरब में लोही लग गई थी जिसकी लालिमा को शुक्र तारा और बढ़ा रहा था। खेत, बगीचा, घर - सब पर कुहासा छा रहा था। सारा वातावरण अजीब रहस्य से आवृत मालूम पड़ता था। उस रहस्यमय वातावरण में एक कुश की चटाई पर पूरब मुँह, काली कमली ओढ़े, बालगोबिन भगत अपनी खँजड़ी लिए बैठे थे। उनके मुँह से शब्दों का ताँता लगा था, उनकी अँगुलियाँ खँजड़ी पर लगातार चल रही थीं। गाते-गाते इतने मस्त हो जाते, इतने सुरूर में आते, उत्तेजित हो उठते कि मालूम होता, अब खड़े हो जाएँगे। कमली तो बार-बार सिर से नीचे सरक जाती।

i. बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ कब से शुरू होतीं और कब तक चला करतीं ?

(क) चैत से फागुन तक

(ख) फागुन से कातिक तक

(ग) सावन से बैसाख तक

(घ) कातिक से फागुन तक

ii. लेखक ने आसमान का दीपक किसे कहा है जो अभी बुझे नहीं थे?

(क) सूरज को

(ख) रोशनी को

(ग) तारों को

(घ) गीतों को

iii. खेत, बगीचा, घर - इन सब पर क्या छा रहा था ?

(क) सर्दी

(ख) कुहासा

(ग) धूप

(घ) बादल

iv. बालगोबिन भगत जिस नदी में स्नान करने जाते वह गाँव से कितनी दूर थी ?

(क) दो मील

(ख) चार मील

(ग) आठ मील

(घ) दस मील

v. बालगोबिन भगत के मस्त होने और सुरूर में आने से कमली का क्या होता ?

(क) उन्हें ठंड लगने लगती।

(ख) खँजड़ी बजना बंद हो जाती।

(ग) बार-बार सिर से नीचे सरक जाती

(घ) उनके शरीर से लिपट जाती

उत्तर-

i. (घ) कातिक से फागुन तक ii. (ग) तारों को iii. (ख) कुहासा iv. (क) दो मील v. (ग) बार-बार सिर से नीचे सरक जाती

2. आषाढ़ की रिमझिम है। समूचा गाँव खेतों में उतर पड़ा है। कहीं हल चल रहे हैं कही रोपनी हो रही है। धान के पानी भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं। औरतें कलेवा लेकर मेड़ पर बैठी हैं। आसमान बादल से घिरा धूप का नाम नहीं ठंडी पुरबाई चल रही है। ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर तरंग झंकार सी कर उठी। यह क्या है यह कौन हैं यह पूछना न पड़ेगा। बाल गोबिन भगत समुचा शरीर कीचड़ में लिथड़े अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनकी अंगुली एक-एक धान के पौधे को पंक्तिबद्ध खेत में बिठा रही है। उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को ऊपर स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कान की ओर बच्चे खेलते हुए झूम उठते हैं। मेड़ पर खड़ी औरतों के होंठ कांप उठते हैं वे गुनगुनाने लगती हैं हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते हैं।

i. समूचा गाँव खेतों में कब उमड़ पड़ता है ?

(क) ठंडी पुरवाई में

(ख) कार्तिक की सुहावनी सुबह में

(ग) फागुन की बहार में

(घ) आषाढ़ की रिमझिम में

ii. धान के पानी भरे खेतों में कौन उछल रहे हैं ?

(क) स्त्रियाँ

(ख) बच्चे

(ग) किसान

(घ) कीड़े-मकोड़े

iii. बाल गोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े अपने खेत में क्या कर रहे हैं?

(क) गेहूँ बो रहे हैं

(ख) फसल काट रहे हैं

(ग) रोपनी कर रहे हैं

(घ) हल चला रहे हैं

iv. उनके कंठ से स्वर निकलकर कहाँ जा रहा है?

(क) संगीत के जीने पर चढ़कर स्वर्ग की ओर

(ख) धान के पौधों की रोपनी हो रही खेतों की ओर

(ग) बच्चों के उछल-कूद कर रहे पैरों की ओर

(घ) इनमें से कोई नहीं

v. हलवाहों के पैर ताल से क्यों उठने लगते हैं?

(क) बाल गोबिन भगत के संगीत के कारण।

(ख) बच्चों के खेलकूद करने के कारण।

(ग) औरतों के मेड़ पर खड़ी होने के कारण।

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- i. (घ) आषाढ़ की रिमझिम में ii. (ख) बच्चे iii. (ग) रोपनी कर रहे हैं iv. (क) संगीत के जीने पर चढ़कर स्वर्ग की ओर v. (क) बाल गोबिन भगत के संगीत के कारण

लखनवी अंदाज - यशपाल

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के विकल्प में से सही छांटकर लिखिए-

1. गाड़ी छूट रही थी। सेकण्ड क्लास के एक छोटे डिब्बे को खाली समझकर जरा दौड़कर उसमें चढ़ गए। अनुमान के प्रतिकूल डिब्बा निर्जन नहीं था। एक बर्थ पर लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफेदपोश सज्जन बहुत सुविधा

से पालथी मारे बैठे थे। सामने दो ताजे-चिकने खीरे तौलिए पर रखे थे। डिब्बे में हमारे सहसा कूद जाने से सज्जन की आँखों में एकांत चिन्तन में विघ्न का असंतोष दिखाई दिया। सोचा, हो सकता है, यह भी कहानी के लिए सूझ की चिन्ता में हों या खीरे-जैसी अपदार्थ वस्तु का शौक करते देखे जाने के संकोच में हों। नवाब साहब ने संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया। हमने भी उनके सामने की बर्थ पर बैठकर आत्म-सम्मान में आँखें चुरा लीं। खाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे। सम्भव है, नवाब साहब ने बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफ़ायत के विचार से सेकण्ड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गवारा न हो कि शहर का कोई सफ़ेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफ़र करता देखे।

i- लेखक सेकण्ड क्लास के एक छोटे डिब्बे दौड़कर क्यों चढ़े?

(क) लेखक अपनी सामर्थ्य दिखा रहे थे

(ख) सभी दौड़कर डिब्बे में चढ़ रहे थे

(ग) गाड़ी छूट रही थी

(घ) इनमें से कोई नहीं

ii- सामने दो ताजे-चिकने खीरे कहाँ रखे थे?

(क) बर्थ पर

(ख) तौलिए पर

(ग) लोटे पर

(घ) अख़बार पर

iii- किसने संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया?

(क) लेखक ने

(ख) लोगों ने

(ग) नवाब साहब ने

(घ) बच्चों ने

iv- आत्म-सम्मान में किसने आँखें चुरा लीं?

(क) लेखक ने

(ख) नवाब साहब ने

(ग) लोगों ने

(घ) इनमें से कोई नहीं

v- लेखक के अनुमान से नवाब साहब ने सेकण्ड क्लास का टिकट क्यों खरीदा होगा?

(क) बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में।

(ख) लेखक के साथ यात्रा कर सकने के अनुमान से।

(ग) लोगों के साथ यात्रा कर सकने के अनुमान से।

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- i- (ग) गाड़ी छूट रही थी ii- (ख) तौलिए पर iii- (ग) नवाब साहब ने iv- (क) लेखक ने v- (क) बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में।

2. नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए। हमें तसलीम में सिर खम कर लेना पड़ा-यह है खानदानी तहज़ीब, नफ़ासत और नज़ाकत! हम गौर कर रहे थे, खीरा इस्तेमाल करने के इस तरीके को खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होने का सूक्ष्म, नफीस या एब्स्ट्रैक्ट तरीका ज़रूर कहा जा सकता है, परन्तु क्या ऐसे तरीके से उदर की तृप्ति भी हो सकती है? नवाब साहब की ओर से भरे पेट के ऊँचे डकार का शब्द

सुनाई दिया और नवाब साहब ने हमारी ओर देखकर कह दिया, 'खीरा लज़ीज होता है, लेकिन होता है सकील, नामुराद मेदे पर बोझ डाल देता है' ज्ञान-चक्षु खुल गए। पहचाना ये हैं नई कहानी के लेखक!

i- नवाब साहब क्यों लेट गए?

(क) उदर तृप्ति हो जाने के कारण

(ख) लेखक से संगति न दिखाने के कारण

(ग) खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थकने के कारण

(घ) खीरे खा लेने के कारण

ii- खीरे के इस्तेमाल करने का एब्स्ट्रैक्ट तरीका क्या था?

(क) खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होना

(ख) खीरे की फाँकें बनाना

(ग) खीरे धोकर इस्तेमाल करना

(घ) खीरे धोकर तौलिए से पोंछना

iii- भरे पेट के ऊँचे डकार का शब्द किसे सुनाई दिया?

(क) लेखक को

(ख) लोगों को

(ग) नवाब साहब को

(घ) इनमें से कोई नहीं

iv- 'खीरा लज़ीज होता है- यह कथन -----?

(क) सत्य है

(ख) असत्य है

(ग) न सत्य, न असत्य

(घ) इनमें से कोई नहीं

v- **पहचाना ये हैं नई कहानी के लेखक! - इस कथन में क्या व्यंग्य है**?

(क) नवाब साहब नई कहानी के लेखक हैं।

(ख) बिना घटना और पात्र के कहानी लिखी जा सकती है।

(ग) कहानी के लिए पात्र और घटना की जरुरत होती है।

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- i- (ग) खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थकने के कारण ii- (क) खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होना iii- (क) लेखक को iv- (क) सत्य है v- (ग) कहानी के लिए पात्र और घटना की जरुरत होती है।

एक कहानी यह भी - मन्नू भंडारी

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के विकल्प में से सही छांटकर लिखिए-

1- पर यह पितृ गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनका गौरव गान करना है बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की कौन सी खूबी और खामियाँ मेरे व्यक्तित्व के ताने-बाने में गुथीं हुई है या कि अनजाने अनचाहे किए उनके व्यहार ने मेरे भीतर किन कृतियों को जन्म दे दिया। मैं काली हूँ बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिताजी की कमजोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी खूब गोरी स्वस्थ और हँसमुख बहिन सुशीला से हर बात में तुलना और फिर उसकी प्रसंशा ने ही क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीन भाव की ग्रंथि पैदा नहीं कर दी कि नाम सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पाई? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई कुछ विशेषता लगाकर मेरे लेखकीय उपलब्धियों का जिक्र करने लगता है तो मैं संकोच में सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने-गड़ने को हो जाती हूँ।

i- लेखिका ने इस अनुच्छेद में किसके व्यक्तित्व की चर्चा की है?
(क) स्वयं के व्यक्तित्व की
(ख) अपने पिता के व्यक्तित्व की
(ग) अपने बहिन के व्यक्तित्व की
(घ) इनमें से कोई नहीं मन ,
ii- लेखिका बचपन में कैसी थी?
(क) गोरी, दुबली और मरियल
(ख) गोरी, मोटी और स्वस्थ
(ग) काली, दुबली और मरियल
(घ) इनमें से कोई नहीं
iii- गोरी, स्वस्थ और हँसमुख कौन थी?
क) लेखिका
(ख) लेखिका की बहिन
(ग) लेखिका की माँ
(घ) इनमें से कोई नहीं
iv- लेखिका आज तक किस बात से उबर नहीं पाई?
(क) बहिन सुशीला के व्यक्तित्व से
(ख) पिता के व्यक्तित्व से
(ग) मान-सम्मान और प्रतिष्ठा से
(घ) गहरे हीन भाव की ग्रंथि से
v- विशेषता लगाकर परिचय करवाते समय लेखिका पर क्या असर होता है?
(क) लेखिका संकोच में सिमट जाती है।
(ख) लेखिका पर कोई असर नहीं होता है।
(ग) लेखिका प्रसन्नता में डूब जाती है।
(घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर- i- (क) स्वयं के व्यक्तित्व की ii- (ग) काली, दुबली और मरियल iii- (ख) लेखिका की बहिन iv- (घ) गहरे हीन भाव की ग्रंथि से v- (क) लेखिका संकोच में सिमट जाती है।

2- पिता जी के जिस शक्की स्वभाव पर मैं कभी भन्ना-भन्ना जाती थी, आज एकाएक अपने खंडित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखाई देती है.....बहुत 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक। होश सँभालने के बाद से ही जिन पिता जी से किसी -न-किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं...........कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कही प्रतिच्छाया के रूप में। केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिल्कुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है। समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए..........स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं ही कर सकता।
i- लेखिका को पिताजी के किस व्यवहार की झलक दिखाई देती थी?
(क) उनके शक्की स्वभाव की
(ख) स्वयं के शक्की स्वाभाव की
(ग) अपनों के विश्वासघात की
(घ) इनमें से कोई नहीं

ii- पिता जी से किसी-न-किसी बात पर हमेशा लेखिका की टक्कर ही चलती रही, ऐसा कब से?
(क) पिताजी के समझाने के बाद
(ख) लेखिका के होश सँभालने के पहले से
(ग) लेखिका के होश सँभालने के बाद से
(घ) पिताजी के शक्की हो जाने के बाद
iii- वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं- लेखिका ने ऐसा क्यों कहा?
(क) क्योंकि लेखिका पर पिताजी के व्यक्तित्व का असर है
(ख) क्योंकि लेखिका पर उसकी बहिन सुशीला के व्यक्तित्व का असर है
(ग) क्योंकि लेखिका पर उसकी माँ के व्यक्तित्व का असर है
(घ) इनमें से कोई नहीं
iv- समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए- पर ...?
(क) जीवन के अतीत से व्यक्ति पूरी तरह मुक्त नहीं को पाता है
(ख) व्यक्ति बीती बातों को पूरी तरह से भूल जाता है
(ग) व्यक्ति भविष्य की योजनाओं से मुक्त हो जाता है
(घ) जीवन में गहरे हीन भाव जन्म ले लेते हैं
v- लेखिका मन्नू भंडारी द्वारा लिखित पाठ का नाम है...?
(क) एक कहानी ऐसी भी
(ख) मेरे जीवन की कहानी।
(ग) एक कहानी यह भी
(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- i- (क) उनके शक्की स्वभाव की ii- (ग) लेखिका के होश सँभालने के बाद से iii- (क) क्योंकि लेखिका पर पिताजी के व्यक्तित्व का असर है iv- (क) जीवन के अतीत से व्यक्ति पूरी तरह मुक्त नहीं को पाता है v- (ग) एक कहानी यह भी

नौबत खाने में इबादत - यतींद्र मिश्र

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के विकल्प में से सही छांटकर लिखिए-

1-सचमुच हैरान करती है काशी - पकड्ढा महल से जैसे मलाई बरफ गया, संगीत, साहित्य और अदब की बहुत सारी परंपराएँ लुप्त हो गई। एक सच्चे सुर साधक और सामाजिक की शांति बिस्मिल्ला खाँ साहब को इन सबकी कमी खलती है। काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक रहे हैं, उसी तरह मुहर्रम-ताजिया और होली-अबीर, गुलाल की गंगा-जमुनी संस्कृति भी एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। अभी जल्दी ही बहुत कुछ इतिहास बन चुका है। अभी आगे बहुत कुछ इतिहास बन जाएगा। फिर भी कुछ बचा है जो सिर्फ काशी में हैं। काशी आज भी संगीत के स्वर पर जागती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है। काशी आनंदकानन है। सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज सिखाने वाला नायाब हीरा रहा है जो हमेशा से दो कौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।
i- सचमुच हैरान करती है काशी- ऐसा क्यों कहा गया है?
(क) क्योंकि संगीत, साहित्य और अदब की बहुत सारी परंपराएँ लुप्त हो गई हैं
(ख) क्योंकि अब वहाँ शहनाई नहीं बजती है
(ग) क्योंकि अब वहाँ लोग मिलजुलकर नहीं रहते हैं
(घ) इनमें से कोई नहीं
ii- गंगा-जमुनी संस्कृति का क्या अर्थ है?

(क) बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक रहे हैं
(ख) मुहर्रम-ताजिया और होली-अबीर एक-दूसरे के पूरक रहे हैं
(ग) हिन्दू और मुस्लिम के त्योहार, संस्कृति और परम्पराएँ एक-दूसरे की पूरक रही हैं
(घ) ये सभी

iii- कौन सी शहर आज भी संगीत के स्वर पर जागता और उसी की थापों पर सोता है?
(क) मथुरा
(ख) काशी
(ग) अयोध्या
(घ) प्रयागराज

iv- काशी आनंदकानन है- इसका क्या मतलब है?
(क) काशी में हर तरफ शोर-शराबा है
(ख) काशी में हर तरफ महल ही महल हैं
(ग) काशी में हर तरफ प्रसन्नता रूपी जंगल है
(घ) वहाँ हर तरफ संन्यासी ही संन्यासी हैं

v- दो कौमों को एक होने व भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा कौन देता रहा?
(क) लेखक
(ख) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ
(ग) बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई
(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- i- (क) क्योंकि संगीत, साहित्य और अदब की बहुत सारी परंपराएँ लुप्त हो गई हैं ii- (घ) ये सभी iii- (ख) काशी iv- (ग) काशी में हर तरफ प्रसन्नता रूपी जंगल है v- (ख) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ

2- अमीरुद्दीन की उम्र अभी 14 साल है। मसलन बिस्मिल्ला खाँ की उम्र अभी 14 साल है। वही काशी है। वही पुराना बाला जी का मंदिर जहाँ बिस्मिल्ला खाँ को नौबतखाने रियाज़ के लिए जाना पड़ता है। मगर एक रास्ता है बालाजी मंदिर तक जाने का। यह रास्ता रसूलन बाई और बतूलन बाई के यहाँ से होकर जाता है। इस रास्ते से अमीरुद्दीन को जाना अच्छा लगता है। इस रास्ते न जाने कितने तरह के बोल-बनाव कभी ठुमरी, कभी टप्पे, कभी दादरा के मार्फ़त ड्योढ़ी तक पहुँचते रहते हैं। रसूलन बाई और बतूलन बाई जब गाती है तब अमीरुद्दीन को खुशी मिलती है। अपने ढेरों साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खाँ साहब ने स्वीकार किया है कि उन्हें अपने जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहिनों को सुनकर मिली है। एक प्रकार से उनकी अबोध उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत- प्रेरणा की वर्णमाला रसूलन बाई और बतूलन बाई ने उकेरी है।

i- बिस्मिल्ला खाँ का बचपन का नाम क्या था?
(क) यतींद्र मिश्र
(ख) अमीरुद्दीन
(ग) रसूलन बाई
(घ) बालाजी

ii- बिस्मिल्ला खाँ को रियाज़ के लिए कहाँ जाना पड़ता था?
(क) रसूलन बाई के घर
(ख) बतूलन बाई के घर
(ग) काशी
(घ) नौबतखाने

iii- बालाजी मंदिर तक जाने का रास्ता बिस्मिल्ला खाँ को क्यों अच्छा लगता था?

(क) क्योंकि यह रास्ता नौबतखाने तक जाता था
(ख) क्योंकि यह रास्ता बहुत पुराना था
(ग) क्योंकि यह रास्ता एकदम नया था
(घ) क्योंकि यह रास्ता रसूलन बाई और बतूलन बाई के यहाँ से होकर जाता था

iv- बिस्मिल्ला खाँ को जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति किनसे मिली?

(क) बाबा विश्वनाथ से
(ख) काशी की ड्योढ़ी से
(ग) रसूलन बाई और बतूलन बाई से
(घ) इनमें से कोई नहीं

v- 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के लेखक हैं?

(क) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ
(ख) रसूलन बाई और बतूलन बाई
(ग) यतींद्र मिश्र
(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- i- (ख) अमीरुद्दीन ii- (घ) नौबतखाने iii- (घ) क्योंकि यह रास्ता रसूलन बाई और बतूलन बाई के यहाँ से होकर जाता था iv- (ग) रसूलन बाई और बतूलन बाई से v- (ग) यतींद्र मिश्र

सभ्यता और संस्कृति - भदंत आनंद कौसल्यायन

निम्नलिखित गद्यांश से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर दीजिए-

1- एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है किंतु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अध्कि सभ्य भले ही कह सकें पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

i- लेखक ने संस्कृत व्यक्ति किसे माना है?

(क) जो व्यक्ति हमेशा संघर्ष करता है
(ख) जो व्यक्ति कोई नयी चुनौती स्वीकार करता है
(ग) जो व्यक्ति कोई नया काम नहीं करता है
(घ) जो व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है

ii- कोई ऐसी चीज जिसे अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो गई है? वह कहलाता है-

(क) संस्कृत व्यक्ति
(ख) असंस्कृत व्यक्ति
(ग) सभ्य व्यक्ति
(घ) असभ्य व्यक्ति

iii- न्यूटन ने किस सिद्धांत का आविष्कार किया?

(क) गति के सिद्धांत का
(ख) गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का

(ग) दाब के सिद्धांत का

(घ) इनमें से कोई नहीं

iv- आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन की तरह संस्कृत है? यह कथन ...?

(क) असत्य है

(ख) सत्य है

(ग) दोनों है

(घ) इनमें से कोई नहीं

v- 'सभ्यता और संस्कृति' पाठ के लेखक हैं?

(क) न्यूटन

(ख) भदंत आनंद कौसल्यायन

(ग) यतींद्र मिश्र

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- i- (घ) जो व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है ii- (ग) सभ्य व्यक्ति iii- (ख) गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का iv- (क) असत्य है v- (ख) भदंत आनंद कौसल्यायन

2- ''भौतिक प्रेरणा, ज्ञानेप्सा''-क्या ये दो ही मानव संस्कृति के माता-पिता हैं? दूसरे के मुँह में कौर डालने के लिए जो अपने मुँह का कौर छोड़ देता है, उसको यह बात क्यों और कैसे सूझती है? रोगी बच्चे को सारी रात गोद में लिए जो माता बैठी रहती है, वह आखिर ऐसा क्यों करती है? सुनते हैं कि रूस का भाग्यविधाता लेनिन अपनी डैस्क में रखे हुए डबल रोटी के सूखे टुकड़े स्वयं न खाकर दूसरों को खिला दिया करता था। वह आखिर ऐसा क्यों करता था? संसार के मजदूरों को सुखी देखने का स्वप्न देखते हुए कार्ल मार्क्स ने अपना सारा जीवन दुख में बिता दिया। और इन सबसे बढ़कर आज नहीं, आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्दार्थ ने अपना घर केवल इसलिए त्याग दिया कि किसी तरह तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता सुख से रह सके।

i- ''भौतिक प्रेरणा, ज्ञानेप्सा''-क्या ये दो ही मानव संस्कृति के माता-पिता हैं?

(क) हाँ

(ख) नहीं

(ग) कह नहीं सकते

(घ) इनमें से कोई नहीं

ii- दूसरे के मुँह में कौर डालने के लिए जो अपने मुँह का कौर छोड़ देता है, - उसे कहेंगे

(क) परमार्थी

(ख) स्वार्थी

(ग) विनम्र

(घ) असभ्य

iii- रूस का भाग्यविधाता किसे कहा गया है?

(क) कार्ल मार्क्स को

(ख) न्यूटन को

(ग) लेनिन को

(घ) इनमें से कोई नहीं

iv- संसार के मजदूरों को सुखी देखने का स्वप्न किसने देखा?

(क) कार्ल मार्क्स ने

(ख) लेनिन ने

(ग) न्यूटन ने

(घ) इनमें से कोई नहीं

v- आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्दार्थ ने अपना घर क्यों छोड़ दिया था?

(क) ताकि उन्हें जीवन दु:ख मिल सके।

(ख) ताकि मनुष्य का लालच घट सके।

(ग) ताकि लोगों की दरिद्रता मिट सके।

(घ) ताकि तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता सुख से रह सके।

उत्तर- i- (ख) नहीं ii- (क) परमार्थी iii- (ग) लेनिन को iv- (क) कार्ल मार्क्स ने v- (घ) ताकि तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता सुख से रह सके।

पद्य भाग

पद - सूरदास

कवि परिचय- भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा के कृष्णाश्रयी भक्ति शाखा के प्रतिनिधि एवं भक्त कवि सूरदास का जन्म सन् 1478 ई. में मथुरा के निकट रुनकता या रेणुका क्षेत्र में हुआ था। महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य सूरदास अष्ट छाप के कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। वे मथुरा और वृंदावन के बीच गऊघाट पर रहते थे और श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन-कीर्तन किया करते थे। सन् 1583 ई. में परसौली में उनका निधन हो गया।

रचनाएँ- सूरदास की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं- सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर सारावली। इनमें सूरसागर ही सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ।

काव्यगत विशेषताएँ- खेती और पशुपालन वाले भारतीय समाज का अंतरंग चित्र और मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों का मनोरम चित्रण उनकी रचनाओं में मिलता है। सूरदास 'वात्सल्य' और 'श्रृंगार' रस के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। कृष्ण और गोपियों का प्रेम सहज मानवीय प्रेम की प्रतिष्ठा करता है। उनके काव्य में ब्रजभाषा का निखरा हुआ रूप है जिसमें सदियों से चली आ रही लोकगीतों की मधुरता का रसास्वादन लिया जा सकता है।

पद

प्रतिपादय- यहाँ सूरसागर के भ्रमरगीत से चार पदों का संकलन किया गया है। मथुरा जाने के बाद श्रीकृष्ण ने उद्धव के जरिए गोपियों को अपने शीघ्र ही लौट आने का संदेश भेजा। मौका पाकर उद्धव ने गोपियों को निर्गुण ब्रह्म और योग का उपदेश देकर उनकी विरह वेदना को शांत करने का प्रयास किया किन्तु गोपियाँ नीरस ज्ञान मार्ग के बजाए प्रेम मार्ग को अपनाना उचित समझा। गोपियों को शुष्क ज्ञान पसंद नहीं आया। उसी समय एक भौंरा आ पहुँचा जिसे लक्ष्य करके गोपियों ने उद्धव और उनके ज्ञान पर तीक्ष्ण व्यंग्य बाण छोड़े। यहीं से 'भ्रमरगीत' का प्रारम्भ होता है।

सार- पहले पद में गोपियों ने उद्धव पर व्यंग्य करते हुए कहा कि आप बड़े भाग्यशाली हैं जो श्रीकृष्ण के साथ रहकर भी उनके प्रेम रूपी धागे से नहीं बंधे हैं अन्यथा हमारी ही तरह आपको भी विरह वेदना की अनुभूति होती। दूसरे पद में श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम की गहराई व्यक्त हुई है। गोपियाँ स्वीकार करती हैं कि उनके मन की अभिलाषाएँ मन में ही रह गईं। तीसरे पद में वे उद्धव की योग साधना को कड़वी ककड़ी की तरह बताकर उसे स्वीकार करने से मना कर देती हैं और अपने एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़ विश्वास प्रकट करती हैं। चौथे पद में गोपियाँ उद्धव को ताना मारती हैं और बताती हैं कि श्रीकृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है। गोपियाँ कहती हैं कि राजा का धर्म यही है कि प्रजा को सताया नहीं जाना चाहिए।

विशेष-

1. श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों के एकनिष्ठ प्रेम का मनोरम चित्रण हुआ है।
2. गोपियाँ योग और ज्ञान के बजाए प्रेम मार्ग को अपनाना चाहती हैं।

3. 'प्रीति-नदी' में रूपक तथा 'गुर चांटी ज्यौं पागी' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
4. ब्रजभाषा का सरल, सहज और भावानुकूल प्रयोग हुआ है।
5. संगीत के तत्वों से युक्त गेय पद शैली का सहज प्रयोग है।
6. कविता में बिम्बों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।
7. गोपियों और श्रीकृष्ण के प्रेम के विरह के कारण वियोग श्रृंगार रस है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न-i गोपियों ने उद्धव को भाग्यशाली क्यों कहा है?

(क) उद्धव श्रीकृष्ण के प्रेम में डूब गए हैं
(ख) उद्धव श्रीकृष्ण के साथ रहकर भी उनके प्रेम में नहीं डूबे
(ग) गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम डूब गयीं हैं
(घ) श्रीकृष्ण उद्धव के प्रेम में डूब गए हैं

प्रश्न-ii <u>प्रीति-नदी</u> में पाऊँ न बोरयौ- रेखांकित में कौन-सा अलंकार है?

(क) रूपक
(ख) अनुप्रास
(ग) यमक
(घ) उपमा

प्रश्न-iii 'बिरहिनि बिरह दही'- विरहणी का प्रयोग किसके लिए हुआ है?

(क) श्रीकृष्ण के लिए
(ख) उद्धव के लिए
(ग) मथुरा के लिए
(घ) गोपियों के लिए

प्रश्न-iv उद्धव गोपियों के लिए कौन-सा उपदेश लेकर आए?

(क) प्रेम और भक्ति
(ख) योग और ज्ञान
(ग) वियोग और भक्ति
(घ) संयोग और वियोग

प्रश्न-v गोपियों के अनुसार राजा का क्या धर्म है?

(क) प्रजा को परेशान करना
(ख) प्रजा का ध्यान न रखना
(ग) प्रजा को न सताए
(घ) प्रजा से कोई मतलब न रखे

उत्तर- i- (ख) उद्धव श्रीकृष्ण के साथ रहकर भी उनके प्रेम में नहीं डूबे ii- (क) रूपक iii- (घ) गोपियों के लिए iv- (ख) योग और ज्ञान v- (ग) प्रजा को न सताए

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद - तुलसीदास

कवि परिचय - भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा के रामाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि एवं भक्त कवि तुलसीदास दास का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में सन् 1532 ई. में हुआ था। कुछ विद्वान इनका जन्मस्थान सोरों जिला-एटा में भी मानते हैं। तुलसीदास का बचपन बहुत ही संघर्षमय था। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही माता-पिता से

विछोह हो गया। गुरुकृपा से उन्हें रामभक्ति का मार्ग मिला जिस पर वे आजीवन चलते रहे। वे मानवीय मूल्यों की आस्था के कवि थे। सन् 1623 ई. में काशी में इनका देहावसान हो गया।

रचनाएँ- रामभक्ति परंपरा में तुलसीदास अतुलनीय हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्ण गीतावली, विनयपत्रिका, रामलला नहछू। **काव्यगत विशेषताएँ**- रामचरितमानस तुलसीदास की अनुपम कृति। इसमें उनकी श्रीराम के प्रति अनन्य भक्ति व्यक्त हुई है। उनके प्रभु राम मानवीय मर्यादाओं और आदर्शों के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से उन्होंने शील, विनय, त्याग, स्नेह, भक्ति एवं नीति जैसे उदात्त आदर्शों की प्रतिष्ठा की है। अवधी और ब्रजभाषा दोनों पर उनका समान अधिकार है। उन्होंने **'रामचरितमानस'** की रचना अवधी में और **'कवितावली'** तथा **'विनयपत्रिका'** की रचना ब्रजभाषा में की। उस समय के प्रचलित सभी काव्यरूपों को उनकी रचनाओं में देखा जा सकता है। **'रामचरितमानस'** का मुख्य छंद **चौपाई** है किन्तु बीच-बीच में दोहा, सोरठा, हरिगीतिका तथा अन्य छंद भी पिरोए गए हैं। **'विनयपत्रिका'** की रचना गेय पदों में हुई है जबकि **'कवितावली'** में कवित्त और सवैया छंद की छटा देखी जा सकती है। उनकी रचनाओं में प्रबंध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों का उत्कृष्ट रूप दिखाई पड़ता है।

प्रतिपादय- 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' प्रसंग 'रामचरितमानस' के बालकाण्ड से लिया गया है। सीता स्वयंवर में गुरु विश्वामित्र की आज्ञा पाकर श्रीराम ने शिवजी के धनुष को तोड़ दिया। जब यह समाचार मुनि परशुराम को मिला तो वे कुपित होकर स्वयंवर सभा में आते हैं और शिवजी के खंडित धनुष को देखकर आपे से बाहर हो जाते हैं। श्रीराम के विनय करने तथा मुनि विश्वामित्र के समझाने पर उनका गुस्सा शांत होता है और फिर वे वहाँ से चले जाते हैं।

सार- इस प्रसंग में राम-लक्ष्मण और मुनि परशुराम के बीच जो संवाद हुआ है उसका यहाँ मनोरम वर्णन किया गया है। परशुराम ने कहा कि शिवजी के इस धनुष को किसने तोड़ा तब श्रीराम ने जवाब दिया कि आपका ही कोई एक सेवक होगा। फिर उन्होंने कहा कि सेवक का कार्य सेवा करना होता है न की लड़ाई करना। वह अभी भरी सभा से अलग हो जाए नहीं तो सभी राजा मारे जाएँगे। परशुराम के क्रोध भरे वचनों को सुनकर लक्ष्मण ने उन पर खूब व्यंग्य किया जिससे वे दोनों राजकुमारों सहित सम्पूर्ण क्षत्रिय समाज को नष्ट कर देने के लिए उद्धत होते हैं। वीर रस, रौद्र रस और हास्य रस से पगी और व्यंग्योक्तियों से सजी इन काव्य-पंक्तियों को पढ़कर लोग आनंदमग्न हो उठते हैं।

विशेष–

1. काव्य-पंक्तियों में राम-लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का मनोरम चित्रण किया गया है।
2. श्रीराम की विनयशीलता और सहजता की सरस अभिव्यक्ति हुई है।
3. मुनि के क्रोध में रौद्र रस और वीर रस की छटा दिखाई पड़ती है।
4. 'बालकु बोलि बधौं' में अनुप्रास तथा 'सहसबाहु सम सो रिपु मोरा' में उपमा अलंकार है।
5. चौपाई और दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।
6. काव्य-पंक्तियों में व्यंजकता तथा सरसता विद्यमान है।
7. अवधी भाषा का भावानुकूल प्रयोग हुआ है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न-i 'रामचरितमानस' की रचना किस भाषा में हुई है?

(क) खड़ीबोली
(ख) ब्रजभाषा
(ग) बुन्देली
(घ) अवधी

प्रश्न-ii भृगुकुलकेतु किन्हें कहा गया है?

(क) श्रीराम को

(ख) परशुराम को

(ग) विश्वामित्र को

(घ) लक्ष्मण को

प्रश्न-iii 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' का प्रसंग 'रामचरितमानस' के किस काण्ड से लिया गया है?

(क) लंकाकाण्ड

(ख) बालकाण्ड

(ग) अयोध्याकाण्ड

(घ) उत्तरकाण्ड

प्रश्न-iv बढ़त देखि <u>जल सम बचन</u> बोले रघुकुलभानु -रेखांकित में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा

(ख) रूपक

(ग) अनुप्रास

(घ) यमक

प्रश्न-v 'रामचरितमानस' में प्रयुक्त मुख्य छंद कौन-सा है?

(क) दोहा

(ख) कवित्त

(ग) सोरठा

(घ) चौपाई

उत्तर- i- (घ) अवधी ii- (ख) परशुराम को iii- (ख) बालकाण्ड iv- (क) उपमा v- (घ) चौपाई

आत्मकथ्य - जयशंकर प्रसाद

कवि परिचय- जयशंकर प्रसाद का जन्म सन 1889 ईस्वी में वाराणसी में हुआ। काशी के प्रसिद्ध क्वींस कॉलेज में वे पढ़ने गए परंतु स्थितियां अनुकूल न होने के कारण आठवीं से आगे नहीं पढ़ पाए। बाद में घर पर ही संस्कृत, हिंदी, पारसी का अध्ययन किया। छायावादी काव्य प्रवृत्ति के प्रमुख कवियों में से एक जयशंकर प्रसाद का सन 1937 ईस्वी में निधन हो गया।

कृतियाँ- उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं- चित्राधार, कानन-कुसुम, झरना, आँसू, लहर और कामायनी। आधुनिक हिंदी की श्रेष्ठतम काव्य-कृति मानी जाने वाली कामायनी पर उन्हें मंगलाप्रसाद पारितोषिक दिया गया। वे कवि के साथ-साथ सफल गद्यकार भी थे। अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त, स्कंदगुप्त और ध्रुवस्वामिनी उनके नाटक हैं तो कंकाल, तितली और इरावती उपन्यास। आकाशदीप, आँधी और इंद्रजाल उनके कहानी संग्रह हैं।

काव्यगत विशेषताएँ- प्रसाद का साहित्य जीवन की कोमलता, माधुर्य, शक्ति और ओज का साहित्य माना जाता है। छायावादी कविता कि अतिशय काल्पनिकता, सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण, प्रकृति-प्रेम, देश-प्रेम और शैली की लाक्षणिकता उनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इतिहास और दर्शन में उनकी गहरी रुचि थी जो उनके साहित्य में स्पष्ट दिखाई देती है।

प्रतिपाद्य- प्रेमचंद के संपादन में 'हंस' पत्रिका का एक आत्मकथा विशेषांक निकलना तय हुआ था। प्रसाद जी के मित्रों ने आग्रह किया कि वे भी आत्मकथा लिखें। प्रसाद जी इससे सहमत न थे। इसी असहमति के तर्क से पैदा हुई कविता है- आत्मकथ्य। यह कविता पहली बार 1932 में 'हंस' के 'आत्मकथा विशेषांक' में प्रकाशित हुई थी। छायावादी शैली में लिखी गई इस कविता में जयशंकर प्रसाद ने जीवन के यथार्थ एवं अभाव पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति की है। छायावादी सूक्ष्मता के अनुरूप ही अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करने के लिए जयशंकर प्रसाद ने ललित, सुंदर एवं

नवीन शब्दों और बिम्बों का प्रयोग किया है। इन्हीं शब्दों एवं बिम्बों के सहारे उन्होंने बताया है कि उनके जीवन की कथा एक सामान्य व्यक्ति के जीवन की कथा है। इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे महान और रोचक मान कर लोग वाह-वाह करेंगे। कुल मिलाकर इस कविता में एक तरफ कवि द्वारा यथार्थ की स्वीकृति है तो दूसरी तरफ एक महान कवि की विनम्रता भी।

सार- 'आत्मकथ्य' कविता में प्रसाद जी ने आत्मकथा लेखन के विषय में अपनी मनोभावनाएँ व्यक्त की हैं। प्रसाद जी के मित्रों और प्रशंसकों ने उनसे आत्मकथा लिखने का अनुरोध किया था। इस अनुरोध के उत्तर में प्रसाद जी ने इस कविता की रचना की। यह रचना 'हंस' पत्रिका के आत्मकथा विशेषांक में प्रकाशित हुई थी। कवि के अनुसार आत्मकथा लिखने की कोई उपयोगिता नहीं है। जीवन केवल एक व्यथा-कथा है। फूल से फूल पर भटकते भौंरे की गुंजार क्या है? कभी तृप्त न होने वाली प्यास की करुण कहानी है। डालों से मुरझाकर गिरने वाली पत्तियाँ जीवन की नश्वरता की कथा सुन रही है। एक अनंत आकाश के तले धरती पर असंख्य जीवन पल रहे है। इन सभी की अपनी-अपनी आत्मकथाएँ है। इन आत्मकथाओं को सार्वजनिक करने से क्या मिलता है? हम इन कथाओं को सुनाकर अपने ही ऊपर व्यंग्य करते हैं। स्वयं को उपहास का पात्र बनाते हैं।

यह सब जानते हुए भी मैं अपनी आत्मकथा कैसे लिखूँ ? मेरा जीवन दुर्बलताओं एवं असफलताओं की कहानी है। यह एक खाली गगरी के समान है। उसमें ऐसा कुछ भी उल्लेखनीय नहीं है जिसे मैं मित्रों और प्रशंसकों से साझा कर सकूँ। कहीं ऐसा न हो कि मेरी आत्मकथा सामने आने पर मेरे मित्र मेरी दयनीय दशा के लिए स्वयं को दोषी समझने लगें। अपनी भूलों और अपने साथ हुए धोखों की कहानी सुनाकर मैं अपनी सरलता की हँसी करना नहीं चाहता।

कवि कहता है कि वह अपने जीवन के मधुर क्षणों की कहानी नहीं सुनना चाहता। उसके सुख के सपने कभी साकार नहीं हुए। सुख उसकी बाँहों में आते-आते दूर हो गया। आज वह उन मधुर स्मृतियों के सहारे ही अपने जीवन को बिता रहा है। मित्र लोग आत्मकथा लिखवाकर उसकी कटु स्मृतियों को क्यों उधेड़ना चाहते हैं?अपनी कथा सुनाने से तो यही अच्छा हैं कि वह औरों के जीवन की कथाएँ मौन होकर सुनता रहे। उसकी भोली आत्मकथा सुनकर कोई क्या करेगा। वह नहीं चाहता है कि आत्मकथा लिखकर वह अपनी भूली हुई पीड़ाओं को फिर से जगाएँ।

विशेष:

1) कवि ने जीवन की नश्वरता का यथार्थ उल्लेख किया है।
2) किसी व्यक्ति के जीवन की कमजोरियों एवं असफलताओं को दूसरे लोग हँसी-मजाक बना देते हैं।
3) कवि ने व्यक्तिगत जीवन के मधुर पलों की छुअन का मार्मिक चित्रण किया है।
4) अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति, रूपक अलंकार की छटा विद्यमान है।
5) छायावादी काव्य-शैली का मनोरम प्रयोग हुआ है।
6) तत्सम शब्दावली से युक्त सहज खड़ीबोली का प्रयोग हुआ है।
7) काव्य-पंक्तियों में माधुर्य गुण विद्यमान है।
8) प्रेम की मधुर भावनाओं की अभिव्यक्ति के कारण वियोग श्रृंगार रस दर्शनीय है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न-i कवि ने मुरझाकर गिरने वाली पत्तियों के माध्यम से क्या संकेत किया है?

(क) जीवन अमर है
(ख) जीवन क्षणभंगुर है
(ग) पेड़ से पत्तियाँ गिर जाती हैं
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-ii कवि अपने जीवन की स्मृतियों को क्यों नहीं बताना चाहता है?

(क) कवि निराशा में डूबा हुआ है इसलिए

(ख) उसके जीवन की बहुत सी यादें हैं
(ग) उसका जीवन खाली घड़ा है
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-iii कवि के लिए मधुर चाँदनी रातों की क्या विशेषता थी?
(क) रात में चाँदनी चारों ओर फैली हुई थी
(ख) कवि को अपने जीवन से प्रेम नहीं था
(ग) कवि को अपने मित्रों से बहुत प्रेम करता था
(घ) कवि ने अपनी प्रेमिका के साथ चाँदनी रातों में हँस-हँसकर बातें की थी

प्रश्न-iv अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया - इस पंक्ति में किसका वर्णन किया गया है?
(क) कवि ने अपनी प्रेमिका की सुंदरता का वर्णन किया है
(ख) छाया की सुंदरता का चित्रण हुआ है
(ग) मित्रों की प्रसन्नता का वर्णन किया गया है
(घ) दुनिया के लोगों की चालाकी का वर्णन हुआ है

प्रश्न-v आत्मकथ्य कविता में किस रस की प्रमुखता है?
(क) वीर रस
(ख) हास्य रस
(ग) शांत रस
(घ) श्रृंगार रस

उत्तर- i- (ख) जीवन क्षणभंगुर है ii-(ग) उसका जीवन खाली घड़ा है iii- (घ) कवि ने अपनी प्रेमिका के साथ चाँदनी रातों में हँस-हँसकर बातें की थी iv- (क) कवि ने अपनी प्रेमिका की सुंदरता का वर्णन किया है v- (घ) श्रृंगार रस

उत्साह, अट नहीं रही है - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

जीवन परिचय- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म बंगाल के महिषादल में सन 1899 में हुआ। वह मूलत: गढ़ाकोला (जिला उन्नाव) उत्तर प्रदेश के निवासी थे। निराला की औपचारिक शिक्षा नौवीं तक महिषादल में ही हुई। उन्होंने स्वाध्याय से संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी का ज्ञान अर्जित किया। वह संगीत और दर्शनशास्त्र के भी गहरे अध्येता थे। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द की विचारधारा ने उन पर विशेष प्रभाव डाला। निराला का पारिवारिक जीवन दुखों और संघर्षों से भरा था। आत्मीय जनों के असामयिक निधन ने उन्हें भीतर तक तोड़ दिया। साहित्यिक मोर्चे पर भी उन्होंने अनवरत संघर्ष किया। सन 1961 में उनका देहांत हो गया।

प्रमुख काव्य रचनाएँ- अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता और नए पत्ते। उपन्यास, कहानी, आलोचना और निबंध लेखन में भी उनकी ख्याति अविस्मरणीय है। निराला रत्नावली के आठ खंडों में उनका संपूर्ण साहित्य प्रकाशित है।

काव्यगत विशेषताएँ- निराला विस्तृत सरोकारों के कवि हैं। दार्शनिकता, विद्रोह, क्रांति, प्रेम की तरलता और प्रकृति का विराट तथा उदात्त चित्र उनकी रचनाओं में उपस्थित है। उनके विद्रोही स्वभाव ने कविता के भाव-जगत और शिल्प-जगत में नए प्रयोगों को संभव किया। छायावादी रचनाकारों में उन्होंने सबसे पहले मुक्त छंद का प्रयोग किया। शोषित, उपेक्षित, पीड़ित और प्रताड़ित जन के प्रति उनकी कविता में जहाँ गहरी सहानुभूति का भाव मिलता है, वहीं शोषक वर्ग और सत्ता के प्रति प्रचंड प्रतिकार का भाव भी।

प्रतिपाद्य- 'उत्साह' कविता एक आहवान गीत है जो बादल को संबोधित है। बादल निराला का प्रिय विषय है। कविता में बादल एक तरफ पीड़ित-प्यासे जन की आकांक्षा को पूरा करने वाला है, तो दूसरी तरफ वही बादल नई कल्पना और नए अंकुर के लिए विध्वंस, विप्लव और क्रांति चेतना को संभव करने वाला भी। कवि जीवन को व्यापक और समग्र दृष्टि से देखता है। कविता में ललित कल्पना और क्रांति चेतना दोनों हैं। सामाजिक क्रांति या बदलाव में साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। निराला इसे 'नवजीवन' और 'नूतन कविता' के संदर्भों में देखते हैं।

सारांश- इस कविता में कवि बादल से घोर गर्जना के साथ भयंकर बारिश करने की कामना करता है। बादल बच्चों के काले घुंघराले बालों की तरह हैं। कवि बादल से धरती की प्यास बुझाने और सभी को सुखी बनाने का आग्रह करता है। कवि बादल में नवजीवन देने वाली बारिश और तहस-नहस कर देने वाला वज्रपात दोनों रूप देखता है। वह अनुरोध करता है कि बादल कठोर वज्रशक्ति को अपने भीतर छुपा कर सभी में नई स्फूर्ति और नया जीवन डालने के लिए मूसलाधार बारिश करे। आकाश में उमड़ते-घुमड़ते बादल को देखकर कवि को लगता है कि समस्त धरती भीषण गर्मी से परेशान है इसलिए अनजान दिशाओं आकर काले उसे शीतलता प्रदान करना चाहते हैं।

प्रतिपाद्य- 'अट नहीं रही है' कविता फागुन की मादकता को प्रकट करती है। कवि फागुन की सर्वव्यापक सुंदरता को अनेक संदर्भों में देखता है। जब मन प्रसन्न हो तो हर तरफ फागुन का ही सौंदर्य और उल्लास दिखाई पड़ता है। सुंदर शब्दों के चयन एवं लय ने कविता को भी फागुन की तरह सुंदर एवं ललित बना दिया है।

सारांश- इस कविता में कवि ने फागुन महीने का मनोरम चित्र प्रस्तुत किया है। फरवरी-मार्च के महीने में वसंत ऋतु का आगमन होता है। पेड़ से पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और उन पर नए पत्ते भर जाते हैं। चारों तरफ रंग-बिरंगे फूलों की बहार छा जाती है। उनकी सुगंध से सारा वातावरण महक उठता है। इस अनोखी प्राकृतिक सुंदरता से कवि अपनी आंखें हटा नहीं पा रहा है। इस मौसम में बाग-बगीचों और वनों के सभी पेड़-पौधे नए पत्तों से लद गए हैं। कहीं लाल रंग से, तो कहीं हरे रंग से पेड़ की डालियाँ अनगिनत फूलों से भर गई हैं जिससे कवि को ऐसा लगता है जैसे प्रकृति देवी ने अपने गले में रंग-बिरंगे और सुगंधित फूलों की माला पहन रखी हो। इस सर्वव्यापी सुंदरता का कवि को कहीं ओर-छोर नजर नहीं आ रहा है। इसलिए कवि कहता है कि फागुन की सुंदरता अट नहीं रही है।

विशेष:

1) उत्साह कविता में कवि ने बादलों का मानवीकरण किया है।
2) बादल का नवजीवन देने वाले के रूप में हृदयस्पर्शी चित्रण हुआ है।
3) ध्वन्यात्मक बिम्ब की छटा विद्यमान है।
4) अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, रूपक अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
5) ओज गुण और वीर भाव का प्रवाह दिखाई पड़ता है।
6) तत्सम शब्दावली से युक्त सहज खड़ीबोली का प्रयोग हुआ है।
7) दूसरी कविता में प्रकृति के मनोहारी रूप को मनोरम ढंग से दर्शाया गया है।
8) इसमें माधुर्य गुण विद्यमान है।
9) प्रकृति के अनोखे चित्रण के कारण यहाँ अद्भुत रस विद्यमान है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न-i 'उत्साह' कविता में किसका आहवान किया गया है?

(क) किसानों का
(ख) धरती का
(ग) हवा का
(घ) बादल का

प्रश्न-ii कवि ने बादल को नवजीवन देने वाला क्यों कहा है?

(क) बादल वर्षा करके धरती को तृप्त करते हैं
(ख) वर्षा ऋतु के बाद शीत ऋतु आती है
(ग) बच्चों को पानी में खेलने के लिए मिलता है
(घ) बारिश के समय तेज हवा चलती है

प्रश्न-iii अट नहीं रही है कविता में किस ऋतु का वर्णन किया गया है?

(क) वर्षा ऋतु का

(ख) शीत ऋतु का

(ग) बसंत ऋतु का

(घ) ग्रीष्म ऋतु का

प्रश्न-iv 'बाल कल्पना के-से पाले'- इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास अलंकार

(ख) उपमा अलंकार

(ग) रूपक अलंकार

(घ) अतिशयोक्ति अलंकार

प्रश्न-v 'अट नहीं रही है' कविता की 'पाट पाट शोभा श्री' पंक्ति में - पाट-पाट का क्या अर्थ है?

(क) जगह-जगह

(ख) घर-घर

(ग) द्वार-द्वार

(घ) बार-बार

उत्तर- i- (घ) बादल का ii- (क) बादल वर्षा करके धरती को तृप्त करते हैं iii- (ग) बसंत ऋतु का iv- (ख) उपमा अलंकार v- (क) जगह-जगह

यह दंतुरित मुस्कान, फ़सल - नागार्जुन

जीवन परिचय- नागार्जुन का जन्म बिहार के दरभंगा जिले के सतलखा गाँव में सन 1911 में हुआ। उनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र था। प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत पाठशाला में हुई फिर अध्ययन के लिए बनारस और कोलकाता गए। सन 1936 में वे श्रीलंका गए और वहीं बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए। दो साल प्रवास के बाद स्वदेश लौट आए। घुमक्कड़ी और अक्खड़ स्वभाव के धनी नागार्जुन ने अनेक बार संपूर्ण भारत की यात्रा की। सन 1998 में उनका देहांत हो गया।

कृतियाँ- नागार्जुन की प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं- युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, हजार-हजार बाहों वाली, तुमने कहा था, पुरानी जूतियों का कोरस, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, मैं मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा। नागार्जुन ने कविता के साथ-साथ उपन्यास और अन्य गद्य विधाओं में भी लेखन किया है। उनका संपूर्ण कृतित्व नागार्जुन प्रश्नावली के सात खंडों में प्रकाशित है। राजनैतिक सक्रियता के कारण उन्हें अनेक बार जेल जाना पड़ा। हिंदी और मैथिली में समान रूप से लेखन करने वाले नागार्जुन ने बांग्ला और संस्कृत में भी कविताएँ लिखीं। मातृभाषा मैथिली में वे 'यात्री' नाम से प्रतिष्ठित हैं।

साहित्यिक योगदान के लिए उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिनमें प्रमुख हैं- हिंदी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, उत्तर प्रदेश का भारत भारती पुरस्कार एवं बिहार का राजेंद्र प्रसाद पुरस्कार। मैथिली भाषा में कविता के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया।

काव्यगत विशेषताएँ- लोक जीवन से गहरा सरोकार रखने वाले नागार्जुन भ्रष्टाचार, राजनीतिक स्वार्थ और समाज की पतनशील स्थितियों प्रति अपने साहित्य में विशेष सजग रहे। वे व्यंग्य में माहिर हैं, इसलिए उन्हें आधुनिक कबीर भी कहा जाता है। छायावादोत्तर दौर के वे ऐसे अकेले कवि हैं, जिनकी कविता गाँव की चौपालों और साहित्यिक दुनिया में समान रूप से लोकप्रिय रही। वे वास्तविक अर्थों में जनकवि हैं। सामयिक बोध से गहराई से जुड़े नागार्जुन की आंदोलनधर्मी कविताओं को व्यापक लोकप्रियता मिली। नागार्जुन ने छंदों में काव्य रचना की और मुक्त छंद में भी।

प्रतिपाद्य- 'यह दंतुरित मुस्कान' कविता में छोटे बच्चे की मनोहारी मुस्कान देखकर कवि के मन में जो भाव उमड़ते हैं उन्हें कविता में अनेक बिम्बों के माध्यम से प्रकट किया गया है। कवि का मानना है कि इस सुंदरता में ही जीवन का संदेश है। इस सुंदरता की व्याप्ति ऐसी है कि कठोर से कठोर मन भी पिघल जाए। इस दंतुरित मुस्कान की महत्ता तब और बढ़ जाती है जब उसके साथ नजरों का बाँकपन भी जुड़ जाता है।

सारांश- इस कविता में कवि ने छोटे बच्चे की अनुपम मुस्कान का बहुत ही मनोहारी वर्णन किया है। धूल से सने बच्चे के शरीर की शोभा झोपड़ी में खिले हुए कमल के समान है। कवि बताता है कि उस छवि को देखकर उसका कठोर हृदय भी पिघल गया। अगर कवि पहली बार अपरिचित-सा होकर बच्चे को छूता है तो वह उसे अनुचित मानता है। अपरिचित व्यक्ति से बच्चा असहज हो उठता है। कवि माँ के माध्यम से ही बच्चे की दंतुरित मुस्कान देख पाया, इसलिए वह बच्चे और उसकी माँ दोनों को धन्य मानता है। प्रवास में रहने के कारण कवि का संपर्क बच्चे से नहीं हो पाया। माँ की उंगलियाँ ही उसे मधुपर्क कराती रही हैं इसी बीच जब कवि की आंखें बच्चे से मिलती हैं तो उस छवि से कवि प्रसन्नता से भर उठता है।

प्रतिपाद्य- फसल शब्द सुनते ही खेतों में लहलहाती फसल आँखों के सामने आ जाती है। परंतु फसल है क्या और उसे पैदा करने में किन-किन तत्वों का योगदान होता है, इसे बताया है नागार्जुन ने अपनी कविता फसल में। कविता यह भी रेखांकित करती है कि प्रकृति और मनुष्य के सहयोग से ही सृजन संभव है। बोलचाल की भाषा की गति और लय कविता को प्रभावशाली बनाती है। कहना न होगा कि यह कविता हमें उपभोक्ता-संस्कृति के दौर में कृषि- संस्कृति के निकट ले जाती है।

सारांश- 'फसल' कविता के माध्यम से कवि ने प्रकृति और मनुष्य के सहयोग से सृजनशीलता को स्पष्ट किया है। निर्माण में किसी एक तत्व की भूमिका नहीं होती बल्कि कई तत्वों का संयोजन होता है। फसल के तैयार होने में नदियों के पानी का योगदान होता है। उसमें एक दो नहीं बल्कि लाखों-करोड़ों लोगों का श्रम लगा होता है। इसी तरह कई प्रकार की मिट्टी की विशेषताएँ फ़सल में समायी होती हैं। सूरज की किरणों की ऊष्मा और मचलती हवा की फसल तैयार होने में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

विशेष:

1) 'यह दंतुरित मुस्कान' कविता में छोटे बच्चे की मुस्कान के सौन्दर्य का मनोहारी चित्रण हुआ है।
2) बिम्बों के प्रभावशाली प्रयोग से यह कविता जीवंत बन पड़ी है।
3) अपरिचित के साथ बच्चे के व्यवहार का वर्णन हृदयस्पर्शी है।
4) माँ के ममत्व और स्नेहपूर्ण देखभाल को बड़े ही सहज ढंग से दर्शाया गया है।
5) अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, रूपक अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
6) माधुर्य गुण और मृदुल भाव के उल्लेख से कविता में सरसता विद्यमान है।
7) तत्सम शब्दावली से युक्त सहज खड़ीबोली का प्रयोग हुआ है।
8) दूसरी कविता में प्रकृति और मनुष्य के योगदान से सृजन को मनोरम ढंग से दर्शाया गया है।
9) इस कविता में प्राकृतिक तत्वों एवं मानवीय श्रम को महत्त्व दिया गया है।
10) इसमें प्राकृतिक तत्वों को सुरक्षित रखने का संदेश भी निहित है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न-i बच्चे की दंतुरित मुस्कान का क्या असर होता है?

(क) कवि प्रसन्नता से भर उठता है
(ख) हर तरफ उदासी छा जाती है
(ग) बच्चा रोने लगता है
(घ) बच्चे की माँ रूठ जाती है

प्रश्न-ii तालाब का कमल झोपड़ी में खिला है- यह किसके लिए आया है?

(क) कवि के लिए
(ख) बच्चे की माँ के लिए
(ग) पाषाण व्यक्ति के लिए
(घ) छोटे बच्चे के लिए

प्रश्न-iii बच्चे को मधुपर्क किसने कराया?

(क) कवि ने

(ख) बच्चे की माँ ने

(ग) अपरिचित व्यक्ति ने

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-iv फ़सल के तैयार होने में किसका योगदान नहीं है?

(क) सूरज की किरणों का

(ख) मिट्टी के गुण-धर्म का

(ग) लोगों की मेहनत का

(घ) तूफान तीव्रता का

प्रश्न-v निम्नलिखित शब्द-समूहों में पाठ से संबंधित शब्द-समूह कौन-सा है?

(क) नदी, मेहनत, मिट्टी, सूरज, हवा

(ख) पत्थर, मेहनत, रेत, सूरज, हवा

(ग) किनारा, मेहनत, मिट्टी, घास, हवा

(घ) नदी, कचरा, मिट्टी, सूरज, अनाज

उत्तर- i- (क) कवि प्रसन्नता से भर उठता है ii- (घ) छोटे बच्चे के लिए iii- (ख) बच्चे की माँ ने iv- (घ) तूफान तीव्रता का v- (क) नदी, मेहनत, मिट्टी, सूरज, हवा

संगतकार - मंगलेश डबराल

जीवन परिचय- समकालीन हिन्दी कवियों में मंगलेश डबराल का नाम सबसे चर्चित है। इनका जन्म 16 मई 1948 को टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड के काफलपानी गाँव में हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा देहरादून में हुई। कविता के अतिरिक्त वे साहित्य, सिनेमा, संचार माध्यम और संस्कृति के विषयों पर भी लेखन करते हैं।

कृतियाँ- मंगलेश डबराल के पाँच काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते हैं, आवाज भी एक जगह है और नये युग में शत्रु।

इनकी रचनाओं के लिए इन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। जिनमें मुख्य रूप से साहित्य अकादमी पुरस्कार, कुमार विकल स्मृति पुरस्कार एवं दिल्ली हिन्दी अकादमी का साहित्यकार सम्मान है।

काव्यगत विशेषताएँ- मंगलेश जी की कविताओं में सामंती बोध एव पूँजीवादी छल-छद्म दोनों का प्रतिकार है। वे यह प्रतिकार किसी शोर-शराबे के साथ नहीं बल्कि प्रतिपक्ष में एक सुंदर सपना रचकर करते हैं। उनका सौंदर्यबोध सूक्ष्म है और भाषा पारदर्शी।

प्रतिपाद्य- प्रस्तुत कविता में कवि ने उन लोगों की चर्चा की है, जो कभी प्रसिद्धि का स्वाद नहीं चखते। फिर भी निरंतर कार्य करते चले जाते हैं। उन्हें कभी उनके काम के लिए तारीफ़ सुनने को नहीं मिलती। वे हमेशा अंधकार में जीते हैं, फिर भी वे बिना किसी स्वार्थ के निरंतर अपना काम करते चले जाते हैं। जिस तरह किसी गायक के साथ गाने वाले संगतकार होते हैं। सभी लोग गायक को जानते हैं, उसी की तारीफ़ करते हैं, परन्तु कोई यह नहीं जानता कि उसके साथ कितने संगतकार हैं। जो बिना किसी स्वार्थ के उसकी आवाज को दुर्बल नहीं होने देते।

जब-जब गायक की आवाज लड़खड़ाने लगती है, तब-तब संगतकार अपनी आवाज से गायक की आवाज को बाँध लेते हैं और उसे बिखरने नहीं देते। कभी-कभी तो उन्हें जान-बूझ ख़राब गाना पड़ता है कि कहीं उनकी आवाज़ गायक से अच्छी न हो जाए। वह ऐसा सिर्फ इसलिए करता है क्योंकि मुख्य गायक की प्रसिद्धि में

कोई कमी ना आए। उसे कोई नहीं पहचानता। न ही उसे मान-सम्मान मिलता है। फिर भी वह निरंतर बिना किसी स्वार्थ के अपना काम करता रहता है।

सारांश- कवि बताता है कि जब मुख्य गायक अपने चट्टान जैसे भारी स्वर में गाता है, तब संगतकार हमेशा उसका साथ देता है। संगतकार की आवाज बहुत ही कमजोर, कापंती हुई प्रतीत होती है। लेकिन फिर भी वह बहुत ही मधुर थी, जो मुख्य गायक की आवाज के साथ मिलकर उसकी प्रभावशीलता को और बढ़ा देती है। कवि को ऐसा लगता है कि यह संगतकार गायक का कोई बहुत ही करीब का रिश्तेदार या जान-पहचान वाला है, या फिर ये उसका कोई शिष्य है, जो कि उससे गायकी सीख रहा है। इस प्रकार, वह बिना किसी की नजर में आए निरंतर अपना कार्य करता रहता है।

जब कोई महान संगीतकार अपने गाने की लय में डूब जाता है, तो उसे गाने के सुर-ताल की भनक नहीं पड़ती और वह कभी-कभी अपने गाने में कहीं भटक-सा जाता है। आगे सुर कैसे पकड़ना है, यह उसे समझ नहीं आता और वह उलझ-सा जाता है। तब वह मुख्य गायक को कहीं भटकने नहीं देता और संगीत के सुर-ताल को वापस पकड़ने में उसकी सहायता करता है। इस दौरान ऐसा लगता है, मानो मुख्य गायक अपना कुछ सामान पीछे छोड़ते हुए चला जाता है और संगतकार उसे समेटते हुए उसके साथ आगे बढ़ता है।

विशेष-

1) कवि ने संगतकार की वास्तविक स्थिति का सहज चित्रण किया है।
2) मुख्य गायक की सफलता में संगतकार की भूमिका का उल्लेख किया गया है।
3) संगतकार के लिए सामाजिक रिश्तों के बंधन को बाखूबी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।
4) अनुप्रास, उपमा, उदाहरण,एवं पुनरुक्ति अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।
5) लयपूर्ण, अतुकांत, छंदमुक्त काव्य-शैली का मनोरम प्रयोग हुआ है।
6) तत्सम-तद्भव शब्दावली से युक्त सहज खड़ीबोली का प्रयोग हुआ है।
7) बिम्ब प्रधान काव्य-पंक्तियों में प्रसाद गुण विद्यमान है।
8) शांत रस रस से युक्त पंक्तियों में पूर्ण अर्थवत्ता दर्शनीय है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न-i मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर को कौन मधुरता देता है?

(क) संगतकार
(ख) कवि
(ग) ढोलकबाज
(घ) उस्ताद

प्रश्न-ii जब गायक जटिल तानों के जंगल में खो जाता है तब संगतकार क्या करता है?

(क) प्रसन्नता से भर उठता है
(ख) स्थायी (मुख्य तान) को संभाले रहता है
(ग) परेशान हो जाता है
(घ) चुपचाप देखता रहता है

प्रश्न-iii कविता में नौसिखिया किसे बताया गया है?

(क) संगतकार को
(ख) स्वयं को
(ग) मुख्य गायक को
(घ) बच्चे को

प्रश्न-iv संगतकार का स्वर गायक को ढाढस कब बँधाता है?

(क) **जब तार सप्तक में गायक का गला बैठने लगता है**

(ख) **जब गायक का उत्साह अस्त होने लगता है**

(ग) **जब गायक की आवाज से राख जैसा कुछ गिरता हुआ लगता है**

(घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न-v संगतकार द्वारा अपनी आवाज़ को दबाना उसकी विफलता है- यह कथन

(क) सत्य है

(ख) असत्य है

(ग) क और ख दोनों है

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- i- (क) संगतकार ii- (ख) स्थायी (मुख्य तान) को संभाले रहता है iii- (क) संगतकार को iv- (घ) उपर्युक्त सभी v- (ख) असत्य है

खंड- ख (वर्णनात्मक प्रश्न)

नेताजी का चश्मा - स्वयं प्रकाश

प्रश्न-1 पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- पानवाला स्वभाव से बहुत ही रसिया, हँसोड़, और मजाकिया था| वह शरीर से मोटा था। उसकी तोंद निकली रहती थी।उसके मुँह में पान ठुंसा रहता था| पान के कारण वह ठीक से बात तक नहीं कर पाता था और हँसने पर उसके लाल-काले दांत खिल उठते थे।वह बातें बनाने में उस्ताद था। उसकी बोली में हँसी और व्यंग्य का पुट बना रहता था।

प्रश्न-2 तब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात देखा नहीं था तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन-सा चित्र रहा होगा?

उत्तर- जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को अपनी आँखों से देखा नहीं था तब तक उनके मन में कैप्टन की मूर्ति कुछ और थी और उन्होंने सोचा था कि कैप्टन शरीर से हट्टा-कट्टा मजबूत होगा। वह ज़रूर सिर पर फौजी टोपी पहनता होगा। वह रौबदार, अनुशासित और दबंग मनुष्य होगा जिसकी वाणी में भारीपन होगा।

प्रश्न-3 चश्मेवाल मूर्ति का चश्मा बार-बार क्यों बदल देता था?

उत्तर- सुभाष चन्द्र बोस की मूर्ति पर चश्मा नहीं था। इसी कमी की पूर्ति कैप्टन किया करता था। वह चश्मे बेचा करता था। अगर कोई ग्राहक मूर्ति पर लगा फ्रेम माँग लेता तो कैप्टन वह फ्रेम उतारकर उसकी जगह अन्य फ्रेम लगा देता था। इस प्रकार मूर्ति पर चश्मे बदलते रहते थे।

प्रश्न-4 'नेताजी का चश्मा' पाठ के आधार पर सपष्ट कीजिए कि देश प्रेम प्रकट करने के लिए सैनिक होना ही आवश्यक नहीं है?

उत्तर- देश प्रेम प्रकट करने के लिए बडे-बड़े नारों की आवश्यकता नहीं है। न ही सैनिक होने की आवश्यकता है। देश प्रेम तो छोटी-छोटी बातों से प्रकट हो सकता है। यदि हमारे मन में देश के प्रति प्रेम है तो हम देश की हर छोटी से छोटी कमी को पूरा करने में अपना योगदान दे सकते हैं।' नेताजी का चश्मा' पाठ में कैप्टन ने मूर्ति पर चश्मा लगाकर इसी बात को उजागर किया है।

बालगोबिन भगत- रामवृक्ष बेनीपुरी

प्रश्न-1 बालगोबिन भगत की पुत्रबधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

उत्तर- बालगोबिन भगत की पुत्रबधू जानती थी कि भगत जी संसार में अकेले हैं और उनका एकमात्र पुत्र मर चुका है। वे बूढ़े है और भक्त हैं। उन्हें घर-बार और संसार में कोई रूचि नहीं है। अतः वे अपने खाने-पीने और स्वास्थ्य की ओर

ध्यान नहीं दे पाएँगे। इसलिए वह सेवा-भाव से उनके चरणों में अपने दिन बिताना चाहती थी। वह उनके लिए भोजन और दवा-पानी का प्रबंध करना चाहती थीं।

प्रश्न-2 बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

उत्तर- बालगोबिन भगत की दिनचर्या का प्रत्येक कार्य आश्चर्यजनक होता था। उस दिनचर्या में कहीं भी कोई चूक उनके द्वारा संभव नहीं थी। उनकी दिनचर्या लोगों को हैरान कर देती थी। लोग भगत जी की सरलता, सादगी और निस्वार्थता पर हैरान होते थे। भगत जी भूलकर भी किसी से कुछ नहीं लेते थे। वे बिना पूछे किसी भी चीज़ को छूते नहीं थे। यहाँ तक कि किसी दूसरे के खेत में शौच भी नहीं करते थे। लोग उनके इस व्यवहार से मुग्ध थे। लोग भगत जी पर तब और भी आश्चर्य करते थे जब वे भोरकाल में उठकर दो- तीन मील दूर स्थित नदी में स्नान कर आते थे। वापसी पर वे गाँव के बाहर स्थित पोखर के किनारे प्रभु-भक्ति के गीत टेरा करते थे। उनके इन प्रभावी गानों को सुनकर लोग सचमुच हैरान रह जाते थे।

प्रश्न-3 भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस प्रकार अभिव्यक्त की ?

उत्तर- अपने बेटे की मृत्यु पर भगत की भावनाएँ चली आ रही परंपरा से भिन्न थीं। उन्होंने अपनी भावनाएँ इस प्रकार अभिव्यक्त की -

1-मृतक पुत्र को आँगन में चटाई पर लिटाकर सफ़ेद कपड़े से ढँक दिया।

2-मृतक पुत्र के ऊपर फूल और तुलसी के पत्ते बिखेर दिए और सिरहाने एक दीपक जलाकर रख दिया।

3-उसके समीप आसन पर बैठकर हमेशा की तरह कबीर के पदों को गाने लगे और पतोहू को समझाने लगे, आत्मा का परमात्मा से मिलन हो गया है। विरहिणी अपने प्रेमी (ईश्वर) से जाकर मिल गई है।

4-पतोहू को समझाने लगे कि यह वक्त रोने का न होकर उत्सव मनाने का है।

प्रश्न-4 खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधू कहलाते थे?

उत्तर- बालगोबिन भगत खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ थे। उनका साफ़-सुथरा मकान था, फिर भी सर्वथा वे साधुता की श्रेणी में आते थे। वे कबीर को अपना साहब मानते थे। वे कबीर के पदों को ही गाते थे और उनके आदेशों पर चलते थे। वे सभी से खरा व्यवहार रखते थे। दो टूक बात कहने में न कोई संकोच करते थे, न किसी से झगड़ते थे। भगत जी सरलता, सादगी और निस्वार्थ जीवन जीते थे। वे अन्य किसी की चीज़ को बिना पूछे व्यवहार में नहीं लाते थे। वह अपनी प्रत्येक वस्तु पर साहब का अधिकार मानते थे। परिश्रम से पैदा की गई फ़सल को पहले साहब को अर्पित करते थे, उसके बाद स्वयं प्रयोग करते थे। इस प्रकार त्याग की प्रवृत्ति और साधुता का व्यवहार उन्हें साधु की श्रेणी में खड़ा कर देता है।

प्रश्न-5 पाठ के आधार पर बताइए कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है?

उत्तर- भगत कबीर को ही अपना साहब मानते थे। उनके ही निर्देशों का यथा-संभव पालन करते थे। कबीर के प्रति उनकी श्रद्धा निम्नलिखित रूपों में प्रकट हुई है-

1- भगत सिर पर सदैव कबीर-पंथी टोपी पहनते थे, जो कनपटी तक जाती थी।

2- कबीर के रचित पदों को ही गाते थे।

3- कबीर को ही अपना ईश्वर मानते थे।

4- वे उन्हीं के बताए आदर्शों पर चलते थे।

5- उनकी कमाई से जो कुछ पैदा होता था उसे पहले कबीर के दरबार में भेंट करते थे और वहाँ से जो प्रसाद के रूप में प्राप्त होता था उससे ही निर्वाह करते थे।

6- भगत पर कबीर-विचार-धारा इतना प्रभाव कि उन्हीं की तरह रुढियों का विरोध करते थे।

8- उनकी वेश-भूषा भी कबीर की तरह थी। कमर में एक मात्र लंगोटी, सिर पर टोपी और सर्दियों में काली कमली ओढ़ते थे।

लखनवी अंदाज़ – यशपाल

प्रश्न -1 नवाबों में एक विशेष प्रकार की नफासत और नज़ाकत देखने को मिलती है। 'लखनवी अंदाज़' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- नवाब सदा से एक विशेष प्रकार की नफासत और नज़ाकत के लिए मशहूर रहे हैं। लखनवी अंदाज़ पाठ में नवाबों की इसी नफासत और नजाकत का उदाहरण मिलता है। नवाब साहब खीरे खाने के लिए यत्नपूर्वक तैयारी करते हैं। खीरे काटकर उनपर नमक मिर्च लगाते हैं, किंतु बिना खाये ही केवल सूँघकर रसास्वादन कर खिड़की से बाहर फेंक देते हैं और फिर इस प्रकार लेट जाते हैं जैसे इस सारी प्रक्रिया में बहुत थक गये हों। ऐसी नफासत और नज़ाकत नवाबों में ही दिखाई देती हैं।

प्रश्न-2 आपके विचार में नवाब साहब ने नमक मिर्च लगे खीरे की फांकों को खिड़की से बाहर क्यो फेंक दिया?

उत्तर- नवाब साहब ने नमक मिर्च लगे खीरे की फांकों को खिड़की से बाहर इसलिये फेंक दिया होगा, क्योंकि वे लेखक के सामने खीरे जैसी सामान्य वस्तु का शौक करने में संकोच का अनुभव कर रहे होंगे। अपनी खानदानी रईसी और नवाबी का प्रदर्शन करने के लिये उन्होंने खीरे की फांकें फेंक दी।

प्रश्न-3 'लखनवी अंदाज़' पाठ में किस पर और क्या व्यंग्य किया गया है?

उत्तर- 'लखनवी अंदाज़' पाठ में नवाब साहब के माध्यम से समाज के उस सांमती वर्ग पर व्यंग्य किया गया है। जो वास्तविकता से बेखबर एक बनावटी जीवन शैली का आदी है। नवाब साहब द्वारा अकेले में खीरे खाने का प्रबंध करना और लेखक के आ जाने पर खीरों को सूँघ कर खिड़की से बाहर फेंककर अपनी नवाबी रईसी का गर्व अनुभव करना इसी दिखावे का प्रतीक है। समाज में आज भी ऐसी दिखावटी संस्कृति दिखाई देती है।

प्रश्न-4 बिना विचार घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है? लेखक के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- हम लेखक के इस विचार से बिल्कुल भी सहमत नहीं हैं कि बिना विचार घटना और पात्रों के भी कहानी लिखी जा सकती है। किसी भी कहानी के लिये उसकी आत्मा होता है– कथानक। यह कथानक अनिवार्य रूप से किसी विचार अथवा घटना पर आधारित होता है, जिसे पात्रों के माध्यम से ही व्यक्त किया जा सकता है। ये पात्र और घटनायें वास्तविक भी हो सकती हैं और काल्पनिक भी, किन्तु इनके अभाव में कहानी की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

एक कहानी यह भी - मन्नू भण्डारी

प्रश्न 1. लेखिका ने अपने पिता को किन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते देखा था?

उत्तर- लेखिका ने अपने पिता को नाम, सम्मान, प्रतिष्ठा, समाज के काम, विद्यार्थियों को अपने घर में रखकर पढ़ाने, खुशहाल दरियादिल, कोमल और संवेदनशील होने के गुणों के भग्नावशेषों को ढोते देखा था।

प्रश्न 2. वह कौन सी घटना थी जिसको सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

उत्तर- लेखिका जिस कॉलेज में पढ़ती थी, उस कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र पिताजी के नाम आया था। उसमें पिता जी से पूछा था कि उस पर अनुशासनात्मक कार्यवाही क्यों नहीं की जाए? पिताजी को इसलिए कॉलेज बुलाया था। पिताजी उस पत्र को पढ़कर आगबबूला हो गए। उन्हें लगा कि उनके पाँच बच्चों में से लेखिका ने उनके नाम पर दाग लगा दिया। वे लेखिका पर उबलते हुए कॉलेज पहुँचे। पिताजी के पीछे लेखिका पड़ोस में जाकर बैठ गई जिससे वह लौटने

पर पिता जी के क्रोध से बच सके परन्तु जब वे कॉलेज से लौटे तो बहुत प्रसन्न थे, चेहरा गर्व से चमक रहा था। वे घर आकर बोले कि उसका कॉलेज की लड़कियों पर बहुत रौब है। पूरा कॉलेज तीन लड़कियों के इशारे पर खाली हो जाता है। प्रिंसिपल को कॉलेज चलाना असंभव हो रहा है। पिताजी को उस पर गर्व होने लगा कि वह देश की पुकार के समय देश के साथ चल रही है, इसलिए इसे रोकना असंभव था। यह सब सुनकर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हुआ न ही अपने कानों पर।

प्रश्न 3. लेखिका का 'पड़ोस कल्चर' से क्या तात्पर्य है? आधुनिक जीवन में 'पड़ोस कल्चर' विच्छिन्न होने का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उत्तर- 'पड़ोस कल्चर' से लेखिका का तात्पर्य है- घर के आसपास रहने वालों की संस्कृति। आधुनिक जीवन में अत्यधिक व्यस्तता के कारण महानगरों के फ्लैट में रहने वालों की संस्कृति ने परम्परागत 'पड़ोस कल्चर' से बच्चों को अलग करके उन्हें अत्यधिक संकीर्ण, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

प्रश्न 4. माँ के धैर्य और सहनशक्ति को लेखिका ने धरती से भी ज्यादा क्यों बताया है?

उत्तर- लेखिका ने माँ के धैर्य और सहनशक्ति को लेखिका ने धरती से भी ज्यादा बताया है क्योंकि पृथ्वी की सहनशक्ति और धैर्य तब जवाब दे देते हैं जब वह भूकंप बाढ़ आदि के रूप में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। लेकिन लेखिका की माँ पिताजी की प्रत्येक ज़्यादती को चुपचाप सहन कर जाती है और बच्चों को प्रत्येक उचित-अनुचित फरमाइश और ज़िद को अपना कर्तव्य मानकर सहज भाव से स्वीकार कर लेती थी ।

प्रश्न 5. लेखिका ने यह क्यों कहा कि पिताजी कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे?

उत्तर- लेखिका के पिताजी में विशिष्ट बनने और बनाने की प्रबल लालसा थी, दूसरी ओर उनमें अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को लेकर भी सजगता थी। वे आधुनिकता और परंपरा दोनों का निर्वाह करना चाहते थे। एक ओर लेखिका के जलसे-जुलूसों में नारे लगवाने-लगाने, हड़ताल करवाने और भाषण देने के विरुद्ध थे तो दूसरी ओर लेखिका के इन्हीं कार्यों पर गर्व से फूल उठते थे इसलिए लेखिका ने कहा कि पिताजी एक साथ कितनी तरह के अंतर्विराधों में जीते थे।

प्रश्न 6. लेखिका मन्नू भंडारी की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- लेखिका स्वतंत्र विचारों की पक्षधर थी जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय योगदान दिया। वह साहसी और जुझारू व्यक्तित्व की घनी थी।

प्रश्न 7. लेखिका की साहित्य के प्रति रूचि जागृत होने का प्रमुख कारण क्या है?

उत्तर -लेखिका की अध्यापिका शीला अग्रवाल के प्रोत्साहन व मार्गदर्शन में उन्होंने हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों की कृतियों का अध्ययन किया। साथ ही वे अपनी अध्यापिका के साथ साहित्यिक चर्चाएँ भी करती रहीं।

प्रश्न 8. भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में लेखिका का क्या सक्रिय योगदान रहा?

उत्तर- लेखिका स्थानीय स्तर पर धरने, प्रदर्शन, हड़ताल कराती व अंग्रेजी सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करती व सार्वजनिक सभाओं में भाषण प्रस्तुत करती।

प्रश्न 9. लेखिका के पिता के क्रोधी और शक्की होने के क्या कारण थे?

उत्तर- लेखिका के पिता महत्वाकांक्षी थे, उनमें नवाबी आदतें थीं तथा वे सामाजिक स्तर पर प्रतिष्ठा पाने व शीर्ष पर रहना चाहते थे। इस क्षेत्र में असफल रहने व आर्थिक रूप से पिछड़ने पर वे क्रोधी हो गए। साथ ही अपनों ही के द्वारा विश्वासघात किए जाने पर वे शक्की हो गए।

प्रश्न 10. लेखिका के पिता उन्हें सामान्य लड़कियों से कैसे भिन्न बनाना चाहते थे?

उत्तर- लेखिका के पिता चाहते थे कि उनकी बेटी सामान्य लड़कियों की तरह गृहस्थी के कार्यों में अपनी प्रतिभा धूमिल न कर रचनात्मक, सृजनात्मक कार्यों एवं सामाजिक, राजनैतिक आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी करें तथा जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी छवि स्थापित करें।

नौबत खाने में इबादत - यतींद्र मिश्र

प्रश्न 1. शहनाई और डुमराँव एक दूसरे के लिए उपयोगी कैसे हैं?

उत्तर- शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग किया जाता है। रीड 'नरकट' नामक एक घास से बनाई जाती है जो मुख्य रूप से डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाती है। इसी के कारण शहनाई जैसा वाद्य बजता है।

प्रश्न 2. संगीत में सम का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि बिस्मिल्ला खां को सम की समझ कब और कैसे आ गई थी?

उत्तर- संगीत में सम का आशय है संगीत का वह स्थान जहाँ लय की समाप्ति और ताल का आरंभ होता है। बिस्मिल्ला खां में सम की समझ बचपन में ही आ गई थी। जब वह अपने मामा अलीबख्श खां को शहनाई बजाते हुए सम पर आते सुनता तो धड़ से पत्थर ज़मीन पर मारकर दाद देता था।

प्रश्न 3 काशी को संस्कृति की पाठशाला क्यों कहा गया है?

उत्तर- काशी संस्कृति की पाठशाला है यहाँ भारतीय शास्त्रों का ज्ञान है, कलाशिरोमणि यहाँ रहते हैं। यह हनुमान और विश्वनाथ की नगरी है यहाँ का इतिहास बहुत पुराना है। यहाँ प्रकांड ज्ञाता, धर्मगुरू और कलाप्रेमियों का निवास है।

प्रश्न 4. बिस्मिला खां दो कौमों में भाईचारे की प्रेरणा कैसे देते रहे?

उत्तर- बिस्मिल्ला खां जाति से मुसलमान थे और धर्म की दृष्टि से इस्लाम धर्म को भेजने वाले पाँच वक्त नमाज पढ़ने वाले सच्चे मुसलमान। मुहर्रम से उनका विशेष जुड़ाव था। वे बिना किसी भेदभाव के हिन्दू, मुसलमान दोनों के उत्सवों में मंगल ध्वनि बजाते थे। उनके मन में बालाजी के प्रति विशेष श्रद्धा थी। वे काशी से बाहर होने पर भी विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते और शहनाई बजाते थे। इस प्रकार वे दो कौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देते रहे।

प्रश्न 5. बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

उत्तर- हमें बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की सादगी, फकीरी स्वभाव, स्वाभिमान तथा कला की प्रति उनकी अनन्य भक्ति और समर्पण ने प्रभावित किया है। वे अपने जीवन में अपने मज़हब के प्रति अत्यध्कि समर्पित होते हुए भी किसी धर्म और जाति की संकीर्णताओं में नहीं बंधे। सच्चे मुसलमान होते हुए भी काशी के बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति श्रद्धा रखना उनके व्यक्तित्व की अन्यतम विशेषता है। भारतरत्न जैसी सम्मानित उपाधि मिलने के बाद भी उनके व्यक्तित्व में किसी प्रकार का अहंकार नहीं आने पाया। फटा हुआ तहमद बाँधकर ही वे सभी आगंतुकों से मिलते थे यह उनके व्यक्तित्व की सादगी और फकीराना स्वभाव का ही परिचायक है।

प्रश्न 6. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

उत्तर- डुमराँव गाँव की सोन नदी के किनारों पर पाई जाने वाली नरकट घास से शहनाई की रीड बनती है। शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ की जन्मस्थली डुमराँव गाँव ही है। 3. बिस्मिल्ला खाँ के परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव के ही निवासी थे। इन्हीं कारणों से शहनाई की दुनिया में डुमराँव को याद किया जाता है।

प्रश्न 7. सुषिर वाद्यों से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- सुषिर वाद्यों से अभिप्राय है- फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य। जैसे- शहनाई, बीन, बाँसुरी आदि।

प्रश्न 8. शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाध् क्यों दी गई होगी?

उत्तर- शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि देने के कारण निम्नलिखित रहे होंगे -

1. फूँककर बजाए जाने वाले वाद्यों में शहनाई सबसे अधिक सुरीली है।
2. मांगलिक विधि-विधानों में इसका उपयोग होता है।

प्रश्न 9. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक निम्नलिखित कारणों से कहा गया है -

1. अपना सानी न रखने के कारण।

2. मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करवाने वाले होने के कारण।

प्रश्न 10. काशी में हो रहे कौन-कौन से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

उत्तर- काशी में हो रहे निम्नलिखित परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे -

1. संगीत साहित्य और अदब की बहुत-सी परम्पराओं का लुप्त होना।
2. खान-पान संबंधी पुरानी चीजें न मिलना।
3. गायकों के मन में संगतियों के प्रति आदर न रहना।
4. गायक द्वारा रियाज़ करने में कमी।
5. सांप्रदायिक सद्भाव का कम होना।

सभ्यता और संस्कृति - भदंत आनंद कौसल्यायन

प्रश्न 1. संसार में किसी भी चीज को पकड़कर नहीं बैठा जा सकता क्यों?

उत्तर- प्रतिक्षण बदलते संसार में कोई भी वस्तु स्थायी अथवा अक्षुण्ण नहीं है। समय परिवर्तन के साथ-साथ उनमें बदलाव आता रहता है और आना भी चाहिए। इसलिए संसार में किसी भी चीज़ को पकड़कर नहीं बैठा जा सकता।

प्रश्न 2. आशय स्पष्ट कीजिए- जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता।

उत्तर- आशय मनुष्य ने अपनी योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के द्वारा अपने आत्म-विनाश के अनेक साधन जुटा लिए हैं और वह ऐसे अन्य साधनों को जुटाने के लिए दिन-रात लगा हुआ है। लेखक-प्रश्न करता है कि उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता? वास्तव में हमें यह उनकी असभ्यता ही समझनी चाहिए क्योंकि उनमें मानव कल्याण की अपेक्षा मानव के अहित की भावना है।

प्रश्न 3. लेखक के अनुसार सभ्यता और संस्कृति में क्या अन्तर है?

उत्तर- लेखक के अनुसार व्यक्ति की वह योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा संस्कृति है जिसके बल पर वह आविष्कार करता है जबकि उसके द्वारा अपने लिए तथा दूसरों के लिए किया गया आविष्कार सभ्यता है।

प्रश्न 4. किस संस्कृति को कूड़े-करकट का ढेर कहा गया है? और क्यों?

उत्तर- उस संस्कृति को कूड़े-करकट का ढेर कहा गया है जिसमें जातिवाद ऊँच-नीच, छुआछूत, अमीर-गरीब, अनेक रूढ़ियाँ, अंधविश्वास, धर्मिक कर्मकांड, परम्पराएँ आदर्श और जीवन मूल्य, कुरीतियाँ सम्मिलित हैं। क्योंकि परिवर्तित समय में इनका कोई अर्थ नहीं रह गया है।

प्रश्न 5. सिद्दार्थ ने अपना घर क्यों त्याग दिया?

उत्तर- आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्दार्थ ने अपने घर का त्याग इसीलिए किया ताकि तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता सुख से रह सके। इसके लिए उन्होंने कठोर तपस्या की और सत्य की खोज भी की।

प्रश्न 6. संस्कृति निबंध् का प्रतिपाद्य / उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- संस्कृति निबंध् का उद्देश्य सभ्यता और संस्कृति शब्दों की व्याख्या करना है। सभ्यता और संस्कृति शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना तथा मानव संस्कृति को अविभाज्य बताकर उसे मनुष्य के लिए कल्याणकारी बताना है।

प्रश्न 7. वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहते है?

उत्तर- अपनी बुद्धि अथवा विवेक के आधर पर किसी भी नए तथ्य का दर्शन करने वाला व्यक्ति वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' है। उदाहरणतया न्यूटन संस्कृत मनुष्य है, क्योंकि उसने अपनी बुद्धि के बल पर गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत खोजा।

प्रश्न 8. किन महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागों का आविष्कार हुआ होगा?

उत्तर- निम्नलिखित महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागों का आविष्कार हुआ होगा- 1. तन ढकने के लिए 2. शीत तथा उष्णता से बचने के लिए 3. शरीर सजाने की प्रवृत्ति के कारण। आज कल यह तकनीक बहुत उपयोगी सिद्ध हो रही है। जूते सिलने से लेकर शल्य चिकित्सा तक में इसका उपयोग हो रहा है।

प्रश्न 9. लेखक ने सर्वस्व त्याग करने वाली संस्कृति को स्पष्ट करने के लिए किन-किन महामानवों के उदाहरण दिए हैं?

उत्तर- निम्नलिखित महामानवों के उदाहरण दिए हैं -

1- रूस के भाग्य विधता लेनिन द्वारा डैस्क में रखे हुए डबलरोटी के सूखे टुकड़ों को स्वयं न खाकर दूसरों को खिला देने का उदाहरण।

2- संसार भर के मजदूरों को सुखी देखने की इच्छा में स्वयं के जीवन को कष्ट पूर्ण बनाने वाले कार्ल मार्क्स का उदाहरण।

3- दुखी मानवता को सुखी करने की इच्छा से सिद्दार्थ द्वारा गृह त्याग देने का उदाहरण।

प्रश्न 10. लेखक की दृष्टि में सभ्यता और संस्कृति की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?

उत्तर- सभ्यता और संस्कृति की सही समझ इसलिए नहीं बन पाई क्योंकि हम इन दोनों बातों को एक ही समझते हैं। यह जानना जरूरी है कि दोनों एक नहीं हैं, फिर भी इनमें इतनी नजदीकी है कि इनमें स्पष्ट अंतर सामान्य लोगों को नहीं समझ आते हैं।

प्रश्न 11. लेखक के अनुसार सभ्यता क्या है?

उत्तर- लेखक के अनुसार सभ्यता संस्कृति का परिणाम है। मनुष्य के खाने-पीने के तरीके पहनने ओढ़ने के तरीके हमारे यातायात के साधनों का उपयोग जीवन जीने का तरीके ही सभ्यता है।

(काव्य-खंड)

पद - सूरदास

प्रश्न 1- उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर- उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित से की गई है –

1- कमल के पत्ते से, जो जल में रहकर भी उससे प्रभावित नहीं होता।

2- जल में पड़ी तेल की गागर से, जिस पर जल का असर नहीं होता है।

प्रश्न 2- गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित हैं?

उत्तर- यह व्यंग्य निहित हैं कि उद्धव कृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रभाव से सर्वथा अछूते रहे हैं। उनके मन में श्रीकृष्ण के प्रति अनुराग नहीं उत्पन्न हुआ। यह स्थिति उद्धव के लिए भाग्यशाली हो सकती है पर गोपियों के लिए नहीं।

प्रश्न 3 - गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने के लिए कहा है?

उत्तर- गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने के लिए कहा है जिनके मन चकरी के समान घूमते रहते हैं । उन्हें ही योग के द्वारा मन एकाग्र करने की आवश्यकता है ।

प्रश्न 4 – सूरदास किस भक्ति मार्ग के समर्थक थे?

उत्तर- सूरदास सगुण भक्ति मार्ग के समर्थक थे। इस मार्ग में भगवान के साकार रूप की उपासना की जाती है। इसलिए वे अपने पदों में योग मार्ग के विरूद्ध अपनी बात कहते हुए दिखाई पड़ते हैं ।

प्रश्न 5 – उद्धव गोपियों की मनोदशा क्यों नहीं समझ सके?

उत्तर- उद्धव को निर्गुण ज्ञान पर अभिमान था। ज्ञान के दर्प में वे गोपियों के आदर्श प्रेम को नहीं समझ पाए।

प्रश्न 6 – भ्रमरगीत की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- भ्रमरगीत में निर्गुण ब्रह्म का विरोध, सगुण की सराहना, वियोग श्रृंगार का मार्मिक चित्रण है। इसमें गोपियों की स्पष्टता, वाकपटुता, सहृदयता, व्यंग्यात्मकता सराहनीय है और एकनिष्ठ प्रेम, योग से पलायन, स्नेहासिक्त-उपालंभ अवलोकनीय हैं।

प्रश्न 7 – गोपियों को राजधर्म की याद क्यों दिलानी पड़ी?

उत्तर- प्रेम आदि की पवित्र नीतिपरक बातें भूलकर कृष्ण अनीति पर उतार आए हैं। अत: योग-संदेश को भेजकर प्रेम की मर्यादा के विरूद्ध कार्य कर रहे हैं। इसलिए गोपियों ने उन्हें राजधर्म की याद दिलाकर प्रेम-नीति पर लाने का प्रयास किया गया।

प्रश्न 8 – सूरदास के पढ़े गए पदों के आधार पर सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- क- एकनिष्ठ प्रेम ख- वाक्पटुता ग- गीत शैली घ- व्यंग्यात्मक शैली।

प्रश्न 9 – गोपियों के वाक-चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- स्पष्टता व व्यंग्यात्मक प्रयोग।

प्रश्न 10 – योग संदेश का गोपियों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर- गोपियों की विरहाग्नि बढ़ गई। उनका मन दु:खी हो गया। उद्धव को उलाहने देने लगीं।

राम-लक्ष्मण और परशुराम संवाद - तुलसीदास

प्रश्न 1-परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

उत्तर- परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष टूट जाने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए-

1. सभी धनुष तो एक समान होते हैं, फिर इस धनुष पर इतना मोह ठीक नहीं है।
2. यह धनुष बहुत पुराना है, इस पर क्रोध करना व्यर्थ है।
3. राम के छूने भर से ही वह धनुष टूट गया, इसमें राम का क्या दोष नहीं है।

प्रश्न 2- इस पाठ के आधार पर परशुराम के स्वभाव की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर- पाठ को पढ़कर हमें परशुराम के स्वभाव की निम्नलिखित विशेषताएं पता लगती हैं-

1. वे महाक्रोधी थे ।
2. वे बड़बोले तथा अपनी वीरता की डींग हांकने वाले थे ।
3. वे जल्द ही उत्तेजित हो जाते थे ।
4. उन्हें अपने पूर्व के कृत्यों का बड़ा घमंड था ।

प्रश्न 3-"सेवक सो जो करे सेवकाई" का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस पंक्ति का तात्पर्य है कि सेवक वह है जो सेवा करता है। प्रस्तुत पद में इस पंक्ति को व्यंग्य रूप में प्रस्तुत किया गया है। परशुराम कहते हैं कि शिव धनुष तोड़कर तुमने काम तो शत्रुओं जैसा किया है उन पर अपने आपको तुम मेरा दास कहते हो यह दोहरा व्यवहार नहीं चलेगा।

प्रश्न 4-लक्ष्मण ने वीर योद्धा की कौन-कौन सी विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर- लक्ष्मण द्वारा वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताओं पर प्रकाश डाला कि शूरवीर युद्धभूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन करता है। वह आत्म-प्रशंसा नहीं करता, वह कर्म को महत्त्व देता है और अपनी वीरता का परिचय देता है।

प्रश्न 5-पठित कविता के आधार पर तुलसीदास की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- तुलसीदास श्रीराम के परम भक्त थे। उनकी भाषा अवधी है। इसमें दोहा-चौपाई शैली को अपनाया गया है। उन्होंने आम जन की भाषा में काव्य को कोमल और संगीतात्मक बनाने का प्रयास किया है। कोमल ध्वनियों के प्रयोग से उनकी कविता में गेयता का गुण विद्यमान है।

प्रश्न 6-पदों के आधार पर लक्ष्मण व राम के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- काव्यांश के आधार पर राम विनयशील, कोमल, गुरूजनों का आदर करने वाले, वीर, साहसी हैं। लक्ष्मण- उग्र, उद्दण्ड, वीर, साहसी, भाषा में व्यंग्य का भाव, स्वभाव से निडर हैं।

प्रश्न 7-किस कारण लक्ष्मण क्रोध को रोककर परशुराम के वचनों को सहन कर रहे थे?

उत्तर- लक्ष्मण क्रोध को रोककर परशुराम के वचनों को इसलिए सह रहे थे क्योंकि उनके कुल की परम्परा है। उनके यहां गाय, ब्राह्मण, हरिभक्त और देवताओं पर वीरता नहीं दिखाई जाती ।

प्रश्न 8- लक्ष्मण की बढ़ती हुई उच्छंखृलता पर अब तक मौन रहे राम ने अंत में लक्ष्मण को क्यों रोक लिया?

उत्तर- यद्यपि लक्ष्मण की उच्छंखृलता रघुवंश के अनुकूल नहीं थी फिर भी राम समझ रहे थे कि मुनिवर को हमारी वास्तविकता का ज्ञान हो जाए। परन्तु उपस्थित लोगों की पुकार से स्थिति बिगड़ती देख उन्होंने लक्ष्मण को आँखों के संकेत से रोका।

आत्म कथ्य - जयशंकर प्रसाद

प्रश्न 1- किसकी स्मृति कवि के लिए पाथेय बनी है?

उत्तर- जो कवि का प्रिय पात्र था जिसके साथ कवि अपने मधुर क्षणों को बिताया करता था। लेकिन जिसका सानिध्य कवि को प्राप्त न हो सका उसकी स्मृति कवि के लिए पाथेय बनी है।

प्रश्न 2- कवि अपनी कंथा की सीवन क्यों नहीं उधेड़ना चाहता ?

उत्तर- कवि अपनी कंथा की सीवन इसलिए नहीं उधेड़ना चाहता क्योंकि वह अपने जीवन की पुरानी यादों को ताजा नहीं करना चाहता। ये यादें न केवल उसे दुख देगी बल्कि दूसरे लोगों के साथ किए गए बुरे व्यवहार को भी उद्घाटित कर देगी।

प्रश्न 3- कवि ने अपने को थका हुआ पथिक क्यों कहा है?

उत्तर- कवि ने उम्र के इस पड़ाव तक आने के लिए लंबा रास्ता तय किया है तथा काफी दुख भी झेला। इन् सब स्थितियों को झेलकर वह काफी थक गए है।

प्रश्न 4- कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है?

उत्तर- कवि आत्मकथा लिखने से बचना चाहता है क्योंकि उसके जीवन में कहने या लिखने को कुछ विशेष नहीं है साथ ही वह अपने जीवन की पुरानी यादों को ताज़ा नहीं करना चाहता क्योंकि ये यादें न केवल उसे दुख देगीं बल्कि दूसरे लोगों द्वारा कवि के साथ किए गए बुरे व्यवहार को भी उद्घाटित कर देगीं।

प्रश्न 5- स्मृति को पाथेय बनाने का क्या अर्थ है?

उत्तर- पाथेय का अर्थ होता है सँबल या सहारा। स्मृति को पाथेय बनाने का अर्थ है कि कवि अपनी पुरानी यादों के सहारे ही ज़िंदगी बिता रहा है क्योंकि उसके वर्तामान जीवन मेँ ऐसा कुछ भी नहीँ है जो उसे धीरज बँधा सके।

प्रश्न 6- उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ , मधुर चाँदनी रातों की- कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर- कवि कहना चाहता है कि निजी प्रेम के मधुर क्षण सबके सामने प्रकट करने योग्य नहीं होते। यह व्यक्ति के निजी अनुभव होते हैं। साथ ही कवि का वह प्रेम असफल भी था। अतः इस बारे में कुछ कहना सही नहीं है।

उत्साह, अट नहीं रही है - सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

प्रश्न 1- कविता मे बादल किन– किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

उत्तर- बादल प्यासों की प्यास बुझाने तथा खेतों में जल पहुचाने वाला है। इस अर्थो में वह निर्माण का प्रतीक है। बादल क्रांति का संदेश लाकर शोषकों का अंत करता हैं। इस अर्थ मे वह विनाश का प्रतीक है।

प्रश्न 2- कवि बादल से फुहार रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए क्यों कहता है ?

उत्तर- कवि बादलों को क्रांति या बदलाव का प्रतीक मानता है। बदलाव हेतु तीव्र प्रहार की आवश्यकता होती है। यह कार्य धीमे–धीमे या मृदुता से नही हो सकता। बादलों के गर्जन–तर्जन में ही यह शक्ति निहित है अतः कवि बादल से फुहार रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए कहता है।

प्रश्न 3- कवि ने बादलों को नवजीवन वाले क्यों कहा है?

उत्तर- बादल तत्प धरा पर जल बरसा कर धन-धान्य को संभव बनाते हैं साथ ही बादल प्यासों की प्यास बुझाते हैं। इस तरह एक अर्थ में वे लोगों को नवजीवन प्रदान करते हैं। इसलिए कवि ने उन्हें नवजीवन वाले कहा है।

प्रश्न 4- 'अट नहीं रही है' कविता में किस महीने के सौन्दर्य का वर्णन हुआ है?

उत्तर- फागुन महीने के सौन्दर्य का वर्णन हुआ है।

प्रश्न 5-'अट नहीं रही है' का प्रयोग किसके लिए हुआ है?

उत्तर- प्रकृति–सौंदय के लिए क्योंकि प्रकृति की शोभा अद्‌वितीय हैं।

प्रश्न 6- फागुन के साँस लेते ही प्रकृति में क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं?

उत्तरः–संपूर्ण वातावरण सुवासित हो उठता है। प्रकृति पल्लवित, पुष्पित हो जाती है।

प्रश्न 7- प्रकृति के परिवर्तन का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?

उत्तरः– कवि का मन कल्पना की उड़ान भरने लगता है।

प्रश्न 8 -उर में पुष्प माल पड़ने का क्या अर्थ है?

उत्तरः– कवि कहना चाहता है कि फागुन के आगमन से वृक्ष पुष्पों से लद गए हैं।

प्रश्न 9- फागुन की शोभा का वर्णन कीजिए?

उत्तरः– फागुन की शोभा सर्वत्र व्याप्त हो गई है। वृक्ष पुष्पों से लद गए हैं। उसकी शोभा प्रकृति में समा नही रही है।

दंतुरित मुस्कान, फ़सल - नागार्जुन

प्रश्न 1- दंतुरित मुस्कान से क्या तात्पर्य है, इसकी क्या विशेषता है?

उत्तर- नन्हा बालक जिसके अभी दाँत निकल रहे हैं उस बालक की मुस्कान को दंतुरित मुस्कान कहा गया है। यह मुस्कान बहुत ही निर्मल और निश्छल होती है जो देखने वाले के ह्रदय में आनंद और उत्साह का संचार करती है।

प्रश्न 2- मुस्कान एवं क्रोध भिन्न भाव हैं। आपके विचार से हमारे जीवन में इनके क्या प्रभाव पड़ते हैं?

उत्तर- मुस्कान और क्रोध भिन्न भाव हैं, मुस्कान प्रसन्नता को व्यक्त करती है और क्रोध असन्तोष और उग्रता प्रकट करता है।

प्रश्न 3- इस कविता में किस शैली का प्रयोग किया गया है?

उत्तर- आत्मकथात्मक, प्रश्न एवं संबोधन शैली।

प्रश्न 4- "थक गए हो" यहाँ कवि भावुक हो उठा है कैसे?

उत्तर- शिशु के लगातार देखने से कवि भावुक हो उठा, उसे यह स्थिति कष्टप्रश्नद लगती है इसलिए कवि ने ऐसा कहा है।

प्रश्न 5- कवि ने स्वयं को इतर और अन्य क्यों कहा है?

उत्तर- क्योंकि वह प्रवासी है और शिशु कवि को प्रथम बार देख रहा है।

प्रश्न 6-. कवि ने स्वयं को प्रवासी क्यों कहा है?

उत्तर- प्राचीन काल से ही पुरुष आजीविका के लिए अपने घरों-गाँवों को छोड़कर बाहर जाता रहा है। बच्चे की माँ ही उसका पालन-पोषण करती है। पिता से बच्चों का संपर्क कभी-कभी ही हो पाता है। इसलिए कवि ने स्वयं को प्रवासी कहा है।

प्रश्न 7- स्पष्ट कीजिए- 'छू गया तुम से कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल।'

उत्तर- शिशु का सौन्दर्य ऐसा अद्‌भुत है कि उसके स्पर्श मात्र से कठोर या रसहीन व्यक्ति के ह्रदय में भी रस उमड़ आता है, उसका ह्रदय वात्सल्य से भर जाता है।

प्रश्न 8- कविता में फसल उपजाने के लिए किन आवश्यक तत्वों की बात कही गई है?

उत्तर- कविता में फसल उपजाने के लिए निम्न आवश्यक तत्वों की बात कही गई है-

* पानी
* मिट्टी
* धूप
* हवा

* मानव श्रम

प्रश्न 9- किसानों के हाथों के स्पर्श को महिमा क्यों माना गया है?

उत्तर-फसलों को उगाने के लिए किसान दिन-रात कड़ी मेहनत करते हैं तब कहीं जाकर खेतों में फसल लहलहाती है। किसानों के इसी श्रम को सम्मान देने के लिए फसल को किसान के हाथों के स्पर्श की महिमा माना गया है।

प्रश्न 10- कवि ने फसल को जादू क्यों कहा है?

उत्तर- कवि ने फसल को जादू इसलिए कहा है क्योंकि फसल मिट्टी, हवा, पानी, धूप और मानव श्रम के मेल से बनी है।

प्रश्न 11- किन-किन तत्वों के योगदान से फसल की उत्पत्ति होती है?

उत्तर- मिट्टी, पानी, धूप, हवा और मानव श्रम से फसल की उत्पत्ति होती है।

प्रश्न 12- फसल कविता का वर्तमान संदर्भ में महत्व बताइए?

उत्तर- प्रकृति और मानव श्रम का साकार और सार्थक रूप फसल है। आज भी परिश्रम का महत्व और प्रकृति का योगदान अपेक्षित है।

संगतकार- मंगलेश डबराल

प्रश्न 1- संगतकार के माध्यम से कवि किस तरह के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर- संगतकार के माध्यम से कवि सहायक कलाकारों के महत्व की ओर संकेत कर रहा है। ये सहायक कलाकार खुद को पीछे रखकर मुख्य कलाकार को आगे बढ़ने में योगदान देते है। यह बात जीवन के हर क्षेत्रा में लागू होती है।

प्रश्न 2- संगतकार की आवाज में एक हिचक क्यों सुनाई देती है?

उत्तर- संगतकार की आवाज में एक हिचक साफ सुनाई देती है क्योंकि वह जान बूझकर अपनी आवाज को मुख्य गायक से ऊपर नहीं उठने देता। क्योंकि उसका कर्तव्य मुख्य कलाकार को सहारा प्रदान करना है, अपनी कला का प्रदर्शन करना नहीं।

प्रश्न 3- सफलता के चरम-शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है, तब उसे सहयोगी किस तरह संभालते हैं?

उत्तर- सफलता के चरम-शिखर पर पहुँचने के दौरान लड़खड़ाते व्यक्ति को उसके सहयोगी विषम परिस्थितियों में उसके साथ रहने का विश्वास देकर उसका आत्मबल बनाए रखने का भरसक प्रयास करते हैं। स्वयं आगे आकर सुरक्षा-कवच बनकर उसके पौरुष की प्रशंसा करते हैं। उसके लड़खड़ाने का कारण ढूँढ़ते हैं और उन कारणों का समाधन करने के लिए सहयोगी अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं। आत्मीयता से पूर्णरुपेण सहयोग करते हैं।

प्रश्न 4- 'संगतकार' कविता के आधर पर स्पष्ट कीजिए कि संगतकार जैसे व्यक्ति सर्वगुणसम्पन्न होकर भी समाज में अग्रिम न आकर प्रायः पीछे ही क्यों रहते हैं?

उत्तर- 'संगतकार' प्रवृत्ति के लोग छल-प्रपंच से दूर होते हैं। वे मुख्य कलाकार के सहयोगी होते हैं।
अपने प्रति विश्वास को खत्म नहीं करना चाहते हैं। दूसरे की विशेषताओं को तराशने और सुधारने में लगे रहते हैं और इसे ही अपना कर्तव्य समझते हैं।

प्रश्न 5- 'संगतकार' कविता में कवि क्या सन्देश देना चाहता है?

उत्तर- कवि की संगतकार के प्रति सहानुभूति है। उसकी दृष्टि में संगतकार मुख्य गायक के समान ही सराहनीय है। मुख्य-गायक की सफलता में संगतकार का श्रेय कम करके नहीं देखना चाहिए। यद्यपि मुख्य गायक के बिना संगतकार का अस्तित्व नहीं है। किन्तु मुख्य गायक की सफलता अधिकांशतः संगतकार के सफल सहयोग पर निर्भर है। मुख्य गायक के निराश होने पर, विश्वास लड़खड़ाने पर, स्वर बिगड़ने पर, उसके तारसप्तक में खो जाने पर संगतकार ही उसे संभालता है। संगतकार के बिना मुख्य-गायक की सफलता संदिग्ध् रहती है।

माता का आँचल - शिवपूजन सहाय

प्रश्न 1- माँ के प्रति अधिक लगाव न होते हुए भी विपत्ति के समय भोलानाथ माँ के आँचल में ही प्रेम और शांति पाता है? इसका आप क्या कारण मानते हैं?

उत्तर- यह बात सच है कि बच्चे (लेखक) को अपने पिता से अधिक लगाव था। उसके पिता उसका लालन-पालन ही नहीं करते थे बल्कि उसके संग दोस्तों जैसा व्यवहार भी करते थे। परंतु विपदा के समय उसे लाड़ की जरूरत थी। उसे अत्यधिक ममता और माँ की गोद की जरूरत थी। उसे अपनी माँ से जितनी कोमलता मिल सकती है, पिता से नहीं। यही कारण है कि संकट में बच्चे को माँ या नानी की याद आती है, बाप या नाना की नहीं। माँ का ममत्व घाव भर देने वाले मरहम का काम करता है।

प्रश्न 2- भोलानाथ और अपने साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर- आज जमाना बदल चुका है। आज माता-पिता अपने बच्चों का बहुत ध्यान रखते हैं वे उसे गली मोहल्ले में बेफिक्र खेलने घूमने की अनुमति नहीं देते। जब से निठारी जैसे कांड होने लगे हैं, तब से बच्चे भी डरे-डरे रहने लगे हैं। न तो हुल्लड़बाजी, शरारतें और तुकबंदियाँ रही हैं न ही नंग-धड़ंग घूमते रहने की आजादी। अब तो बच्चे प्लास्टिक और इलेक्ट्रोनिक्स के महंगे खिलौनों से खेलते हैं। बरसात में बच्चे बाहर रह जाएं तो माँ-बाप की जान निकल जाती है। आज न कुएँ रहे, न रहट, न खेती का शौक। इसलिए आज का युग पहले की तुलना में आधुनिक, बनावटी, रसहीन हो गया है।

प्रश्न 3- बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं? अपने जीवन की कोई बात बताइए जिसमें आपने अपने माता-पिता के प्रति प्रेम अभिव्यक्त किया हो?

उत्तर- बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को उनके साथ रहकर, उनकी सिखाई हुई बातों में रुचि लेकर, उनके साथ खेल करके, उन्हें चूमकर और उनकी गोद में या कंधे पर बैठकर प्रकट करते हैं।

मेरे माता-पिता की बीसवीं वर्षगाँठ थी। मैंने बीस वर्ष पुराने युगल चित्र को सुन्दर से फ्रेम में सजाया और उन्हें भेंट किया उसी दिन मैं उनके लिए अपने हाथों से सब्जियों का सूप बनाकर लाई और उन्हें आदर पूर्वक दिया। माता-पिता मेरा वह प्रेम देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

प्रश्न 4- आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर- घर में लाख मना करने पर भी भोलानाथ की माँ सिर में कड़वा तेल लगाकर ही छोड़ती है। माथे पर काजल की बिंदी लगाकर फूलदार लट्टू बाँधकर कुर्ता-टोपी पहना देती है। इस प्रकार माँ के हठ से तंग आकर भोलानाथ सिसकने लगता है। घर से बाहर आने पर जब बालकों का झुंड मिल जाता है तब वह साथियों की हुल्लड़बाजी, शरारतें और मस्ती देखकर सब कुछ भूल जाता है। हमारे विचार से भोलानाथ खेलने का अवसर पाकर सिसकना भूल जाता है।

प्रश्न 5- 'माता का आँचल' पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?

उत्तर- इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई, वह 1930 के आसपास की है, तब बच्चे घर के सामान से और साधारण सी चीजों से खेलने का काम चला लेते थे। वे प्रकृति की गोद में रह कर खुश थे। आज हमारी दुनिया पूरी तरह से भिन्न है। हमें ढेर सारी चीजें चाहिए। खेल सामग्री में भी बदलाव आ गया है। खाने-पीने की चीजों में भी काफी बदलाव आया है। हमारी दुनिया टी.वी., कोल्डड्रिंग, पीजा, चॉकलेट के इर्द-गिर्द घूमती है।

प्रश्न-6 यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- पिताजी का अपने साथ शिशु को भी नहला-धुलाकर पूजा में बैठा लेना, माथे पर भभूत लगाना फिर कागज में राम-राम लिख कर आटे की गोलियाँ बनाना, उसके बाद लेखक को कन्धे पर बैठा कर गंगाजी तक ले जाना और वापस आते समय पेड़ पर बैठा कर झूला झुलाना, यह सब कितना सुंदर दृश्य उत्पन्न करता है। लेखक का अपने पिता जी के साथ कुश्ती लड़ना, पिताजी का बच्चे के गालों में चुम्मा लेना, बच्चे के द्वारा मूँछे पकड़ने पर पिताजी का बनावटी रोना रोने का नाटक करना और शिशु का उस पर हँस पड़ना, यह सब अत्यंत जीवंत लगता है। माँ के द्वारा

गोरस-भात, तोता-मैना आदि के नाम पर खिलाना, उबटना, शिशु का शृंगार करना और शिशु का सिसक-सिसक कर रोना, बच्चों की टोली को खेलते देखकर सिसकना बन्द कर तरह-तरह के खेल खेलना और मूसन तिवारी को चिढ़ाना आदि। ये सभी अद्भुत दृश्य पाठ में उभारे गए हैं। ये सभी दृश्य अपने शैशव अवस्था की याद दिलाते हैं।

साना साना हाथ जोड़ि - मधु काकरिया

प्रश्न 1- गन्तोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया?

उत्तर- 'मेहनतकश का अर्थ है- कड़ी मेहनत करने वाले। 'बादशाह' का अर्थ है- मन की मर्जी के मालिक। गंतोक एक पर्वतीय स्थल है। पर्वतीय क्षेत्र होने के नाते यहाँ स्थितियां बड़ी कठिन है। अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए लोगों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यहाँ के लोग इस मेहनत से घबराते नहीं और ऐसी कठिनाइयों के बीच भी मस्त रहते हैं। इसलिए गन्तोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा गया।

प्रश्न 2- जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, वहां की भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में लिखिए।

उत्तर- जितेन नार्गे उस वाहन (जीप) का गाइड-कम-ड्राइवर था, जिसके द्वारा लेखिका सिक्किम की यात्रा कर रही थी। जितेन एक समझदार और मानवीय संवेदना से युक्त व्यक्ति था। उसने लेखिका को सिक्किम की प्राकृतिक व भौगोलिक स्थिति तथा जन जीवन के विषय में अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां दी। उसने बताया कि सिक्किम बहुत ही खूबसूरत प्रदेश है और गन्तोक से युमथांग की 149 किलोमीटर की यात्रा में हिमालय की गहनतम घाटियां और फूलों से लदी वादियां देखने को मिलती हैं। सिक्किम प्रदेश चीन की सीमा से सटा है। पहले यहां राजशाही थी। अब यह भारत का एक अंग है। सिक्किम के लोग अधिकतर बौद्ध धर्म को मानते हैं और यदि किसी बौद्धिष्ट की मृत्यु हो जाए तो उसकी आत्मा की शांति के लिए एक सौ आठ पताकाएं फहराई जाती हैं। यहां के लोग बड़े मेहनती हैं। इसलिए गन्तोक को 'मेहनतकश बादशाहों का नगर' कहा जाता है और यहां की स्त्रियां भी कठोर परिश्रम करती हैं। वे अपनी पीठ पर बंधी डोके (बड़ी टोकरी) में कई बार अपने बच्चे को भी साथ रखती है। यहां की स्त्रियां चटक रंग कपड़े पहनना पसंद करती है और उनका परम्परागत परिधान 'बोकू' है।

प्रश्न 3- "कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं "। इस कथन के आधार पर स्पष्ट करें कि आम जनता की देश की आर्थिक प्रगति में क्या भूमिका है?

उत्तर- लेखिका ने यह कथन उन पहाड़ी श्रमिक महिलाओं के विषय में कहा है, जो पीठ पर बंधी डोको (बड़ी टोकरी) में अपने बच्चों को सम्भालते हुए कठोर श्रम करती हैं ऐसा ही दृश्य वह पलामु और गुमला के जंगलो में भी देख चुकी थी, जहां बच्चे को पीठ पर बांधे तेंदू के पत्तों की तलाश में आदिवासी औरतें वन-वन डोलती फिरती हैं। उसे लगता है कि ये श्रम सुंदरियां 'वेस्ट एट रिपेईन्ग' हैं, अर्थात् ये कितना कम लेकर समाज को कितना अधिक लौटाती हैं। वास्तव में यह एक सत्य है कि हमारे ग्रामीण समाज में महिलाएँ बहुत कम लेकर समाज को बहुत अधिक लौटाती हैं। वे घर बाहर भी सम्भालती हैं, बच्चों की देखभाल भी करती हैं और श्रम करके धनोपार्जन भी करती हैं। यह बात हमारे देश की आम जनता पर भी लागू होती है। जो श्रमिक कठोर परिश्रम करके सड़को, पुलों, रेलवे लाइनों का निर्माण करते हैं या खेतों में कड़ी मेहनत करके अन्न उपजाते हैं, उन्हें बदले में बहुत कम मजदूरी या लाभ मिलता है। लेकिन उनका श्रम देश की प्रगति में बड़ा सहायक होता है हमारे देश की आम जनता बहुत कम पाकर भी देश की प्रगति में अहम भूमिका निभाती है।

प्रश्न 4- आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है? इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए?

उत्तर- आज की पीढ़ी पहाड़ी स्थलों में अपना विहार स्थल बना रही है। वहां भोग के नए-नए साधन पैदा किए जा रहे हैं। इसलिए जहां एक ओर गन्दगी बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर तापमान में वृद्धि हो रही है। परिणामस्वरूप पर्वत अपनी स्वाभाविक सुंदरता खो रहे हैं। इसे रोकने में हमे सचेत होना चाहिए। हमें ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे पहाड़ों का प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट हो, गन्दगी फैले और तापमान में वृद्धि हो।

प्रश्न 5- लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक सी क्यों दिखाई दी?

उत्तर- सिक्किम में एक जगह का नाम है - 'कवी-लोंग स्टाक'। कहा जाता है कि यहाँ गाइड फिल्म की शूटिंग हुई थी। वहीं एक घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो पता चला कि यह धर्मचक्र है। इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं। जितेन की यह बात सुनकर लेखिका को ध्यान आया कि पूरे भारत की आत्मा एक ही है। इस स्थिति को देखकर लेखिका को लगता है कि धार्मिक आस्थाओं, पाप-पुण्य और अंधविश्वासों के बारे में सारे भारत में एक जैसी मान्यताएँ है।

प्रश्न 6- कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?

उत्तर- यहाँ पहाड़ी रास्तों पर कतार में लगी श्वेत (सफेद) पताकाएँ दिखाई देती हैं। ये सफेद बौद्ध पताकाएँ शांति और अहिंसा की प्रतीक हैं। इस पर मंत्र लिखे होते हैं। ऐसी मान्यता है कि श्वेत पताकाएँ किसी बौद्धिष्ट की मृत्यु पर फहराई जाती हैं उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से बाहर किसी पवित्र स्थान पर108 श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती है, जिन्हें उतारा नहीं जाता। वे धीरे-धीरे स्वयं नष्ट हो जाती हैं। किसी शुभ कार्य को आरम्भ करने पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं।

प्रश्न 7- लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक-सी क्यों दिखाई दी?

उत्तर- लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक-सी दिखाई दी क्योंकि लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने जब जितेन नार्गे से उसके बारे में पूछा। तो पता चला कि यह धर्म-चक्र है। इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं। यह सब जानकर लेखिका सोचती भारत में लोग अब भी मानसिक संकीर्णता तथा अंधविश्वासों से मुक्त नहीं हुए हैं। उसे लगा कि पूरे भारत की आत्मा एक-सी है। और सारी वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद उनके अंध-विश्वास और पाप-पुण्य की अवधारणाएँ एक-सी हैं।

मैं क्यों लिखता हूँ- अज्ञेय

प्रश्न 1- लेखक क्यों लिखता है?

उत्तर- लेखक को लगता है कि लिखकर ही वह अपने मन की स्थिति तथा विवशता को जान पाता है। अपनी मन:स्थिति को व्यक्त करने एवं विवशता से मुक्त होने का सुगम मार्ग भी लिखना ही है।

प्रश्न 2- सभी लेखक कृतिकार क्यों नहीं होते?

उत्तर- सभी लेखक कृतिकार नहीं हो सकते। मात्र अपनी भावनाओं को प्रकट करने से ही कोई अभिव्यक्ति कृति नहीं हो जाती। कृतिकार द्वारा सामाजिक दायित्व का निर्वाह करने पर ही अभिव्यक्ति कृति बन पाती है।

प्रश्न 3- अनुभूति के स्तर की विवशता की क्या विशेषता होती है?

उत्तर- अनुभूति के स्तर की विवशता तार्किकता पर निर्भर होती है। अनुभव तो घटित होता रहता है और अनुभूति, संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य से जुड़कर आत्मसात् कर लेती है। अनुभूति ही लेखक को लिखने के लिए प्रेरित करती है।

प्रश्न 4- अनुभूति को लेखक ने गहरा क्यों कहा है?

उत्तर- लेखक का मानना है कि अनुभव तो एक घटना है और अनुभूति मन के भीतर से उठने वाले विचार हैं। जो समाज के दायित्वों के निर्वहन में सहायक होते हैं।

प्रश्न 5- लेखक ने आलसी जीव किसे कहा है और क्यों?

उत्तर- लेखक ने उन लेखकों को आलसी जीव कहा है जो बाहरी दबाव के बिना नहीं लिख पाते। ऐसे लोग कुछ लिखना तो चाहते हैं किंतु तब नहीं लिख पाते जब तक बाहर का कोई उन्हें लिखने के लिए दबाव न डाले। जैसे आँख खुलने पर कोई-कोई अलार्म बजने की प्रतीक्षा में लेटा ही रहता है।

प्रश्न 6- लेखक ने हिरोशिमा कविता कब और कहाँ लिखी?

उत्तर- लेखन ने हिरोशिमा कविता उस समय लिखी जब उसके भीतर की आकुलता संवेदना में बदल गई। लेखक ने यह कविता भारत आने पर लिखी।

प्रश्न 7- हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरूपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरूपयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है?

उत्तर- आजकल विज्ञान का दुरूपयोग अनेक जानलेवा कामों के लिए किया जा रहा है। आज आतंकवादी संसार भर में आतंकी घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। कहीं बम-विस्पफोट किए जा रहे हैं। कहीं गाड़ियों में आग लगाई जा रही है। कहीं शक्तिशाली देश, दूसरे देशों को दबाने के लिए उन पर आक्रमण कर रहे हैं तथा वहाँ के जनजीवन को तहस नहस कर रहे हैं। विज्ञान के दुरूपयोग से चिकित्सक गर्भ में ही भ्रूण परीक्षण कर रहे हैं। इससे जनसंख्या का संतुलन बिगड़ रहा है। विज्ञान के दुरूपयोग से किसान कीटनाशक और जहरीले रसायन छिड़क कर अपनी फसलों को बढ़ा रहे हैं। इससे लोगों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है। विज्ञान के उपकरणों के कारण ही वातावरण में गर्मी बढ़ रही है, प्रदूषण बढ़ रहा है और बर्फ पिघलने का खतरा बढ़ रहा है तथा रोज-रोज भयंकर दुर्घटनाएँ हो रही हैं।

प्रश्न 8- लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

उत्तर- लेखक हिरोशिमा की घटनाओं के बारे में सुनकर तथा उनके कुप्रभावों को प्रत्यक्ष देखकर भी विस्पफोटका भोक्ता नहीं बन पाया। एक दिन वह जापान के हिरोशिमा नगर की एक सड़क पर घूम रहा था। अचानक उसकी नज़र एक पत्थर पर पड़ी। उस पत्थर पर एक मानव की छाया छपी हुई थी। वास्तव में परमाणु -विस्पफोट के समय कोई मनुष्य उस पत्थर के पास खड़ा होगा। रेडियो-धर्मी किरणों ने उस आदमी को भाप की तरह उड़ाकर उसकी छाया पत्थर पर डाल दी थी। उसे देखकर लेखक के मन में अनुभूति जग गई। उसके मन में विस्पफोट का प्रत्यक्ष दृश्य साकार हो उठा। उस समय वह विस्फोट का भोक्ता बन गया।

प्रश्न 9- हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के आंतरिक दबाव का परिणाम है। यह आप कैसे कह सकते हैं?

उत्तर:- हिरोशिमा पर लिखी लेखक की कविता को हम उसके आंतरिक दबाव का परिणाम कह सकते हैं। इसके लिए उन्हें न तो किसी संपादक ने आग्रह किया, न किसी प्रकाशक ने तकाज़ा किया। न ही उन्होंने इसे किसी आर्थिक विवशता के लिए लिखा। इसे उन्होंने शुद्ध रूप से मन की अनुभूति से प्रेरित होकर लिखा। जब पत्थर पर पिघले मानव को देखकर उसके मन में अनुभूति जाग गई तो कविता स्वयं बन गई। इसीलिए हम इस कविता को आंतरिक दबाव का परिणाम कह सकते हैं। किसी बाहरी दबाव का नहीं।

प्रश्न 10- लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा भीतरी अनुभूति उनके लेखन में अधिक मदद करती है क्यों?

उत्तर- लेखक की मान्यता है कि सच्चा लेखक भीतरी विवशता से पैदा होता है। यह विवशता मन के अंदर से उपजी अनुभूति से जगती है, यह बाहर की घटनाओं को देखकर नहीं जागती है। जब तक कवि का हृदय किसी अनुभव के कारण पूरी तरह संवेदनापूर्ण नहीं होता और इसमें अभिव्यक्त होने की पीड़ा नहीं अकुलाती, तब तक वह कुछ लिख नहीं पाता।

प्रश्न 11- क्या बाहय दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य दूसरे क्षेत्रा से जुड़े लोगों को भी प्रभावित करते हैं, कैसे?

उत्तर - बाहय दबावों का प्रभाव प्रत्येक प्रकार के कलाकार पर समान रूप से होता है। हर प्रकार का कलाकार समाज में हो रही विभिन्न घटनाओं, व्यथाओं को अपने ढंग से प्रकट करने के लिए विवश होता है। भले ही कोई नाट्यकर्मी हो या मूर्तिकार। यदि उसे एक बार ज्योति मिल जाती है तो वह अपना क्षेत्रा नहीं छोड़ पाता। उसे प्रशंसकों, दर्शकों तथा खरीददारों के दबाव के कारण अपना रचना कार्य करते रहना पड़ता है। आर्थिक दबाव भी प्रत्येक क्षेत्रा के कलाकारों को प्रभावित करते हैं।

प्रश्न 12- कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति / स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाहय दबाव भी महत्वपूर्ण होता है, ये बाहय दबाव कौन-कौन से हो सकते हैं?

उत्तर- रचनाकारों पर स्वयं के अनुभव के अतिरिक्त बाहय दबाव भी होते हैं। यश प्राप्त करने के बाद लिखना विवशता हो जाता है। कई बार संपादक प्रकाशक आदि लेखकों पर अपनी पसंद का लिखने का दबाव डालते हैं। कभी-कभी आर्थिक विवशता भी दबाव का कारण होती है।

अनुच्छेद-लेखन

- किसी एक भाव, विचार या कथन को विस्तार देने के लिए 100-150 शब्दों में लिखे गए सुसंगत लेख को अनुच्छेद-लेखन कहते हैं।
- इसमें किसी महत्त्वपूर्ण घटना, दृश्य, समस्या अथवा विषय को शामिल किया जा सकता है। इसे संक्षिप्त (कम शब्दों में) किन्तु सारगर्भित (अर्थपूर्ण) ढंग से लिखा जाता है।
- हिन्दी भाषा का 'अनुच्छेद' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Paragraph' शब्द का हिंदी पर्याय है। अनुच्छेद एक तरह से 'निबंध' का ही संक्षिप्त रूप होता है। इसमें दिए गए विषय के किसी एक पक्ष पर अपना विचार प्रस्तुत करना होता है।
- अनुच्छेद अपने-आप में स्वतन्त्र और पूर्ण होता है। अनुच्छेद का मुख्य विचार या भाव प्राय: या तो आरम्भ में या फिर अन्त में होता है।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए –

(1) अनुच्छेद लिखने से पहले रूपरेखा, संकेत-बिंदु आदि बनानी चाहिए। कभी-कभी प्रश्नपत्रों में पहले से ही रूपरेखा, संकेत-बिंदु आदि दिए होते हैं। आपको उन्हीं रूपरेखा, संकेत-बिंदु इत्यादि को ध्यान में रखते हुए अनुच्छेद लिखना होता है।

(2) अनुच्छेद में दिए गए विषय के किसी एक ही पक्ष का वर्णन करना चाहिए। क्योंकि यह सदैव सीमित शब्दों में लिखा जाता है।

(3) अनुच्छेद की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली होनी चाहिए। ताकि पाठक अनुच्छेद पढ़कर आपकी बात को सही से समझ सके।

(4) एक ही बात को बार-बार नहीं दोहराना चाहिए। इससे आप अपनी बात को कम शब्दों में पूरा नहीं कर पाएँगे।

(5) आपको ये भी ध्यान रखना है कि आप अपने विषय से न भटक जाएँ।

(6) दिए गए निर्देश के अनुसार तय शब्द-सीमा को ध्यान में रखकर ही अनुच्छेद लिखें।

(7) पूरे अनुच्छेद में एकरूपता बनाए रखनी चाहिए।

(8) विषय से संबंधित सूक्ति अथवा कविता की पंक्तियों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

अनुच्छेद की प्रमुख विशेषताएँ –

(1) अनुच्छेद में किसी एक भाव, विचार या तथ्य एक बार ही व्यक्त होता है। इसमें अन्य विचारों का कोई महत्त्व नहीं होता है।

(2) अनुच्छेद के सभी वाक्य एक-दूसरे से गठित और सुसंबद्ध होते है। वाक्य छोटे तथा एक दूसरे से जुड़े होते हैं।

(3) अनुच्छेद एक स्वतन्त्र और पूर्ण रचना है, जिसका कोई भी वाक्य अनावश्यक नहीं होता।

(6) अनुच्छेद सामान्यतः छोटा होता है, किन्तु इसकी लघुता या विस्तार विषयवस्तु पर निर्भर करता है।

समय सबसे मूल्यवान है

'समय' की गति को पहचानने वाला ही सच्चा व्यापारी है। जो समय के अनुसार चलता है वह कभी असफल नहीं होता है। जो व्यक्ति समय की कीमत करता है समय उसकी कीमत करता है। जीवन में बड़े-बड़े लक्ष्य समय को महत्त्व देकर ही प्राप्त होते हैं। समय बीत जाने पर किए गए कार्य का कोई फल प्राप्त नहीं होता है और पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आता। जो विद्यार्थी सुबह समय पर उठकर अपने सभी दैनिक कार्य समय पर करता है तथा समय पर सोता है, वही आगे चलकर सफल व उन्नत व्यक्ति बन पाता है। जो आलस में आकर समय गँवा देता है, उसका भविष्य अंधकारमय हो जाता है। संत कवि कबीरदास जी ने भी अपने दोहे में कहा है –

"काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होइगी, बहुरि करेगा कब।।"

समय का एक-एक पल बहुत मूल्यवान है और बीता हुआ पल वापस लौटकर नहीं आता। इसलिए समय का महत्व पहचानकर प्रत्येक विद्यार्थी को नियमित रूप से अध्ययन करना चाहिए और अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। जो समय बीत गया उस पर वर्तमान समय में सोच कर और अधिक समय बर्बाद न करके आगे अपने कार्य पर विचार कर-लेना ही बुद्धिमानी है।

अभ्यास का महत्त्व

मानव जीवन में कई चुनौतियाँ हैं। उन चुनौतियों पर विजय पाने के लिए सतत अभ्यास की जरुरत पड़ती है। इससे कोई भी कार्य जल्दी और आसानी से हो जाता है। यदि निरंतर अभ्यास किया जाए तो कठिन से कठिन कार्य को करने में सुगमता होती है। ईश्वर ने सभी मनुष्यों को बुद्धि दी है। उस बुद्धि का इस्तेमाल तथा अभ्यास करके मनुष्य कुछ भी सीख सकता है। दुनिया में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिनसे अभ्यास करने की प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है। अर्जुन तथा एकलव्य ने निरंतर अभ्यास करके धनुर्विद्या में निपुणता प्राप्त की। एक मंदबुद्धि बालक वरदराज ने निरंतर अभ्यास द्वारा विद्या प्राप्त की और कई ग्रंथों की रचना की। उन्हीं पर एक प्रसिद्ध कहावत बनी –

"करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें, सिल पर परत निसान।।"

जब रस्सी की रगड़ से कठोर पत्थर पर भी निशान बन सकता है तो निरंतर अभ्यास से मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन सकता है। यदि विद्यार्थी प्रत्येक विषय का निरंतर अभ्यास करें, तो उन्हें कोई भी विषय कठिन नहीं लगेगा और वे सरलता से उस विषय में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे। कई ओलम्पिक खिलाडियों ने अभ्यास के बल पर अपने देश का नाम रोशन किया है।

मित्र के जन्म दिन का उत्सव

मेरे मित्र रोहित का जन्म-दिन था। उसने अन्य मित्रों के साथ मुझे भी बुलाया। रोहित के कुछ रिश्तेदार भी आए हुए थे, किन्तु अधिकतर मित्र ही उपस्थित थे। घर के आँगन में ही समारोह का आयोजन किया गया था। उस स्थान को बहुत ही सुंदर ढंग से सजाया गया था। हर जगह झण्डियाँ और गुब्बारे थे। आँगन में लगे एक पेड़ पर रंग-बिरंगे बल्ब जगमग कर रहे थे। जब मैं पहुँचा तो मेहमान आने शुरू ही हुए थे। मेहमान रोहित के लिए कोई-न-कोई उपहार लेकर आते, उसके निकट जाकर बधाई देते और रोहित उनका धन्यवाद करता। क्रमशः लोग छोटी-छोटी टोलियों में बैठकर गपशप करने लगे। संगीत की मधुर ध्वनियाँ गूँज रही थी। एक-दो मित्र उठकर नृत्य करने लगे। कुछ मित्र तालियों बजा कर अपना योगदान देने लगे। चारों ओर उल्लास का वातावरण था।

रात के आठ बजे के लगभग केक काटा गया। सब मित्रों ने तालियाँ बजाई और मिलकर जन्मदिन की बधाई का गीत गाया। माँ ने रोहित को केक खिलाया। अन्य लोगों ने भी केक खाया। फिर सभी खाना खाने लगे। खाने में अनेक प्रकार की मिठाइयाँ और नमकीन थे। तब हमने रोहित को एक बार फिर बधाई दी, उसकी दीर्घायु की कामना की और अपने-अपने घर को चल दिए। वह कार्यक्रम इतना अच्छा था कि अब भी स्मरण हो आता है।

वन और पर्यावरण का सम्बन्ध

वन और पर्यावरण का बहुत गहरा सम्बन्ध है। वन हैं तो हम हैं। प्रकृति के संतुलन को बनाये रखने के लिए पृथ्वी के 33% भाग को अवश्य हरा-भरा होना चाहिए। वन जीवनदायक हैं। ये वर्षा कराने में सहायक होते हैं। धरती की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाते हैं। वनों से भूमि का कटाव रोका जा सकता है। वनों से रेगिस्तान का फैलाव रुकता है, सूखा कम पड़ता है। इससे ध्वनि प्रदूषण की भयंकर समस्या से भी काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। वन ही नदियों, झरनों और अन्य प्राकृतिक जल स्रोतों के भण्डार हैं। वनों से हमें लकड़ी, फल, फूल, खाद्य पदार्थ, गोंद तथा अन्य सामान प्राप्त होते हैं। आज भारत में दुर्भाग्य से केवल 23 % वन बचे हैं। जैसे-जैसे उद्योगों की संख्या बढ़ रही है, शहरीकरण हो रहा है, वाहनों की संख्या बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे वनों का कटाव बढ़ता जा रहा है। वनों का

संरक्षण सबसे महत्वपूर्ण काम है। इसमें हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी पड़ेगी और अपना योगदान देना होगा। अपने घर-मोहल्ले, नगर में अत्यधिक संख्या में वृक्षारोपण को बढ़ाकर इसको एक आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना होगा। तभी हम अपने पर्यावरण को स्वच्छ रख पाएँगे।

कंप्यूटर एक जादुई पिटारा

आज का युग विज्ञान का युग है। वर्तमान समय में विज्ञान ने हमें कम्प्यूटर के रूप में एक अनमोल उपहार दिया है। आज जीवन के हर क्षेत्र में कंप्यूटर का उपयोग हो रहा है। जो काम मनुष्य द्वारा पहले बड़ी कठिनाई के साथ किया जाता था, आज वही काम कंप्यूटर द्वारा बड़े ही आराम से किया जा रहा है। कंप्यूटर का उपयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। कंप्यूटर ने दुनिया को बहुत छोटा कर दिया है। इंटरनेट द्वारा गूगल, याहू एवं बिंग आदि वेबसाइट पर दुनियाभर की जानकारी घर बैठे ही प्राप्त की जा सकती है। इंटरनेट पर ई-मेल के द्वारा विश्व में किसी भी जगह बैठे व्यक्ति से संपर्क किया जा सकता है। इसके लिए केवल ई-मेल अकाउंट और पासवर्ड का होना आवश्यक होता है। कंप्यूटर मनोरंजन का भी महत्वपूर्ण साधन है। इस पर अनेक खेल भी खेले जा सकते हैं। कुल मिलकर कहें तो कंप्यूटर ने मानव जीवन को बहुत सरल बना दिया है। कंप्यूटर सचमुच एक जादुई पिटारा है।

ग्लोबल वार्मिंग

ग्लोबल वार्मिंग शब्द पृथ्वी के तापमान में होने वाली वृद्धि को दर्शाता है। यह एक ऐसी समस्या है जिस पर अगर काबू नहीं किया गया तो यह पूरी पृथ्वी को ही नष्ट कर देगा। सीएफसी-11 और सीएफसी-12 जैसी ग्रीन हाउस गैसों ने सूरज के थर्मल विकिरण को अवशोषित करके पृथ्वी के वातावरण को गर्म बना दिया। ये गैसें सूर्य की किरणों को वायुमंडल में प्रवेश तो करने देती हैं, लेकिन उससे होने वाले विकिरण को वायुमंडल से बाहर नहीं जाने देती हैं। इसी को ग्रीनहाउस प्रभाव कहा जाता है, जो पूरे विश्व में तापमान में वृद्धि के लिए जिम्मेदार है। तापमान में वृद्धि से वर्षा चक्र, पारिस्थितिक संतुलन, मौसम का चक्र आदि प्रभावित होते हैं। यह वनस्पति और कृषि को भी प्रभावित करता है। जिसके कारण हमें दुनिया भर में लगातार बाढ़ और सूखे जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। तापमान में वृद्धि और ग्लेशियरों के पिघलने के कारण बर्फ़बारी जैसी घटनाओं में भी कमी आयी है। तापमान में वृद्धि से आद्रता में भी वृद्धि हुई है क्योंकि तापमान में वृद्धि से वाष्पीकरण की दर में वृद्धि हुई है। स्थानीय सरकारों को चाहिए की वह लोगों के बीच जागरूकता पैदा करे तथा ऐसे उपकरणों और वाहनों की बिक्री को प्रोत्साहित करे जो पर्यावरण के अनुकूल हो। पेपर, प्लास्टिक और अन्य सामग्रियों की रीसाइक्लिंग को प्रोत्साहित करना चाहिए। ऐसे प्रयासों को लोगों द्वारा जमीनी स्तर पर करना अत्यंत आवश्यक है, तभी हम एक प्रभावी तरीके से इस भयानक समस्या का मुकाबला कर सकते हैं।

पत्र-लेखन

पत्र का महत्व- दैनिक व्यवहार में पत्र-लेखन अति महत्त्वपूर्ण है। पत्र सूचनाओं के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचना भेजने एवं प्राप्त करने में पत्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। पत्र सदैव लिखित रूप में ही होता है।

पत्र के अंग-

आरंभ- (1) संबोधन (2) अभिवादन (3) विषय निरुपण

मध्य- (4) विषय विस्तार (5) निवेदन

समापन- (6) धन्यवाद ज्ञापन (7) प्रेषक का नाम, पता व दिनांक

पत्र के प्रकार :

(1) औपचारिक पत्र - जो पत्र अधिकारियों, कार्यालय के प्रमुखों, संस्था के प्रधानों तथा किसी प्रतिष्ठान के संचालकों को आवश्यकता पढ़ने पर लिखे जाते हैं, वे औपचारिक पत्र कहलाते हैं।

इन पत्रों में कार्यालयी, शिकायती, संपादकीय और व्यावसायिक पत्र शामिल होते हैं।

(2) अनौपचारिक पत्र - जो पत्र सगे संबंधियों, रिश्तेदारों, पारिवारिक लोगों एवं मित्रों को यथावसर लिखे जाते हैं, वे अनौपचारिक पत्र कहलाते हैं।
इन पत्रों में व्यक्तिगत (निजी), पारिवारिक और सामाजिक पत्र शामिल होते हैं।

औपचारिक पत्र का उदाहरण

अपने विद्यालय के प्राचार्य को संध्याकालीन खेल की उचित व्यवस्था के लिए पत्र लिखिए।

दिनांक 10.04.2023

सेवा में

श्रीमान प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय क्र.-1,
अंबाला छावनी, अंबाला।

विषय : **विद्यालय में संध्याकालीन खेलों की उचित व्यवस्था के संबंध में।**

महोदय,
आपसे सविनय निवेदन है कि मैं रोहित कुमार इस विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं का छात्र हूँ। इस विद्यालय के कई छात्र और छात्राएँ संकुल एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में विद्यालय का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। अब वे सभी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना चाहते हैं किन्तु विद्यालय में शाम को अभ्यास करने और खेलने की कोई उचित व्यवस्था नहीं है। कुछ छात्र-छात्राएँ क्रिकेट, हॉकी, खो-खो, बास्केटबॉल, वॉलीबॉल आदि खेलों में भाग लेना चाहते हैं जबकि कुछ छात्रों की अभिरुचि एथलेटिक्स लंबी दौड़, ऊंची दौड़, बाधा दौड़ इत्यादि में है। मेरा विश्वास है कि कुशल प्रशिक्षक और खेलों की समुचित व्यवस्था मिलने से बच्चे विद्यालय का गौरव बढ़ा सकते हैं।
अत: आपसे आग्रह है कि विद्यालय में संध्याकालीन खेलों की उचित व्यवस्था कराने की महती कृपा करें। उक्त महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।
धन्यवाद सहित।

आपका विश्वासी

दीपांशु
कक्षा दसवीं

अनौपचारिक पत्र का उदाहरण

परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अपने मित्र को बधाई पत्र लिखिए।

दिनांक 12.04.2023
3/15 टैगोर नगर,
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

प्रिय मित्र गोविन्द,
नमस्ते।
ईश्वर की असीम अनुकंपा से मैं यहाँ पर सकुशल हूँ और तुम्हारे कुशल होने की कामना करता हूँ। मैंने कल शाम को तुम्हारे पिताजी को फोन किया तो उनसे ज्ञात हुआ कि तुमने दसवीं बोर्ड की परीक्षा में आगरा मंडल में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह समाचार सुनकर मेरा मन खुशी से भर गया। दसवीं बोर्ड की परीक्षा में और आगरा मंडल में

प्रथम स्थान आने पर तुम्हें बहुत बहुत बधाई। मुझे पूर्ण विश्वास था कि तुम परीक्षा में प्रथम श्रेणी से जरूर उत्तीर्ण होगे लेकिन आगरा मंडल में भी प्रथम स्थान प्राप्त करोगे यह उम्मीद से बढ़कर है और बहुत ही अच्छा है। तुम्हारी मेहनत और नियमित अध्ययन ने ही तुम्हें इस सफलता तक पहुंचाया है। मुझे पूरा विश्वास है कि इससे आगे भी तुम्हारी मेहनत रंग लाएगी और तुम मेरे अनुमान को सच साबित करोगे। तुमने प्रथम स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया कि दृढ़ संकल्प और कठिन परिश्रम से जीवन में कोई भी सफलता प्राप्त की जा सकती है।
मैं सदा यही कामना करूंगा कि तुम्हें जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आने का सौभाग्य प्राप्त हो और तुम इसी प्रकार परिवार और विद्यालय का गौरव बढ़ाते रहो। इतना ही नहीं तुम पढ़-लिखकर अच्छी नौकरी प्राप्त करो और देश की सेवा करते हुए अच्छा जीवन व्यतीत करो। दसवीं परीक्षा और आगरा मंडल में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर एक बार पुन: तुम्हें हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

तुम्हारा मित्र
निश्चल

विज्ञापन-लेखन

विज्ञापन का महत्त्व : वर्तमान दौर में उत्पादों की बिक्री बढ़ाने एवं उनके उपभोग पर भरपूर जोर दिया जा रहा है। एक ओर उत्पादक अपनी वस्तुओं की बिक्री करके अधिकाधिक लाभ कमाना चाहते हैं तो दूसरी ओर उपभोक्ता उनका प्रयोग कर सुख एवं संतुष्टि पाना चाहते हैं। उपभोक्ताओं की इसी प्रवृत्ति का फायदा उठाने के लिए उत्पादक तरह-तरह के साधनों का सहारा लेते हैं। आज वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने का प्रमुख हथियार विज्ञापन है।
विज्ञापन का अर्थ : विज्ञापन शब्द 'ज्ञापन' में 'वि' उपसर्ग लगाने से बना है, जिसका अर्थ है - विशेष जानकारी देना। यह जानकारी उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं आदि से जुड़ी होती है। विज्ञापन में वस्तु के गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उपभोक्ता लालायित हों और इन्हें खरीदने के लिए विवश हो जाएँ। विज्ञापन के कारण उत्पादकों को अपनी वस्तुओं के अच्छे दाम मिल जाते हैं तो उपभोक्ता को वस्तुओं की जानकारी, तुलनात्मक दाम एवं चयन का विकल्प मिल जाता है। आजकल टी.वी., रेडियो के कार्यक्रम, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ एवं भवनों की दीवारें विज्ञापनों से रंगी दिखाई पड़ती हैं।
विज्ञापन लेखन का तरीका :

1. एक बाक्स-सा बनाकर ऊपर मध्य में विज्ञापित वस्तु का नाम मोटे अक्षरों में लिखना चाहिए।
2. दायें व बायें किनारों पर सेल धमाका, खुशखबरी, महाबचत जैसे लुभावने शब्दों को लिखना चाहिए।
3. बाईं ओर मध्य में विज्ञापित वस्तु के गुणों का उल्लेख करना चाहिए।
4. दाहिनी ओर या मध्य में वस्तु का बड़ा-सा चित्र देना चाहिए।
5. स्टॉक सीमित या जल्दी करें जैसे प्रेरक शब्दों का प्रयोग किसी डिजाइन में होना चाहिए।
6. मुफ़्त मिलने वाले सामानों या छूट का उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए।
7. ऊपर ही जगह देखकर कोई छोटी-सी तुकबंदी, जिससे पढ़ने वाला आकर्षित हो जाए।
8. संपर्क करें या फोन नं. का उल्लेख करें। जैसे- 011-23456789 आदि। निजी फोन नं. देने से बचना चाहिए।

विज्ञापन लेखन का उदाहरण

'मीरा पुस्तक सदन' पुस्तक की बिक्री बढ़ाने हेतु विज्ञापन तैयार करवाना चाहता है। आप उसके लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

मीरा पुस्तक सदन

एनसीईआरटी की पुस्तकें उपलब्ध हैं

500/- रुपये की खरीद पर 10% छूट

'श्री दुग्ध उत्पाद' अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए एक विज्ञापन तैयार करवाना चाहते हैं। इस संबंध में आप उनके लिए विज्ञापन लेखन कीजिए।

श्री मिल्क प्रोडक्ट

हमारे यहाँ शुद्ध देशी घी, दूध, मक्खन और पनीर उचित रेट पर मिलता है।

500/- रु. से अधिक की खरीद पर 200 ग्राम पनीर पाएँ बिलकुल मुफ्त।

खाएँ और खिलाएँ, अपनी सेहत बनाएँ सिर्फ श्री मिल्क प्रोडक्ट से

संदेश लेखन

संदेश का महत्व : संदेश के माध्यम से समाज के लोग आपस में जुड़ते हैं। वे अपनी भावनाओं को एक दूसरे से साझा करते हैं। समाज को जागरूक बनाने में संदेश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भावना, विचार अथवा तथ्य को समझने के लिए संदेश की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। कार्यालयों की कार्य-संस्कृति को जानने में संदेश बहुत उपयोगी होते हैं। सुख-दुःख, पर्व-त्यौहार तथा नववर्ष इत्यादि के मौके पर संदेश संजीवनी की तरह काम करते हुए उमंग-ऊर्जा का संचार करते हैं। संदेशों का उपयोग आमंत्रण के लिए भी किया जाता है।

संदेश की आवश्यकता : जब कोई व्यक्ति किसी कारणवश किसी दूसरे व्यक्ति से सीधे बात नहीं कर पाता है तब वह अपनी बात, सूचना या खबर उस दूसरे व्यक्ति तक अन्य माध्यमों से पहुँचाता है, जिसे संदेश कहा जाता है। किसी व्यक्ति या समूह का संदेश अन्य माध्यमों से किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को भेजा जाता है।

संदेश की प्रकृति : संदेश लिखित, मौखिक या दोनों रूपों में हो सकते हैं। ये सुखद और दुखद दोनों तरह के होते हैं। कोई भी संदेश व्यक्तिगत या सामूहिक हो सकता है। संदेश भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्य काल में लिखे जा सकते हैं। इसी तरह संदेश औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरह के हो सकते हैं।

औपचारिक संदेश : जो संदेश सरकारी कार्यालय के किसी अधिकारी या कर्मचारी, संस्था या निगम के कार्यकर्ता तथा नेता या अभिनेता द्वारा आम जनमानस में जागरूकता फ़ैलाने एवं उन्हें प्रभावित करने के लिए सार्वजनिक रूप से लिखे जा सकते हैं, उन्हें औपचारिक संदेश कहते हैं।

अनौपचारिक संदेश : जो संदेश किसी व्यक्ति द्वारा अपने परिजनों, मित्रगणों, करीबी रिश्तेदारों या घर के सदस्यों को सुख-दुःख के मौके पर लिखे जाते हैं, उन्हें अनौपचारिक संदेश कहते हैं।

आजकल व्हाट्सएप, एसएमएस, ई-मेल, फेसबुक, तथा ट्विटर जैसे अनेक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं जिनके जरिए संदेश भेजा जाता है।

संदेश के प्रकार : संदेश के निम्नलिखित प्रकार होते हैं-

(1) शुभकामना संदेश

जो संदेश मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जन्मदिन, सालगिरह, परीक्षा में सफलता प्राप्त करने, पदोन्नति होने तथा पर्व-त्यौहार के अवसर पर भेजे जाते हैं, उन संदेशों को शुभकामना संदेश कहा जाता है।

(2) शोक संदेश

जो संदेश किसी व्यक्ति की मृत्यु, पुण्यतिथि या दुखद घटना पर लोगों के बीच एक-दूसरे को को भेजे जाते हैं, उन्हें शोक संदेश कहते हैं।

(3) व्यक्तिगत संदेश

जो संदेश निजी तौर पर सिर्फ अपने नजदीकी परिजनों, मित्रों को बधाई, शुभकामना, कहीं आने-जाने या शामिल होने का संदेश भेजा जाता है, उसे व्यक्तिगत संदेश कहा जाता है।

(4) सामाजिक संदेश

धार्मिक या सामाजिक कार्यक्रमों से जुड़े आयोजनों के संदर्भ में दिए जाने वाले संदेश को सामाजिक संदेश कहा जाता है। जैसे 'पर्यावरण दिवस' पर संदेश, 'जल बचाओ' संदेश, 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' इस तरह के संदेश सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

(5) मिश्रित संदेश

मिश्रित संदेश में तात्कालिक समय में चल रही विविध आपदाओं से बचाव व सुरक्षा तथा जनचेतना फ़ैलाने के विषय शामिल होते हैं। जैसे- कोरोना महामारी, डेंगू, मलेरिया, बाढ़, भूकंप, किसान आंदोलन आदि से संबंधित संदेश।

संदेश लेखन का तरीका :

1. सबसे पहले संदेश को किसी सीमा रेखा जैसे बॉक्स या गोले के अंदर लिखा जाना चाहिए।
2. शीर्षक के रूप में 'संदेश' शब्द अवश्य लिखें। उसके बाद दिनांक व समय अवश्य लिखें।
3. मुख्य विषय को संक्षिप्त रूप से प्रभावशाली शब्दों में वर्णन करें।
4. संदेश लिखने वाले का नाम अंत में लिखें।
5. संदेश लेखन 30 से 40 शब्दों में होना चाहिए।
6. विषयानुसार चित्रों का उपयोग किया जा सकता है।
7. शायरी, दोहे, श्लोक या कविता की पंक्तियों का प्रयोग कर सकते हैं।
8. संदेश में रचनात्मकता और सृजनात्मकता होनी चाहिए।
9. विषय के अनुसार रंगों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

संदेश लेखन का प्रारूप

(1) औपचारिक संदेश लेखन का प्रारूप

संदेश

दिनांक : ....

समय : ......

विषय (जिस विषय हेतु संदेश दे रहे हैं, लिखें)

....

....

अपना नाम

(2) अनौपचारिक संदेश लेखन का प्रारूप

संदेश

दिनांक : ....

समय : ......

विषय (जिस विषय हेतु सन्देश दे रहे हैं, लिखें)

....

....

अपना नाम

<u>संदेश लेखन के उदाहरण</u>

दीपावली पर्व के शुभ अवसर पर एक संदेश लिखिए।

शुभकामना संदेश

दिनांक : 16.03.2022

समय : अपराहन 5.00 बजे

आपका जीवन खुशियों के दीप से सदा जगमगाता रहे। आपके घर में सुख-सौभाग्य की देवी लक्ष्मीजी का सदा निवास करें।

दीपावली के पावन पर्व पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

सौरभ

अपने मित्र के जन्मदिन के अवसर पर एक बधाई संदेश लिखिए।

बधाई संदेश

दिनांक : 16.05.2022

समय : पूर्वाह्न 8.00 बजे

प्रिय मित्र आशीष, ईश्वर तुम्हें दीर्घायु बनाये और तुम्हारा जीवन सुख-समृद्धि और अच्छे स्वास्थ्य से परिपूर्ण रहे। तुम हमेशा अपने जीवन में सफल रहो। तुम्हें जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई।

गणेश राज

प्रश्न 1- स्ववृत्त क्या है ? उसमें क्या विशेषताएँ होनी चाहिए ?

उत्तर- स्ववृत्त लेखन एक विशेष प्रकार का लेखन है जिसमें कोई व्यक्ति स्वयं के बारे में किसी विशेष प्रयोजन को ध्यान में रखकर सिलसिलेवार ढंग से सूचनाओं का संकलन करता है। इसमें संबंधित व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, ज्ञान और अनुभव के सबल पक्ष को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि नियोक्ता के मन में उम्मीदवार के प्रति अच्छी व सकारात्मक छबि प्रस्तुत हो सके।

प्रश्न 2- स्ववृत्त में किन-किन बातों का समावेश होना चाहिए।

उत्तर- स्ववृत्त में अपना पूरा परिचय, पता, सम्पर्क सूत्र (टेलीफोन, मोबाइल, ई-मेल आदि), शैक्षणिक व व्यावसायिक योग्यताओं के सिलसिलेवार विवरण के साथ-साथ अन्य संबंधित योग्यताओं, उपलब्धियों, कार्येत्तर गतिविधियों व अभिरुचियों का उल्लेख होना चाहिए। एक-दो ऐसे सम्मानित व्यक्तियों के विवरण, जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व व उपलब्धियों से परिचित हों, का समावेश भी होना चाहिए।

स्ववृत्त (बायोडाटा) लेखन का उदाहरण-

स्ववृत्त

नाम	:	नरेंद्र कुमार
पिता का नाम	:	सुरेश कुमार
माँ का नाम	:	शबनम
जन्म तिथि	:	18 नवंबर, 1982
वर्तमान पता	:	डी 72, पाकेट चार, मयूर विहार (फ़ेज एक) दिल्ली 110092
स्थायी पता	:	वही
टेलीफ़ोन नं.	:	011-22718296
मोबाइल नं.	:	9868234859
ई-मेल	:	85narendra@yahoo.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र.सं.	परीक्षा/डिग्री/डिप्लोमा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	1997	राजकीय विद्यालय सीबीएसई	अंग्रेजी, हिंदी, विज्ञान, गणित सामाजिक विज्ञान	प्रथम	93%
2.	बारहवीं	1999	वही सीबीएसई	अंग्रेजी, भौतिकी, रसायन विज्ञान जीव विज्ञान, गणित	प्रथम	95%
3.	बी.एस.सी. (आनर्स)	2002	हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	कंप्यूटर साइंस	प्रथम	84%
4.	एमबीए	2004	आदर्श इन्स्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट		प्रथम	85%

अन्य संबंधित योग्यताएँ

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान और अभ्यास (एम.एस. ऑफ़िस तथा इंटरनेट)
- फ्रांसीसी भाषा का कार्य योग्य ज्ञान

© NCERT not to be republished

उपलब्धियाँ

- अखिल भारतीय वाद–विवाद प्रतियोगिता (वर्ष 2001) में प्रथम पुरस्कार
- राजीव गाँधी स्मारक निबंध प्रतियोगिता (2002) में प्रथम पुरस्कार
- विद्यालय और महाविद्यालय क्रिकेट टीमों का कप्तान

कार्येतर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ

- उद्योग व्यापार संबंधी पत्रिकाओं और अखबारों का नियमित पाठन
- देश भ्रमण का शौक
- इंटरनेट सर्फ़िंग
- फुटबाल और क्रिकेट में अभिरुचि

वैसे सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों

1. श्री जे. रामनाथन, निदेशक, आदर्श इंस्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट, लोदी इस्टेट, नयी दिल्ली
2. श्री देवेंद्र गुप्ता, प्राध्यापक (मार्केटिंग), आदर्श इंस्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट लोदी इस्टेट, नयी दिल्ली

तिथि

स्थान

हस्ताक्षर

ई-मेल

प्रश्न-1 ई-मेल लेखन क्या है?

उत्तर- ई-मेल का अर्थ है- इलेक्ट्रॉनिक संदेश। अर्थात् कंप्यूटर और इंटरनेट की सहायता से एक ई-मेल आईडी से अन्य लोगों की ई-मेल आई डी पर सूचनाएँ भेजना ही ई-मेल कहलाता है।

प्रश्न-2 ई-मेल के लिए क्या-क्या आवश्यक होता है?

उत्तर- कंप्यूटर या स्मार्ट फोन, इंटरनेट, ब्राउजर, सर्वर, मेल एड्रेस, प्रिंटर एवं पावर सप्लाई एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक चीजों की जरूरत होती है।

प्रश्न-3 ई-मेल कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर- ई-मेल दो प्रकार के होते हैं। एक होता है personal email और दूसरा होता है official email

Personal Email - इसे लोग अपने लिए काम के लिए बनाते हैं। इसके लिए बहुत सारी वेबसाइट हैं जो ई-मेल की सुविधा देती हैं। पर्सनल ई-मेल में उन वेबसाइट का डोमेन यूज़ होता है।

Official Email - इन ई-मेल का यूज़ ऑफिसियल वेबसाइट या कंपनी के लिए किया जाता है इसके लिए आपके पास खुद की वेबसाइट या डोमेन होना चाहिए जैसे मेरी कंपनी है example तो मेरी वेबसाइट का डोमेन है example.xyz तो मेरी कंपनी का ऑफिसियल मेल इस डोमेन पर होगा जैसे info@example.xyz

प्रश्न-4 ई-मेल का उदाहरण :

सुझाव (छात्र-छात्राएँ कंप्यूटर शिक्षक की सहायता से ई-मेल करना सीखें।)

हिंदी पाठ्यक्रम -अ (कोड सं. 002)

कक्षा 10वीं हिंदी - अ परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2023-24

- **प्रश्नपत्र दो खंडों, खंड 'अ' और 'ब' में विभक्त होगा।**
- **खंड 'अ' में 44 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे।**
- **खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।**
- **भारांक-{80(वार्षिक बोर्ड परीक्षा)+20 (आंतरिक परीक्षा)**

निर्धारित समय- 3 घंटे **भारांक-80**

<table>
<tr><th colspan="6">वार्षिक बोर्ड परीक्षा हेतु भार विभाजन</th></tr>
<tr><th colspan="6">खंड – अ (बहुविकल्पी प्रश्न)</th></tr>
<tr><th></th><th colspan="3">विषयवस्तु</th><th>उप भार</th><th>कुल भार</th></tr>
<tr><td rowspan="3">1</td><td colspan="3">अपठित गद्यांश व काव्यांश पर चिंतन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न।</td><td></td><td rowspan="3">10</td></tr>
<tr><td>अ</td><td colspan="2">एक अपठित गद्यांश लगभग 250 शब्दों का , इसके आधार पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे (1x5=5)</td><td>5</td></tr>
<tr><td>ब</td><td colspan="2">एक अपठित काव्यांश लगभग 120 शब्दों का , इसके आधार पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे (1x5=5)</td><td>5</td></tr>
<tr><td rowspan="6">2</td><td colspan="3">व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषयवस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/ संरचना आदि पर बहुविकल्पी प्रश्न। (1x16)
(कुल 20 प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से केवल 16 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे)</td><td></td><td rowspan="6">16</td></tr>
<tr><td colspan="3">व्याकरण</td><td></td></tr>
<tr><td>1</td><td colspan="2">रचना के आधार पर वाक्य भेद (4 अंक) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)</td><td>4</td></tr>
<tr><td>2</td><td colspan="2">वाच्य (4 अंक) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)</td><td>4</td></tr>
<tr><td>3</td><td colspan="2">पद परिचय (4 अंक) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)</td><td>4</td></tr>
<tr><td>4</td><td colspan="2">अलंकार- (शब्दालंकार : श्लेष) (अर्थालंकार : उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण)
(4 अंक) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)</td><td>4</td></tr>
<tr><td rowspan="3">3</td><td colspan="3">पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग – 2</td><td></td><td rowspan="3">14</td></tr>
<tr><td>अ</td><td colspan="2">गद्य खंड</td><td>7</td></tr>
<tr><td></td><td>1</td><td>क्षितिज से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषयवस्तु का ज्ञान, बोध, अभिव्यक्ति आदि पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे। (1x5)</td><td>5</td></tr>
</table>

		2	क्षितिज से निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की उच्च चिंतन क्षमताओं एवं अभिव्यक्ति का आकलन करने हेतु एक अंकीय दो बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे। (1x2)	2	
	ब		**काव्य खंड**	7	
		1	क्षितिज से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे (1x5)	5	
		2	क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु एक अंकीय दो बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे। (1x2)	2	
	खंड – ब (वर्णनात्मक प्रश्न)				
	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग – 2 व पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग – 2				
1	अ	**गद्य खंड**			
		क्षितिज से निर्धारित पाठों में से विषयवस्तु का ज्ञान बोध, अभिव्यक्ति आदि पर तीन प्रश्न पूछे जाएँगे।(विकल्प सहित- 25-30 शब्द-सीमा वाले 4 में से 3 प्रश्न करने होंगे) (2x3)		6	
	ब	**काव्य खंड**			
		क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु तीन प्रश्न पूछे जाएँगे। (विकल्प सहित-25-30 शब्द-सीमा वाले 4 में से 3 प्रश्न करने होंगे) (2x3)		6	**20**
	स	**पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग – 2**			
		कृतिका के निर्धारित पाठों पर आधारित दो प्रश्न पूछे जाएँगे । (4x2) (विकल्प सहित- 50-60 शब्द-सीमा वाले 3 में से 2 प्रश्न करने होंगे)		8	
2	**लेखन**				
	i	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत-बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लेखन		6	
	ii	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में पत्र		5	**20**
	iii	उपलब्ध रिक्ति के लिए लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त लेखन अथवा विविध विषयों पर आधारित लगभग 80 शब्दों में औपचारिक ई-मेल लेखन		5	
	iv	विषय से संबंधित लगभग 40 शब्दों के अंतर्गत विज्ञापन लेखन		4	

		अथवा संदेश लेखन लगभग 40 शब्दों में (शुभकामना, पर्व-त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर दिए जाने वाले संदेश)		
		कुल		**80**
		आंतरिक मूल्यांकन	**अंक**	20
	अ	**सामयिक आकलन**	5	
	ब	**बहुविध आकलन**	5	
	स	**पोर्टफ़ोलियो**	5	
	द	**श्रवण एवं वाचन**	5	
		कुल		**100**

निर्धारित पुस्तकें :

1. **क्षितिज, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
2. **कृतिका, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

नोट – निम्नलिखित पाठों से प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे–

क्षितिज, भाग – 2	काव्य खंड	• देव- सवैया, कवित्त (पूरा पाठ) • गिरिजाकुमार माथुर – छाया मत छूना (पूरा पाठ) • ऋतुराज – कन्यादान (पूरा पाठ)
	गद्य खंड	• महावीरप्रसाद द्विवेदी – स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन (पूरा पाठ) • सर्वेश्वर दयाल सक्सेना- मानवीय करुणा की दिव्य चमक (पूरा पाठ)
कृतिका, भाग – 2	• एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा! (पूरा पाठ) • जार्ज पंचम की नाक (पूरा पाठ)	

कक्षा दसवीं हेतु प्रश्न पत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिए कृपया बोर्ड द्वारा जारी आदर्श प्रश्न पत्र देखें।

संदर्भ एवं आभार

1- www.learncbse.in>ncert-solutions- for class 12-hindi

2- https://keepinspringme.in>question

3- www.studyrankers.com>ncert

4- www.cbsetuts.com>ncert-solutions

5- cbseacademic-nic.in

6- ncert.nic.in/textbook